



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 103]

नई दिल्ली, शुक्रवार, मार्च 29, 2019/चैत्र 8, 1941

No. 103]

NEW DELHI, FRIDAY, MARCH 29, 2019/CHAITRA 8, 1941

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना

नई दिल्ली, 29 मार्च, 2019

मामला सं. 16/2018

विषय: चीन जन. गण., कोरिया गणराज्य तथा थाईलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "एल्यूमिनियम अलॉय रोड व्हील" (इसके बाद से इसे संबद्ध वस्तुएं कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच की दूसरी निर्णायक समीक्षा में अंतिम जांच परिणाम।

फा. सं. 7/31/2018-डीजीटीआर.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (इसके बाद से इसे अधिनियम के रूप में कहा गया है) और तत्संबंधी समय-समय पर यथासंशोधित सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, आकलन और संग्रहण तथा क्षति का निर्धारण) नियमावली (इसके बाद से इसे नियम के रूप में कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए ;

क. पृष्ठभूमि

1. यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (इसके बाद से इसे प्राधिकारी के रूप में कहा गया है) ने दिनांक 10.12.2012 की अधिसूचना सं. 14/7/2012- डीजीएडी के तहत चीन जन. गण., कोरिया गणराज्य और थाईलैंड (इसके बाद से इन्हें संबद्ध देशों के रूप में कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "एल्यूमिनियम अलॉय रोड व्हील" (इसके बाद से इसे संबद्ध वस्तुएं कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुल्क की थी। प्राधिकारी ने दिनांक 13.01.2014 को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में अनंतिम शुल्कों की सिफारिश की थी और इसे वित्त मंत्रालय द्वारा दिनांक 11 अप्रैल,

2014 की अधिसूचना सं. 15/ 2015 – सीमा शुल्क (एडीडी) के तहत अधिरोपित किया गया था। इसके बाद प्राधिकारी द्वारा दिनांक 9 जून, 2014 की अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना सं. 14/7/ 2012- डीजीएडी के तहत अधिसूचना जारी की गई थी। आयातकों ने प्राकृतिक न्याय आदि के उल्लंघन के आधार पर माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष रिट याचिका (डब्ल्यू पी 633/2015, डब्ल्यू पी 634/ 2015) दाखिल की थी और अंतिम जांच परिणाम सं. 14/7/ 2012- डी जी ए डी को खारिज कर दिया गया। तथापि, माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा एस एल पी (सी) सं. 014068 - 014073 / 2015 में उक्त निर्णय पर स्थगन प्रदान कर दिया गया था तथा उक्त एस एल पी अंतिम सुनवाई के लिए लंबित हैं। माननीय उच्चतम न्यायालय से स्थगन होने के बाद वित्त मंत्रालय द्वारा दिनांक 22 मई, 2015 की अधिसूचना सं. 21/ 2015- सीमा शुल्क (ए डी डी) जारी की गई थी और अनंतिम अधिसूचना की तारीख से 5 वर्षों के लिए अंतिम जांच परिणाम सं. 14/ 7/ 2012- डी जी ए डी के तहत सिफारिश किए गए शुल्क लगा दिए गए तथा वे अभी लागू हैं।

2. यतः पाटनरोधी शुल्क नियमावली के नियम 23 के साथ पाटित और यथा संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1995 की धारा की धारा 9 क (5) के तहत, लगाया गया पाटनरोधी शुल्क को, जब तक कि पहले हटा नहीं लिया जाए, उसे लगाने की तारीख से पांच वर्षों की समाप्ति पर प्रभावी नहीं रहेगा और प्राधिकारी को इस बात की समीक्षा करनी अपेक्षित है कि क्या लागू शुल्क की समाप्ति होने से पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। उपरोक्त के अनुसार, प्राधिकारी को घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से किए गए एक विधिवत यथा प्रमाणित अनुरोध के आधार पर यह समीक्षा करनी अपेक्षित है कि क्या शुल्क के समाप्त होने से पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

3. मैसर्स सिनर्जिस कास्टिंग्स लि० और मैसर्स कोसेई मिंडा एल्यूमिनियम कंपनी लि० (इसके बाद से इन्हें 'याचिकाकर्ता' के रूप में कहा गया है) ने अधिनियम और नियम के अनुसार प्राधिकारी के समक्ष घरेलू उद्योग की ओर से एक यथा प्रमाणित याचिका दाखिल की है, जिसमें चीन जन. गण., कोरिया गणराज्य तथा थाईलैंड के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के पाटन के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना और परिणाम स्वरूप क्षति होने का आरोप लगाया गया है और संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में लागू वर्तमान पाटनरोधी शुल्कों की समीक्षा करने और अगले पांच वर्षों के लिए जारी रखने का अनुरोध किया गया है।

4. इस बात से संतुष्ट होने पर कि याचिकाकर्ताओं ने एक समीक्षा करने की जरूरत की पुष्टि की है, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 19.08.2018 की अधिसूचना सं. 7/ 3/ 2018 - डी जी टी आर के तहत निर्णायक समीक्षा शुरू करना उपयुक्त समझा है, जिसमें यह समीक्षा की जानी है कि क्या वर्तमान शुल्कों के समाप्त होने से पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

ख. प्रक्रिया

5. इस जांच में अब तक निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया :

i. प्राधिकारी ने नियम 6(2) और (3) के तहत उपलब्ध सूचना के अनुसार, भारत में संबद्ध देशों से दूतावासों, संबद्ध देशों से ज्ञात निर्यातकों, ज्ञात आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों तथा घरेलू उत्पादकों को दिनांक 10.08.2018 की जांच शुरूआत अधिसूचना की प्रतियां भेजी थी। नियम 6(4) के तहत निर्धारित समय-सीमा के भीतर ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों से प्रश्नावली उत्तर दाखिल करने तथा उनके विचारों को लिखित में अवगत करने का अनुरोध किया गया था।

ii. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों / निर्यातकों को प्राधिकारी के समक्ष दाखिल की गई याचिका में प्रस्तुत किए गए ब्यौरे के अनुसार अवेदन के अगोपनीय अंश सहित जांच शुरू करने की अधिसूचना की प्रतियां भेजी थी। चीन और चीन के दूतावास से उत्पादकों व निर्यातकों को भी बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति के दावे के संबंध में अनुपूरक प्रश्नावली में प्रश्नावली उत्तर दाखिल करने का परामर्श दिया गया था।

चीन जन. गण. :

1. बाओडिंग लिजोंग व्हील मैनुफैक्चर कंपनी, लि०

2. डेयर टेक्नोलॉजी कंपनी, लि०
3. डान्यांग कंपनी
4. यी इंटरनेशनल लि०
5. साइटिक डाईकास्टल व्हील मैनुफैक्चर कंपनी, लि०
6. वाईएसएम मैनुफैक्चर कारपोरेशन लि०
7. झेजियांग बाओकांग मैनुफैक्चर कंपनी, लि०
8. बाओश आटो पार्ट्स कंपनी लि०
9. चिपिंग जिनफा एल्यूमिनियम प्रोडक्ट कंपनी, लि०
10. फ्रीमन जेसिंग व्हील
11. शानडांग वेसटियन आटोमोटिव पार्ट्स कंपनी, लि०
12. यूनीरेसिंग (निंगबो) मैनुफैक्चर कंपनी, लि०
13. निंगबो जिंगगांग मशीनरी कंपनी, लि०
14. किंगदाओ होमेशाइन इंटरनेशनल ट्रेडिंग कंपनी, लि०
15. निंगबो कीयू स्पेशल व्हील कारपोरेशन
16. झेजियांग बुयांग आटो व्हील कंपनी, लि०
17. चीन जेनिक्स आटो इंटरनेशनल लि०
18. किंगदाओ डांगव्हा कास्टिंग आईएनसी
19. डेयर व्हील मैनुफैक्चर कंपनी, लि०
20. हुआ ताई (जियांग मेन) एल्यूमिनियम प्रोडक्ट कंपनी, लि०
21. सानमिंगजिया डाईकास्टल व्हील मैनुफैक्चर कंपनी, लि०
22. शंघाई जिनहेली एल्यूमिनियम व्ही हब मैनुफैक्चर कंपनी, लि०
23. लियुफेंग मशीनरी इंडस्ट्री कंपनी, लि०
24. फोशान ननहाई झोंगान एल्यूमिनियम व्हील कंपनी, लि०
25. चाइना जेनिक्स आटो इंटरनेशनल लि०

कोरिया गणराज्य :

1. कोरिया व्हील टेक्नोलॉजी कंपनी, लि०
2. सैमसंग आटो डिस्मेंटलिंग कंपनी, लि०
3. जीएस कारपोरेशन
4. यूनीवेल कारपोरेशन

5. मिराय ट्रेडिंग कंपनी, लि०
6. रेनबो इंडस्ट्रियल कंपनी, लि०
7. ईस्टर्न पोइंट
8. एम एच इंटरनेशनल
9. वावमोटर्स कंपनी, लि०
10. उनहवा कॉमर्स इंक.
11. एलक्स कंपनी, लि०

थाईलैंड

1. सम्मित्र बांगाई आटो पार्ट एंड एक्सपोर्ट कंपनी, लि०
2. ईजी वर्ल्ड एसए ट्रेडिंग लि० पार्ट
3. साउदर्न क्रास इंटरप्राइजेज
4. डब्ल्यू सी कंपनी, लि०
5. द रैप कंपनी
6. तनुट नेटफैट
7. टैटा इंटरप्राइजेज कंपनी, लि०,
8. आई सी पोइंट
9. टीएनपी आटो पार्ट्स कंपनी, लि०
10. टेकनेट कारपोरेशन एशिया कंपनी, लि०
11. हाइपर सिलवर्स एंड क्रोम पैंट्स
12. एंकेई

iii. निम्नलिखित उत्पादकों / निर्यातकों ने प्राधिकारी को निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दाखिल करने और साथ ही अन्य अनुरोध करने के लिए उत्तर दिया है:

1. शानडांग शांग वांग एल्यूमिनियम इंडस्ट्री कंपनी लि०, चीन जन. गण.
2. बोंडिंग लिजोंग व्हील मैनुफैक्चरर कंपनी लि०, चीन जन. गण.
3. बोटाउ शेंगताई आटो पार्ट्स मैनुफैक्चरर कंपनी लि०, चीन जन. गण.
4. तियांजिन लिजोंग ग्रुप कंपनी लि०, चीन जन. गण.
5. किनहुआंगदाओ लिजोंग व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
6. सिटिक डाइकास्टल कंपनी लि०, चीन जन. गण.
7. बिनझोऊ मोववर डाइकास्टल व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
8. किनहुआंगदाओ डाइकास्टल सिनोलायन व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.

9. किनहुआंगदाओ जिंगलांग व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
 10. एस एम एक्स डाईकास्टल व्हील मैनुफैक्चर कंपनी लि०, चीन जन. गण.
 11. झेजियांग शुगांग इंडस्ट्रियल कंपनी लि०, चीन जन. गण.
 12. झेजियांग जिनफी कैडा व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
 13. न्यू थाई व्हील मैनुफैक्चर कंपनी लि०, थाईलैंड
- iv. तथापि, चीन जन. गण. से जिन उत्पादकों / निर्यातकों ने उत्तर दाखिल किया गया है, उन्होंने केवल निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दाखिल किए हैं और चीन जन. गण. की गैर बाजार अर्थव्यवस्था की अवधारणा का खंडन करने के लिए अनुपूरक प्रश्नावली के लिए उत्तर दाखिल नहीं किए हैं।
- v. निर्यातक प्रश्नावली के उत्तरों की प्रारंभिक जांच से यह पता चलता है कि निम्नलिखित पक्षकारों द्वारा दाखिल किए गए उत्तर अधूरे थे और व्यक्तिगत मार्जिन के लिए विचार नहीं किया जा सका :
1. बाओडिंग लिजोंग व्हील मैनुफैक्चरिंग कंपनी लि०, चीन जन. गण. (उत्पादक/ निर्यातक)
 2. न्यू थाई व्हील मैनुफैक्चरिंग कंपनी लि०, थाईलैंड (उत्पादक / निर्यातक)
- vi. यह नोट किया गया था कि उपरोक्त उत्तरों को अस्वीकार करने के बाद भी, ऐसे बड़ी संख्या में उत्पादक / निर्यातक थे, जिन्होंने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दाखिल किए हैं। इस जांच में प्राप्त ऐसे बड़ी संख्या में प्रश्नावली उत्तरों पर विचार करते हुए, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 17 (3) के प्रावधानों के अनुसार पर्याप्त संख्या में उत्पादकों/ निर्यातकों तक ही उनकी सिफारिशों को सीमित रखने का प्रस्ताव किया था। तदनुसार, निम्नलिखित उत्पादकों/ निर्यातकों को जांच की अवधि के दौरान भारत को निर्यातकों की मात्रा के आधार पर आगे जांच करने के लिए नमूने के रूप में चुने जाने के लिए प्रस्तावित किया गया था :
1. साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि०, चीन जन. गण.
 2. बिनझोऊ मोववर डाईकास्टल व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
 3. किनहुआंगदाओ डाईकास्टल सिनोलायन व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
 4. किनहुआंगदाओ जिंगलांग व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
 5. एस एम एक्स डाईकास्टल व्हील मैनुफैक्चर कंपनी लि०, चीन जन. गण.
- vii. सैम्पल में चुने गए पक्षकारों के ब्यौरे के साथ- साथ सैम्पलिंग को अपनाने के प्रस्ताव के संबंध में दिनांक 8.1.2019 के पत्र के तहत सभी हितबद्ध पक्षकारों को सूचित कर दिया गया था और हितबद्ध पक्षकारों को प्रस्तावित सैम्पलिंग के साथ- साथ उस पर अतिरिक्त सूचना के संबंध में, यदि कोई टिप्पणियां हों तो उन्हें प्रदान करने के लिए दिनांक 14.1.2019 तक का समय प्रदान किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त टिप्पणियों की गुण अवगुण के आधार पर जांच की गई थी और वर्तमान जांच में सैम्पलिंग को अपनाने का निर्णय लिया गया था।
- viii. आवश्यक सूचना भेजने के लिए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :
1. एंकेई व्हील्स (इंडिया) लि०
 2. आकार कास्टिंग्स प्रा० लि०
 3. वोल्कस्वागेन इंडिया प्रा० लि०

4. फोर्ड इंडिया प्रा० लि०
 5. जनरल मोटर्स इंडिया प्रा० लि०
 6. ह्युन्दई मोटर इंडिया लि०
 7. टोयोटा किरलोस्कर मोटर प्रा० लि०
 8. एफ आई ए टी इंडिया ऑटोमोबाइल लि०
 9. हिन्दुस्तान मोटर्स लि०
 10. नियो व्हील्स
 11. बीएमडब्ल्यू इंडिया
 12. टाटा मोटर्स लि०
 13. डैमलर इंडिया प्रा० लि०
 14. स्कोडा आटो इंडिया प्रा० लि०
 15. होंडा सील कार्स इंडिया लि०
 16. रिनाॅल्ट निस्सान टेक्नोलॉजी एंड बिजनेस सेंटर इंडिया प्रा० लि०
 17. साई मैग व्हील्स
 18. प्रेसटाइज डिजाइन
 19. मारवाह ट्रेडर
 20. द ऑटोमोटिव कंपोनेन्ट मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (ए सी एम ए)
 21. सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स (एस आई ए एम)
 22. शेरोमणी ट्रेडर प्रा० लि०
 23. रॉकफोड व्हील्स
 24. सुखमणी व्हील्स
 25. सुखदाता इंटरप्राइजेज
 26. परफेक्ट इम्पोर्टर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (आई) प्रा० लि०
 27. आटो डाइनेमिक कारपोरेशन
 28. फास्ट ट्रैक डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा० लि०
 29. जनरल मोटर्स इंडिया प्रा० लि०
- ix. निम्नलिखित आयातकों/ प्रयोक्ताओं ने अन्य अनुरोधों के साथ- साथ निर्धारित फार्मेट में आयातक प्रश्नावली के उत्तर दाखिल किए थे :
1. ह्युन्दई मोटर्स इंडिया लि०
 2. फोर्ड इंडिया प्रा० लि०

- x. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग, उत्पादकों/ निर्यातकों तथा आयातकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय अंश हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए रखी गई एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया है। अब तक सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए अनुरोधों को इस अधिसूचना में शामिल किया गया है।
- xi. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान की गई सूचना की, गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई थी। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर आवश्यकता के अनुसार गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना है तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं किया है। जब भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों के गोपनीय आधार पर दाखिल की गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय अंश प्रदान करने के लिए निदेश दिए गए थे।
- xii. आवेदकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों से आवश्यकता के अनुसार अन्य सूचना की मांग की गई थी।
- xiii. जब भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना प्रदान कराने से मना किया है अथवा सूचना प्रदान नहीं की है, अथवा जांच को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, प्राधिकारी ने ऐसे पक्षकारों को असहयोगी माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर ही जांच परिणाम दर्ज किए गए हैं।
- xiv. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई सूचना की, नियमावली के अनुबंध - III में विनिर्दिष्ट दिशा-निर्देशों के आधार पर यथा संभव रूप से जांच की है ताकि उत्पादन की लागत और संबद्ध वस्तुओं की गैर क्षतिकारी कीमत निकाली जा सके।
- xv. प्राधिकारी ने जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदान की गई ऐसी सूचना की सटीकता के संबंध में स्वयं को संतुष्ट किया है, जो यथा संभव रूप से अधिसूचना का आधार बनी और घरेलू उद्योग तथा उत्पादक / निर्यातक द्वारा संगत और आवश्यक पाए जाने तक, प्रदान किए गए डेटा / दस्तावेजों को सत्यापित किया है।
- xvi. दिनांक 01 अप्रैल, 2017 से 31 मार्च, 2018 तक (12 माह) की अवधि (इसके बाद इसे 'जांच की अवधि' अथवा 'पी ओ आई' के रूप में कहा गया है) के लिए जांच की गई थी। क्षति विश्लेषण के प्रसंग में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 14 - मार्च, 15, अप्रैल, 15 - मार्च, 16, अप्रैल, 16 - मार्च, 17 की अवधि और जांच की अवधि शामिल है।
- xvii. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से विगत तीन वर्षों और जांच की अवधि के दौरान के संबद्ध वस्तुओं के आयातों से संबंधित ब्यौरे प्रदान करने का अनुरोध किया गया था और डीजीसीआई एंड एस से इन ब्यौरों को प्राप्त कर लिया गया है तथा वर्तमान जांच के प्रयोजन से उन्हें अपनाया गया है।
- xviii. दिनांक 20.03.2019 को एक प्रकटीकरण विवरण जारी किया गया था, जिसमें निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन आवश्यक तथ्य निहित थे, और इसमें प्रकटीकरण विवरण के संबंध में टिप्पणियां यदि कोई हो, दिनांक 27.03.2019 तक प्रस्तुत करने का समय दिया गया था। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रकटीकरण के उपरांत की टिप्पणियों पर समुचित रूप से विचार किया है।
- xix. जांच की अवधि के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों, दिए गए तर्कों तथा प्रदान की गई सूचना पर वर्तमान जांच के लिए साक्ष्यों के साथ जितनी सहायक और जितनी संगत समझी गई थी, उतना समुचित विचार किया गया है और इस अधिसूचना में समुचित स्थान पर शामिल कर लिया गया है।
- xx. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (6) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 19.02.2019 को हुई सुनवाई में मौखिक रूप से अपने विचार प्रकट करने का अवसर प्रदान किया था। मौखिक सुनवाई में शामिल होने वाले सभी पक्षकारों से मौखिक रूप से प्रस्तुत किए गए अपने विचारों को दिनांक 25.02.2019 तक लिखित में भी दाखिल करने का अनुरोध किया गया था। पक्षकारों के प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां प्रदान करने/ संकलित करने का परामर्श दिया गया था और उन्हें दिनांक 5.3.2019 तक अपने प्रत्युत्तर अनुरोध प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।

- xxi. प्राधिकारी द्वारा जांच की अवधि के लिए मानी गई विनिमय दर 01 यूएस डॉलर = 65.29 रुपये है।
- xxii. इस अधिसूचना में " *** " गोपनीय मानी गई सूचना को दर्शाता है।

ग. विचाराधीन उत्पाद (पी यू सी) का दायरा और समान वस्तु के उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों और अन्य प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

6. उत्पादकों/ निर्यातकों/ प्रयोक्ताओं इत्यादि द्वारा विचाराधीन उत्पाद और इसके दायरे के संबंध में किए गए अनुरोधों को प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित अनुसार संगत माना गया है :
- विश्व में ए आर डब्ल्यू के अन्य आपूर्तिकर्ताओं की तुलना में घरेलू उद्योग की तकनीकी क्षमताओं में अभी भी एक बड़ा अंतर है।
 - घरेलू उद्योग के पास पहिए के भार के अनुकूलन के संबंध में इंजीनियरी क्षमताओं की कमी है। कतिपय आयातित किए गए ए आर डब्ल्यू का भार सिनर्जिस के भार से कम है। इस भार में अंतर पहिए की तीलियों (स्पोक) की पॉकेट के अनुकूलन के कारण से है। एस सी एल इस अनुकूलन को हासिल कर पाने में समर्थ नहीं है, क्योंकि वे कम मशीनिंग अलोवांस और ड्राफ्ट एंगल को अपनाने में समर्थ नहीं है। अधिक भार से पहिए की लागत में वृद्धि होती है। कारों के लिए ए आर डब्ल्यू जैसे फोर्ड फिगो एस्पायर कम अंतर को दर्शाता है।
 - एस सी एल फ्रंट फेस मशीनी अलॉय व्हील बनाने में सक्षम नहीं है। फोर्ड फ्रंट फेस मशीनी अलाय व्हील का उपयोग करने का प्रस्ताव करता है, जिसे भारत के बाजार में डायमंड कट व्हील भी कहा जाता है। एस सी एल ने इस बात की पुष्टि की है कि वे वर्तमान में मौजूदा पेंटिंग लाइन में इस अपेक्षा को पूरा करने में समर्थ नहीं हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि भारत में कोई वैकल्पिक अलॉय व्हील सप्लायर उपलब्ध नहीं था, फोर्ड को इस ए आर डब्ल्यू के लिए आयात का सहारा लेना पड़ा और भारतीय बाजार के लिए प्रयुक्त सभी व्हील के लिए आयात शुल्क वहन करना पड़ा।
 - फोर्ड द्वारा अपने वाहनों में प्रयुक्त विचाराधीन उत्पादों को कम दाब वाली डाई कास्टिंग (एल पी डी सी) प्रौद्योगिकी का उपयोग करके तैयार किया जाता है। एस सी एल के पास एल पी डी सी प्रौद्योगिकी है। तथापि, अन्य दो भारतीय घरेलू उत्पादक जैसे कि एन्केई और कोसेई मिंडा ग्रेविटी डाई कास्टिंग (जी डी सी) प्रौद्योगिकी को प्रयोग में लाते हैं। एल पी डी सी की तुलना में जी डी सी पुरानी प्रौद्योगिकी है। जी डी सी का उपयोग करने के नुकसान यह हैं कि जी डी सी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके निर्मित किए गए अलॉय रोड व्हील भारी होते हैं और उनमें अधिक कास्टिंग स्केप / कचरा होता है, जिससे अलॉय रोड व्हील की लागत में वृद्धि होती है। यह अलॉय रोड व्हील के निर्माण के लिए एक कम कारगर प्रक्रिया भी है।
 - दुनिया भर में फोर्ड की संस्थाएं 20 वर्षों से भी अधिक समय से एल पी डी सी प्रौद्योगिकी पर आधारित अलॉय रोड व्हील को प्रयोग में ला रही हैं। अतः अलॉय रोड व्हील के निर्माण की एक कारगर प्रक्रिया से गैर कारगर प्रक्रिया की ओर जाना व्यवहारिक नहीं है।
 - एस सी एल की सी ए डी क्षमता फोर्ड की अपेक्षाओं को पूरा नहीं करती। उदाहरण के लिए फिगो ए आर डब्ल्यू के समक्ष सी ए डी के लिए अनेक समस्याएं हैं, जिनके कारण घटिया 2डी और 3डी लिकेज होता है।
 - एस सी एल विभिन्न ऐसे इनपुट के स्थानीकरण की अपेक्षाओं को पूरा नहीं करना चाहता, जो कि ए आर डब्ल्यू के उत्पादन का प्रयोग करना चाहते हैं। उनके पास फोर्ड की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक तकनीकी विशेषता की कमी है।
 - एस सी एल समय की प्रतिबद्धताओं और डिलीवरी की समय-सीमा का पालन नहीं करता।
 - एक अधिक लागत वाले कीमत मॉडल पर काम करते समय एस सी एल प्रायः नई एवं असहमत वस्तुओं की लागत को शामिल करके बढ़ाकर लागत को दिखाती है, जो पहली बार में शामिल नहीं की जाती।

घरेलू उद्योग के विचार :

7. घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद, समान वस्तु और उसके दायरे के संबंध में किए गए अनुरोध और जो प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए हैं, वे इस प्रकार हैं :
- i. वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के प्रयोजन से विचाराधीन उत्पाद वही है जो मूल जांच में है अर्थात् चीन जन. गण., कोरिया गणराज्य और थाईलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए 12 इंच से 24 इंच तक के व्यास के " कास्ट एल्यूमिनियम अलॉय व्हील्स अथवा अलॉय रोड व्हील्स " (ए आर डब्ल्यू), जो मोटर वाहनों में प्रयुक्त किए गए हैं, चाहे एक्सेसरी के साथ लगे हुए हैं अथवा नहीं।
 - ii. ए आर डब्ल्यू का प्रमुख कार्य यह है कि वे वाहनों के संचलन के लिए मोटर वाहनों पर लगाए जाते हैं। 12 इंच से 24 इंच से भिन्न व्यास वाले और मोटर वाहनों के अलावा अन्य प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले ए आर डब्ल्यू इस उत्पाद के दायरे से बाहर थे। शामिल की गई वस्तुओं में निर्मित अथवा अर्ध निर्मित ए आर डब्ल्यू हैं, चाहे वे पेंट किए गए हों, पेंट न किए गए हों, अथवा क्रोम प्लेटेड हों। मोटर वाहनों के लिए पहिए (व्हील्स) सामान्यतः स्टील अथवा एल्यूमिनियम अलॉय के बने होते हैं। स्टील व्हील्स को इस उत्पाद के दायरे में शामिल नहीं किया गया था। मोटर साइकल में प्रयोग के लिए भी ए आर डब्ल्यू को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा गया था।
 - iii. मूल अंतिम जांच परिणाम में यह निर्धारित किया गया था कि संबद्ध देशों से उत्पादित और निर्यात किए गए विचाराधीन उत्पाद तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं और संबद्ध देशों के आयात की गई संबद्ध वस्तुएं भौतिक और रासायनिक विशिष्टताओं, निर्माण प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से तुलनीय हैं। दोनों ही तकनीकी और वाणिज्यिक दृष्टि से समान हैं। उपभोक्ता दोनों को एक दूसरे के स्थान पर उपयोग में ला रहे हैं। ऐसे जांच परिणाम इस निर्णायक समीक्षा जांच के लिए भी संगत हैं।
 - iv. चूंकि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है, इसलिए विचाराधीन उत्पाद का दायरा और परिणाम वही रहे जो मूल जांच में परिभाषित किया गया था। इसके अलावा, शुल्कों को लगाने से लेकर अब तक कोई महत्वपूर्ण ऐसा बदलाव नहीं किया गया है जिसका कि विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु के निर्धारण के संबंध में कोई संबंध हो। अतः घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में मूल जांच में प्राधिकारी द्वारा अंतिम जांच परिणाम का उल्लेख करता है और उस पर भरोसा करता है।
 - v. मैसर्स फोर्ड इंडिया लि० ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में कतिपय तर्क दिए हैं, यद्यपि वर्तमान जांच केवल एक निर्णायक समीक्षा जांच है। विचाराधीन उत्पाद का दायरा वही है जो मूल मामले में है। फोर्ड के अधिकांश तर्क मूल मामले के भाग थे और यह पाया गया था कि अनुरोध में कोई दम नहीं है।
 - vi. इस तर्क के संबंध में कि अभी भी घरेलू उद्योग की तकनीकी क्षमताओं में काफी अंतर है, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के पास उत्कृष्ट तकनीकी क्षमता है, जिसके कारण ही यह 1999 से फोर्ड सहित वैश्विक और घरेलू मूल उपस्कर निर्माता (ओ ई एम) के लिए संबद्ध वस्तुओं की आपूर्ति कर रहा है। ऐसे आपूर्तिकर्ताओं के व्यौर प्रदान किए गए हैं। एस सी एल भारत से मोन्डेओ कार्यक्रम के लिए प्रथम पूर्ण सेवा प्रदाता था और तब से ही वह अपनी पूर्ण सेवा प्रदाता (एफ एस एस) की स्थिति को निरंतर बनाए हुए है। एस सी एल के व्हील्स को फोर्ड द्वारा न केवल भारत में बल्कि आस्ट्रेलिया, जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका में भी मान्यता दी गई है। यही नहीं, एस सी सी के अनेक सुधार संबंधी सुझावों को आज भी फोर्ड के डिजाइनों में शामिल किया गया है।

घरेलू उद्योग भारत में और विदेशी बाजारों में भी कई प्रमुख घरेलू मूल उपस्कर निर्माताओं (ओ ई एम) को संबद्ध वस्तुओं की आपूर्ति करता है, जो इस बात को सिद्ध करता है कि फोर्ड के तर्कों में कोई दम नहीं है।

- vii. इस तर्क के संबंध में कि एस सी एल के पास पहिए (व्हील) के भार के अनुकूलन के संबंध में इंजीनियरी क्षमताओं की कमी है और घरेलू व्हील तथा आयात किए गए व्हील के मामले में भारत में अंतर है, यह उल्लेख किया जाता है कि पहिए (व्हील) का भार मात्रात्मक/ ज्यामितीय कारकों के अलावा अनेक कारकों के कारण से है, जैसे अलॉय तत्व, डिजाइन सामग्रियों का घनत्व तथा रेडियोग्राफिक स्तर। घरेलू उद्योग प्रायः डिजाइन को लक्ष्य में रखकर ऐसे व्हील बताता है, जो इष्टतम भार पर ओ ई एम की अपेक्षाओं से अधिक हैं। घरेलू उद्योग ने यह विशेषज्ञता वर्षों से प्राप्त कर रखी है और इसी के कारण से उसने भारतीय मूल उपस्कर निर्माताओं (ओ ई एम) के लिए लाखों पहिए (व्हील) बनाए हैं और उसके पास भारतीय सड़कों की स्थितियों के अनुसार पूरा ज्ञान है। एस सी एल जैसे उत्पादकों ने अपने इतिहास में एक भी फील्ड असफलता का सामना नहीं किया है। यह भी नोट किया जाता है कि मशीनिंग अलोवांस का पहिए के भार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और व्हील सप्लायर द्वारा ड्राफ्ट एंगल का निर्धारण अथवा निर्णय नहीं किया जाता। इसे सभी मामलों में ओ ई एम द्वारा अंतिम रूप दिया जाता है।
- viii. इस तर्क के संबंध में कि एस सी एल फ्रंट फेस मशीनी अलॉय व्हील का निर्माण करने में सक्षम नहीं है, यह उल्लेख किया जाता है कि एस सी एल वर्ष 2004 से भारत में फ्रंट फेस मशीनी अलॉय व्हील्स के निर्माण में अग्रणी रहा है, जिसमें उन्हें "मोस्ट इनोवेटिव टेक्नोलॉजी ट्रांसफर" अवार्ड और मल्टीपल जीरो पी पी एम और 100 प्रतिशत डिलीवरी अवार्ड टोयोटा से प्राप्त हुए हैं तथा होंडा से 100 प्रतिशत क्वालिटी रेटिंग प्राप्त हुई है, जिनमें दोनों ही निस्संदेह फ्रंट फेस मशीन अलॉय व्हील के वैश्विक उपयोग में विश्व में अग्रणी हैं। तब से एस सी एल टोयोटा + किस्लर + होंडा तथा टी एम एल के लिए चुनिंदा सप्लायर रहा है और इन मूल उपस्कर निर्माताओं (ओ ई एम) के लिए अभी तक 1.5 मिलियन से भी अधिक फ्रंट फेस मशीनी अलॉय व्हील की आपूर्ति की है। फोर्ड मशीनी व्हील्स में अपनी विशेषज्ञता को सिद्ध करने के बाद से 10 से 12 वर्षों से एस सी एल से जुड़ी है।
- ix. इस तर्क के संबंध में कि एस सी एल ने यह पुष्टि की है कि वे मौजूदा पेंटिंग लाइन में वर्तमान में इस आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम नहीं होंगे, यह उल्लेखनीय है कि एस सी एल ने दिनांक 15.09.2015 को एक पी पी टी में फोर्ड को अपनी क्षमताओं की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत की थी। यह भी उल्लेखनीय है कि एस सी एल अपने अत्याधुनिक पेंट लाइन में टॉप ग्लोबल ओ ई एम के लिए प्रीमियम फिनिश के साथ व्हील को पेंट करता है।
- x. इस तर्क के संबंध में कि फोर्ड द्वारा अपने वाहनों में प्रयोग किए गए विचाराधीन उत्पादों को कम दाब वाली डाई कास्टिंग (एल पी डी सी) प्रौद्योगिकी का उपयोग करके तैयार किए जाते हैं, सिनर्जीज, स्टील स्ट्रिप्स इत्यादि जैसी कंपनियां फोर्ड जैसे मूल उपस्कर निर्माताओं (ओ ई एम) के लिए एल पी डी सी व्हील की आपूर्ति करती है और कुछ ऐसे उत्पादक भी हैं, जिन्होंने जी डी सी को अपनाया है। घरेलू उद्योग में एल पी डी सी प्रौद्योगिकी के साथ निर्मित व्हील्स की आपूर्ति के लिए घरेलू उद्योग में पर्याप्त क्षमता है। ये प्रौद्योगिकियां वास्तव में अलग-अलग व्हील प्रदान नहीं करती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ए आर डब्ल्यू के उत्पादन में शामिल दोनों प्रौद्योगिकियों की मूल मामले में जांच की गई थी और मूल अंतिम जांच परिणाम में ही एक विशिष्ट जांच परिणाम उपलब्ध है।
- xi. इस तर्क के संबंध में कि फोर्ड की संस्थाएं विश्व भर में 20 से अधिक वर्षों से एल पी डी सी प्रौद्योगिकी के आधार पर अलॉय रोड व्हील का उपयोग कर रही हैं और इसीलिए अलॉय रोड व्हील निर्माण की एक कारगर प्रक्रिया को छोड़कर गैर-कारगर प्रक्रिया को अपनाना व्यवहारिक नहीं है, इस तर्क में कोई दम नहीं है। घरेलू उद्योग में भारत में एलपीडीसी प्रौद्योगिकी वाले व्हील के लिए पर्याप्त क्षमता है और फोर्ड घरेलू उद्योग से इसकी खरीद कर रहा है।

- xii. इस तर्क के संबंध में कि एस सी एल की सी ए डी क्षमता फोर्ड की अपेक्षाओं को पूरा नहीं करती, एस सी एल और फोर्ड के बीच 1990 में भागीदारी की शुरुआत हुई थी और एस सी एल करीब 20 कार्यक्रमों के लिए अभी तक भी बिना किसी सी ए डी क्षमता मामले के फोर्ड के लिए चुनिंदा सप्लायर भागीदार रहा है। केवल इसी बात से यह तर्क बिना किसी आधार के दिखाई देता है।
- xiii. इस तर्क के संबंध में कि एस सी एल विभिन्न इनपुट के स्थानीयकरण की जरूरतों की पूर्ति नहीं कर पता, जो ए आर डब्ल्यू के उत्पादन में अपेक्षित हैं, एस सी एल का मुख्य उद्देश्य सर्वोत्तम संभव संसाधनों का उपयोग करना है ताकि ग्राहकों को इष्टतम कीमत पर सर्वोत्तम गुणवत्ता के व्हील प्राप्त हो सके। यह बात इस तथ्य से स्पष्ट है कि एस सी एल व्हील के साथ कभी भी कोई प्रमुख गुणवत्ता का मामला नहीं रहा है और यही कारण है कि एस सी एल को फोर्ड Q प्रमाणन प्राप्त हुआ है और सर्वोत्तम गुणवत्ता के लिए विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।
- xiv. इस तर्क के संबंध में कि एस सी एल समय की प्रतिबद्धताओं और डिलीवरी की समय-सीमा का पालन नहीं करता, यह अवगत कराया जाता है कि एस सी एल का समय पर डिलीवरी प्रदान करने का निष्कलंक रिकार्ड रहा है, ऐसे अनुशासन के बिना वैश्विक बाजार में ऐसा नहीं हो सकता। तथापि, हमेशा ही ऐसी चुनौतियां होंगी, जब दो पक्षकार एक परियोजना पर काम कर रहे हों। उदाहरण के लिए, यदि ग्राहक कतिपय विशिष्ट अनुमोदित इनपुट का उपयोग करने पर बल देता है तो स्पष्ट है कि उसकी खरीद के साथ एक समय सीमा जुड़ी होती है। ऐसी आवृत्ति समस्या अनियमित होती है और अनिश्चित समय-सीमा और मांग में होती है – जिसमें तुरंत हल किए जाने की जरूरत होती है। एस सी एल अति विशिष्ट उत्पाद का निर्माण कर रहा है और ऐसी अनियमित समय-सीमा उचित तरीके से पूरी की जाती है। इसमें ग्राहकों द्वारा दिए गए वास्तविक समय के आधार पर अपनी सामग्री की खरीद करने इत्यादि की योजना बनाने की जरूरत होती है। वास्तव में एस सी एल ने अनेक बार, यहां तक कि अल्प सूचना पर ग्राहक के लिए हवाई माल भाड़ा पर मेटल प्राप्त कर और अतिरिक्त लागत खर्च करके ग्राहक की ऐसी अनियमित जरूरतों में काफी हद तक सहायता की है। ग्राहक ने इस प्रकार की लागत में मदद का वायदा किया लेकिन कभी पूरा नहीं किया।
- xv. इस तर्क के संबंध में कि ऐसे लागत वृद्धि कीमत संबंधी मॉडल पर काम करते समय एस सी एल प्रायः नई और असहमत मदों की लागत के लिए लागत वृद्धि करता है, यह तर्क ही दुर्भाग्यपूर्ण है। इस बात की सराहना की जानी चाहिए कि एस सी एल सर्वोत्तम श्रेणी की सामग्रियों, प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके उच्च गुणवत्ता के अलॉय व्हील्स का निर्माण करने के कारोबार में शामिल है और प्रायः परस्पर सहमत शर्तों पर और सर्वोत्तम कीमतें प्रस्तावित की जाती हैं। यह उल्लेखनीय है कि किसी भी मामले में कीमतें पाटित आयातों की मौजूदगी से प्रभावित होती हैं। उसके बाद यदि उद्धृत प्रक्रिया के दौरान अंत में ग्राहक की मांग के संबंध में कोई परिवर्तन होता है, तो एस सी एल को निश्चय ही ऐसी अतिरिक्त लागतों को इन परिवर्तनों की उद्धृत कीमत अपनाने पर स्थानान्तरित करना होता है। निरंतर ऐसी बातचीत के बाद, जिसके दौरान कीमत के सभी पहलुओं पर चर्चा की जाती है, फोर्ड कीमतों को स्वीकार करता है और एस सी एल को कारोबार प्रदान करता है। एस सी एल ने अपनी सीमा से अधिक प्रयास करके हमेशा ही फोर्ड की मांग को पूरा किया है।
- xvi. संक्षेप में फोर्ड के तर्कों से विचाराधीन उत्पाद के दायरे की समीक्षा की कोई भी जरूरत साबित नहीं होती क्योंकि वे आयात किए गए ए आर डब्ल्यू तथा घरेलू रूप से निर्मित किए गए ए आर डब्ल्यू के बीच कोई भी अंतर प्रमाणित करने में सफल नहीं रहे हैं। सामान्य कारोबार में वर्तमान पाटनरोधी शुल्कों के दायरे से बाहर निकलने के लिए उत्पाद के बारे में जानकारी लेने का कोई आधार नहीं होता। फोर्ड यह सिद्ध करने के लिए ऐसा कुछ भी रिकार्ड पर नहीं ला सका कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित की गई संबद्ध वस्तुएं पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) के तहत, आयात किए गए विचाराधीन उत्पाद के लिए समान वस्तु नहीं हैं। फोर्ड द्वारा उठाए गए

मामले मूल जांच में उठाए गए मामलों के लिए तुलनीय हैं और विचाराधीन उत्पाद का दायरा सभी ऐसे तथ्यों की विस्तृत जांच के बाद निर्धारित किया गया था।

- xvii. अंतिम जांच परिणाम स्पष्ट तौर पर यह दर्शाते हैं कि डिजाइन अथवा विनिर्देशन में कोई भी अंतर होने से किसी ए आर डब्ल्यू विशेष को यथा परिभाषित विचाराधीन उत्पाद से अलग नहीं किया जा सकता। इस संबंध में फोर्ड के तर्कों को भी अस्वीकार किया जाना चाहिए। पुनः यह कहा जाता है और अवगत कराया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित संबद्ध वस्तुओं और संबद्ध देशों से उत्पाद किए गए और निर्यात किए गए विचाराधीन उत्पाद के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है और मूल जांच में प्राधिकारी के जांच परिणाम इस निर्णायक समीक्षा जांच में भी अपनाए जाने चाहिए अर्थात् विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु।

प्राधिकारी द्वारा जांच :

8. वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के प्रयोजन से विचाराधीन उत्पाद संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए 12 इंच से 24 इंच तक के व्यास के "कास्ट एल्यूमिनियम अलॉय व्हील्स अथवा अलॉय रोड व्हील्स" (ए आर डब्ल्यू) हैं, जो मोटर वाहनों में प्रयुक्त किए गए हैं, चाहे एक्सेसरी के साथ लगे हुए हैं अथवा नहीं।
9. विचाराधीन उत्पाद "रोड व्हील और उनके तत्संबंधी पुर्जे और एक्सेसरीज" विवरण के तहत सीमा शुल्क उप शीर्ष 8708 70 00 के तहत सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 87 के अंतर्गत आते हैं। तथापि, सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और किसी भी तरह से यह विचाराधीन उत्पाद के दायरे के संबंध में बाध्यकारी नहीं है।
10. वर्तमान जांच चूंकि एक निर्णायक समीक्षा जांच है, इसलिए प्राधिकारी यह विचार करते हैं कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद का दायरा वही है जो मूल जांच में है। पूर्व जांचों में परिभाषित विचाराधीन उत्पाद इस प्रकार हैं:-
 14. वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के प्रयोजन से विचाराधीन उत्पाद चीन जन. गण., कोरिया गणराज्य और थाईलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए 12 इंच से 24 इंच तक के व्यास के "कास्ट एल्यूमिनियम अलॉय व्हील्स अथवा अलॉय रोड व्हील्स" (ए आर डब्ल्यू), जो मोटर वाहनों में प्रयुक्त किए गए हैं, चाहे एक्सेसरी के साथ लगे हुए हैं अथवा नहीं।
 15. अलॉय व्हील्स अथवा अलॉय रोड व्हील्स (ए आर डब्ल्यू) का विभिन्न आकार / व्यास में उत्पादन किया जाता है। विचाराधीन उत्पाद में केवल 12 इंच से लेकर 24 इंच तक के व्यास वाले आकार के और मोटर वाहनों में प्रयुक्त होने वाले ए आर डब्ल्यू ही शामिल हैं। 12 इंच से लेकर 24 इंच तक के व्यास वाले ए आर डब्ल्यू को छोड़कर और मोटर वाहनों के अलावा अन्य उपयोगों वाले ए आर डब्ल्यू उत्पाद के दायरे से बाहर हैं। इन वस्तुओं में निर्मित अथवा अर्ध निर्मित ए आर डब्ल्यू शामिल हैं, चाहे वे पेंट किए हों, पेंट न किए हों अथवा क्रोम पेटेड हों। ए आर डब्ल्यू का मुख्य कार्य यह है कि ये वाहन के संचालन के लिए मोटर वाहनों में लगाए जाते हैं। मोटर वाहनों के पहिए सामान्यतः स्टील अथवा एल्यूमिनियम धातु के बने होते हैं। जैसा कि घरेलू उद्योग द्वारा दावा किया गया है, अलॉय व्हील्स नई पीढ़ी के उत्पाद हैं और इनका भारत में व्यापक बाजार है, क्योंकि स्टील व्हील्स पर उनकी सुंदर बनावट होती है। स्टील व्हील्स उत्पाद के दायरे में शामिल नहीं हैं। ए आर डब्ल्यू को "रोड व्हील और उनके तत्संबंधी पुर्जे और एक्सेसरीज" विवरण के तहत सीमा शुल्क उप शीर्ष सं. 8708.70 के तहत सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 87 के तहत वर्गीकृत किया गया है। जैसा कि घरेलू उद्योग द्वारा दावा किया गया है, संबद्ध वस्तुएं विभिन्न सीमा शुल्क वर्गीकरणों यथा 87087000, 87082900, 87087089900, 89149990, 87089400 इत्यादि के तहत भी आयात की जाती है। तथापि, सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और यह किसी भी तरह से इस जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है।

11. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने यह पाया है कि संबद्ध देशों से निर्यात किए गए विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा तैयार किए जा रहे उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित संबद्ध उत्पाद विचाराधीन उत्पाद से भौतिक एवं रासायनिक विशिष्टताओं, कार्यों एवं उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशिष्टताओं के संदर्भ में तुलनीय है। दोनों ही तकनीकी और वाणिज्यिक दृष्टि से एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग में लाए जा सकते हैं। ग्राहक दोनों को ही बदल-बदल कर प्रयोग में ला रहे हैं।
12. प्राधिकारी का यह मानना है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा तैयार उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के अनुसार विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है जैसा कि उपरोक्त पैरा में उल्लेख किया गया है। याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं को प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) के तात्पर्य से संबद्ध देशों से आयात की गई संबद्ध वस्तुओं को समान वस्तुएं माना जा रहा है।
13. उपरोक्त के बावजूद, प्राधिकारी ने फोर्ड इंडिया प्रा० लि० के अनुरोधों और दस्तावेजी साक्ष्यों के साथ ऐसे तर्कों के संबंध में याचिकाकर्ताओं द्वारा दाखिल किए गए प्रत्युत्तर में खंडनों की जांच की है। उक्त अनुरोधों की जांच से यह पता चलता है कि आयात किए गए उत्पाद में एल पी डी सी अथवा जी डी सी प्रौद्योगिकी के माध्यम से उत्पादित ए आर डब्ल्यू शामिल है। इसी प्रकार से भारतीय उत्पादक भी या तो एल पी डी सी या जी डी सी प्रौद्योगिकियों का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार यह दावा कि एल पी डी सी प्रौद्योगिकी के माध्यम से तैयार ए आर डब्ल्यू भारत में उपयुक्त रूप से उपलब्ध नहीं है, स्वीकार्य नहीं है। यह दावा कि घरेलू उद्योग के पास इंजीनियरिंग क्षमता नहीं है, घरेलू उद्योग कुछ विशिष्ट मॉडलों की आपूर्ति नहीं कर रहा, आपूर्ति में विलंब होता है, एस सी एल की सी ए डी की क्षमता फोर्ड की अपेक्षाओं को पूरा नहीं करती, व्हील के भार में और कीमत संबंधी मामलों में भिन्नता है, इत्यादि के संबंध में याचिकाकर्ताओं द्वारा दाखिल किए गए उत्तरों पर विचार करते हुए भी जांच की गई है। इस संबंध में यह नोट किया गया है कि ऐसे दावे इस जांच में विचाराधीन उत्पाद के दायरे की समीक्षा की जरूरत को प्रमाणित नहीं करते। इन मामलों पर मूल जांच में भी ध्यान दिया गया था और फोर्ड ने मूल जांच में भी भाग लिया था। अतः फोर्ड ऐसे कोई अन्य महत्वपूर्ण नए तथ्य सामने नहीं ला सका, जो विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के दायरे की समीक्षा का सुझाव देते हों।
14. इस जांच में उत्पाद के दायरे की एक समीक्षा जरूरी नहीं है क्योंकि ऐसे कोई तथ्य मौजूद नहीं हैं, जो यह सुझाव देते हों कि याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) के तात्पर्य से संबद्ध देशों से आयात की गई संबद्ध वस्तुओं के समान वस्तु नहीं हैं। तदनुसार तर्कों को अस्वीकार किया जाता है।

घ. घरेलू उद्योग तथा आधार

उत्पादकों / निर्यातकों और आयातकों के विचार :

15. घरेलू उद्योग के दायरे और आधार के संबंध में जांच की अवधि के दौरान निर्यातकों / आयातकों / अन्य प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध इस प्रकार हैं :
 - i. एक याचिकाकर्ता कंपनी सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० सेज (एस ई जेड) में स्थित है और इसीलिए इसे शामिल नहीं किया जाएगा क्योंकि यह मुख्य रूप से निर्यात बाजार की पूर्ति करती है। सेज (एस ई जेड) अधिकृत प्रचालनों के प्रयोजन से भारत के सीमा शुल्क क्षेत्र से बाहर का क्षेत्र माना गया है। इसके अलावा, सेज से किसी भी वस्तु को हटाकर घरेलू टैरिफ क्षेत्र (डी टी ए) में ले जाने पर पाटनरोधी शुल्कों सहित सीमा शुल्क, जहां कहीं भी ऐसी वस्तुओं के निर्यात करने पर लागू है, लगाए जाते हैं।
 - ii. केवल मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील्स प्रा० लि० ही वर्तमान याचिका में समर्थन कर रही है। कोसेई मिंडा एल्यूमिनियम कंपनी प्रा० लि० (याचिकाकर्ता) और मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील्स प्रा० लि० (समर्थक) संगत कंपनियां हैं। दोनों ही कंपनियां एक ही कंपनी नामतः मिंडा इंडस्ट्रीज लि० (एम आई एल) द्वारा प्रबंधित

एवं नियंत्रित है। इस ग्रुप की वेबसाइट पर उपलब्ध सूचना के अनुसार, कोसेई मिंडा एल्यूमिनियम कंपनी प्रा० लि०, एम आई एल की एक सहायक कंपनी है और मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील्स प्रा० लि०, एम आई एल की एक अनुषंगी कंपनी है तथा कारपोरेट कार्य मंत्रालय (एम सी ए) में उपलब्ध सूचना के अनुसार दोनों ही कंपनियों के कुछ निदेशक और शेयरधारक हैं। कारपोरेट कार्य मंत्रालय के पास दाखिल की गई सूचना के अनुसार मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील्स प्रा० लि० प्राथमिक रूप से विनिर्माण तथा एल्यूमिनियम अलॉय व्हील और / अथवा एल्यूमिनियम जनरल कास्टिंग पार्ट्स की आपूर्ति के कार्य में लगी हुई है। इस प्रकार से संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन में लगी संगत कंपनी को प्रकट न करना प्राधिकारी को गुमराह करने के लिए घरेलू उद्योग का जान बूझकर किया गया प्रयास है। याचिकाकर्ता द्वारा पूरी सूचना दाखिल न किए जाने से याचिका व्यर्थ होगी और वर्तमान जांच समाप्त हो जाएगी।

- iii. यदि प्राधिकारी कोसेई मिंडा को इस जांच में आवेदक के रूप में विचार करना जारी रखते हैं तो वही तरीका बाओडिंग लिजोंग और न्यू थाई के लिए भी लागू किया जाना चाहिए। दिनांक 8 जनवरी, 2019 के सैम्पलिंग पत्र के तहत असंगत व्यापारी द्वारा उत्तर दाखिल नहीं किए जाने के कारण बाओडिंग लिजोंग और न्यू थाई के उत्तर अस्वीकार कर दिए गए थे।
- iv. बाओडिंग लिजोंग और न्यू थाई के उत्तर इस आधार पर अस्वीकार किए गए थे कि उसके व्यापारी (ट्रेडर) नामतः ह्यून्डई ग्लोबिस कंपनी लि० और फोर्ड मोटर कंपनी (थाईलैंड) लि० ने प्रश्नावली उत्तर दाखिल नहीं किए थे। उक्त व्यापारी (ट्रेडर) बाओडिंग लिजोंग, न्यू थाई के असंगत व्यापारी हैं। कानूनन कहीं भी ऐसा नहीं उल्लेख किया गया है कि असंगत व्यापारी उत्तर दाखिल करेंगे। तथापि, वर्तमान मामले में, मिंडा कोसेई एक संगत कंपनी है और उसने विस्तृत उत्तर दाखिल नहीं किए हैं, अतः कोसेई मिंडा के आवेदन को अस्वीकार किया जाए।
- v. आवेदन दाखिल करने में याचिकाकर्ता चुनिंदा नहीं होने चाहिए। विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और व्यापार में शामिल समूह में सभी कंपनियों को व्यापार उपचार महानिदेशालय द्वारा निर्धारित आवेदन प्रोफार्मा के अनुसार विस्तृत सूचना दाखिल करनी चाहिए। वर्तमान जांच में कोसेई मिंडा एल्यूमिनियम कंपनी प्रा० लि० और मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील्स प्रा० लि० संगत कंपनियां हैं और मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील्स प्रा० लि० ने प्राधिकारी के समक्ष विस्तृत सूचना दाखिल नहीं की है। मात्र एक समर्थन का पत्र होने से विचार नहीं किया जा सकता। मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील्स प्रा० लि० की भागीदारी न होना अधिक लाभ होने के संबंध में है, जो कि याचिकाकर्ताओं द्वारा चुनिंदा भागीदारी है। प्राधिकारी को वही तरीका अपनाना चाहिए, जो चीन जन. गण. से उत्पादकों / निर्यातकों को उनके उत्तरों को अस्वीकार करते समय अस्वीकरण के लिए अपनाया गया था। इसे देखते हुए मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम प्रा० लि० को घरेलू उद्योग के आधार के दायरे से बाहर किया जाए।
- vi. याचिकाकर्ता कंपनियों के पास भारतीय उत्पादन का 40.29 प्रतिशत हिस्सा है और समर्थकों के साथ 62.30 प्रतिशत हिस्सा होता है। चूंकि सिनर्जीज कास्टिंग एक निर्यात उन्मुखी इकाई (ई ओ यू) है, इसलिए कंपनी ने अपने कुल उत्पादन का 70 प्रतिशत से भी कम हिस्सा भारत में घरेलू बाजार में बेचा होगा। जांच की अवधि के दौरान इस कंपनी के कुल उत्पादन पर विचार किया गया है और इस प्रकार से इसमें कोसेई मिंडा के उत्पादन के साथ भारत के कुल उत्पादन का 40 प्रतिशत शामिल है। तथापि, यदि सिनर्जीज की निर्यात बिक्रियों और कोसेई मिंडा के उत्पादन को बाहर कर दिया जाता है तो कुल उत्पादन में आवेदक का हिस्सा 25 प्रतिशत से भी कम होगा, जिससे वे अपर्याप्त आधार की वजह से घरेलू उद्योग के रूप में माने जाने के लिए योग्य नहीं होंगे।
- vii. एक याचिकाकर्ता चूंकि एक 100 प्रतिशत निर्यात उन्मुखी इकाई (ई ओ यू) है, इसलिए उसे घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता। चूंकि याचिकाकर्ता का उत्पादन उनके आधार के निर्धारण के प्रयोजन से घरेलू टैरिफ क्षेत्र (डी टी ए) में बिक्री के लिए उसकी पात्रता सीमित होगी।

- viii. अन्य उत्पादकों की सूचना का स्रोत प्रदान नहीं किया गया है। साथ ही ई ओ यू को घरेलू उद्योग के दायरे से सेज (एस ई जेड) को बाहर रखने के लिए विभिन्न रक्षोपाय जांचों में महानिदेशक, रक्षोपाय द्वारा लिए गए आधार को देखते हुए घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जा सकता।
- ix. निर्दिष्ट प्राधिकारी को याचिकाकर्ता के आधार के निर्धारण के लिए केवल पात्र मात्रा पर ही विचार करना चाहिए, जो ई ओ यू कंपनी ने घरेलू टैरिफ क्षेत्र (डी टी ए) में बेची है।

घरेलू उद्योग के विचार :

16. घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू उद्योग के दायरे और आधार के संबंध में किए गए अनुरोध, जो प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए हैं, इस प्रकार हैं :
- i. वर्तमान जांच मैसर्स सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० (ई ओ यू) तथा मै० कोसेई मिन्डा एल्यूमिनियम कंपनी प्रा० लि० द्वारा की गई एक संयुक्त याचिका के आधार पर शुरू की गई है। इन दोनों ही कंपनी का उत्पादन भारतीय उत्पादन में अधिकांश हिस्सा रखता है और पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित नियम 2 (ख) के तात्पर्य से घरेलू उद्योग के रूप में माने जाने के लिए पात्र है।
- ii. भारत में याचिकाकर्ताओं के अलावा संबद्ध वस्तुओं के 6 और भी ज्ञात उत्पादक हैं और इन 6 में से 3 उत्पादकों ने याचिका में विशेष तौर पर समर्थन किया है। इस प्रकार से, कुल 8 उत्पादकों में से 5 उत्पादक वर्तमान पाटनरोधी शुल्क का विस्तार चाहते हैं। कुल उत्पादन और याचिकाकर्ताओं तथा अन्य का हिस्सा सुलभ संदर्भ के लिए नीचे सारणी में दिया गया है :

क्र. सं.	कंपनी का नाम	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
1	सिनर्जीज कास्टिंग्स (याचिकाकर्ता)	मी. टन	***	***	***	***
2	कोसेई मिन्डा एल्यूमिनियम कंपनी प्रा० (याचिकाकर्ता)	मी. टन	***	***	***	***
3	मिन्डा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील प्रा० लि० (समर्थक)	मी. टन	-	-	***	***
4	नियो व्हील्स लि० (समर्थक)	मी. टन	***	***	***	***
5	एंकेई व्हील्स (इंडिया) लि० (न तो समर्थन किया है और न ही विरोध किया है)	मी. टन				

			***	***	***	***
6	स्टील स्ट्रिप्स व्हील्स लि० (समर्थक)	मी. टन	-	-	-	***
7	प्रेसीजन आटो इंडस्ट्रीज प्रा० लि० (न तो समर्थन किया है और न ही विरोध किया है)	मी. टन	-	-	***	***
8	जेजेएफ कास्टिंग्स लि० (न तो समर्थन किया है और न ही विरोध किया है)	मी. टन	-	-	-	***
9	कुल भारतीय उत्पादन	मी. टन	19,502	22,695	30,605	43,671
10	याचिकाकर्ताओं का हिस्सा	%	50.90	50.84	49.71	42.60
11	समर्थकों के साथ याचिकाकर्ताओं का हिस्सा	%	53.02	53.07	65.29	71.01

नोट: स्टील स्ट्रिप्स व्हील्स का उत्पादन अब दिनांक 1.2.2019 के समर्थन पत्र के अनुसार माना गया है, जो कि पहले सर्वोत्तम अनुमानों के आधार थे। साथ ही, एन्केई के उत्पादन अनुमान अब उनकी 2017-18 की वार्षिक रिपोर्ट के आधार पर किए गए हैं, जो कि पहले उपलब्ध नहीं थे और जांच की अवधि के लिए उत्पादन समानुपात के आधार पर था। याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादन में कोई भी छोटी शुद्धि उपरोक्त सारणी में भी सत्यापित की शर्त के अध्याधीन की गई है।

- iii. जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ताओं द्वारा किया गया उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन में करीब 42.60 प्रतिशत हिस्सा होता है, जो कि पाटनरोधी नियमावली और पाटनरोधी करार में यथा परिकल्पित अनुसार एक बड़ा हिस्सा होता है। समर्थकों के साथ याचिकाकर्ताओं के पास भारतीय उत्पादन में करीब 71 प्रतिशत हिस्सा है।
- iv. एन्केई थाईलैंड और चीन जन. गण. में ऐसे निर्यातकों से संबद्ध हैं, जिन्होंने जांच की अवधि के दौरान भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है। यदि एन्केई द्वारा उत्पादन नियम 2 (ख) के परन्तुक को देखते हुए केवल पात्र उत्पादन पर विचार करने के लिए कम कर दिया जाता है, तो भी याचिकाकर्ताओं का हिस्सा यहां तक कि बिना समर्थन के 57 प्रतिशत से अधिक हो जाता है।
- v. समीक्षा जांच के मामले में नियम 5 लागू नहीं है और एक निर्यातक समीक्षा जांच में नियम 23 में अपेक्षा को देखते हुए घरेलू उद्योग की अपेक्षा और आधार को देखने की जरूरत है। तथापि, याचिकाकर्ताओं के पास भारतीय उत्पादन में हिस्सा यहां तक कि आधार की सशक्त अपेक्षा को भी पूरा करता है, जैसा कि यह एक नई जांच हो। यदि इसके विपरीत कोई भी तर्क अस्वीकार किया जाना चाहिए।

- vi. कतिपय पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि वे इस बात से आश्वस्त नहीं हैं कि मै० सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० एक ई ओ यू है और यही स्थिति मूल जांच के समय भी थी। वास्तव में मूल जांच में ह्यून्डई सहित कई पक्षकारों ने अन्य मामलों के बीच घरेलू उद्योग के रूप में ई ओ यू की पात्रता को चुनौती देने के लिए याचिका दाखिल की थी।
- vii. यह तर्क दिया गया है कि ई ओ यू घरेलू उद्योग का भाग नहीं होना चाहिए। प्राधिकारी ने मूल जांच में विस्तृत जांच करने के बाद यह पाया है कि एक पाटनरोधी जांच में ई ओ यू घरेलू उद्योग का भाग हो सकता है, यही स्थिति कई अन्य पाटनरोधी जांचों और संबद्ध ई ओ यू में भी थी। हाल ही में एक रक्षोपाय मामले में ई ओ यू को पात्र घरेलू उद्योग माना गया था, जो कि भारत में सौर सेलों के संबंध में था, जबकि सेज को भी बाहर किया गया था। जांच परिणाम को इस प्रकार से पढ़ा जाए, "मैंने यह पाया कि एक सेज यूनिट द्वारा घरेलू टैरिफ क्षेत्र (डी टी ए) को बिक्रियों का प्रावधान एक अपवाद के रूप में, विभिन्न मामलों में अलग-अलग विशिष्टताओं के साथ होना एक सेज यूनिट के लिए व्यापार उपचारी उपायों के प्रसंग में, सेज अधिनियम, 2005 के बड़े फ्रेमवर्क के प्रसंग को देखते हुए एक घरेलू उत्पादक के रूप में विचार किया जाना स्पष्ट नहीं करता। अतः इस जांच में घरेलू उद्योग का दायरा केवल उत्पादकों अर्थात् मैसर्स इंडो सोलर लि० (ई ओ यू) तथा मैसर्स जूपिटर सोलर पावर लि० तक ही सीमित था, जिसमें ई ओ यू यूनिट भी शामिल है, चूंकि वे निर्यात अभिमुखी और विदेश व्यापार नीतियों द्वारा शासित डी टी ए में भौतिक रूप से उपलब्ध है। (फाइल सं. 22/1/2018 -डी जी टी आर- "सोलर सेल, चाहे मॉड्यूलों अथवा पैनलों में संकलित किए गए हों अथवा नहीं" के भारत में आयातों के संबंध में रक्षोपाय जांच)
- viii. यह तर्क दिया गया है कि एक याचिकाकर्ता नामतः मैसर्स मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील प्रा० लि० की एक संगत कंपनी में भागीदारी न होने का कोई कानूनी आधार नहीं है। यह अपेक्षा नियम 2 (ख) में बड़े हिस्से की अपेक्षा के पूरा करने के लिए है। दो भारतीय उत्पादकों के बीच कोई भी संबंध होने की परिभाषा से कोई सरोकार नहीं है। घरेलू उद्योग की परिभाषा "बड़ा हिस्सा" को विशेष रूप से परन्तुक के साथ पढ़ा जाए और इस पर भारतीय उत्पादकों के परस्पर संबंध के बारे में कोई भी निर्णय नहीं लिया जाता। ऐसे किसी संगत पक्षकार के लिए कोई भी कानूनी अथवा तथ्यात्मक अधिदेश नहीं है कि एक याचिकाकर्ता के रूप में होना चाहिए, यदि बड़े हिस्से की अपेक्षा को भागीदार याचिकाकर्ताओं द्वारा पूरी कर दिया जाता है।
- ix. वास्तव में इस मामले में संगत पक्षकार जो एक स्वतंत्र कारोबारी संस्था है, उसे इस कारण से याचिकाकर्ता के रूप में शामिल करने के लिए अनुरोध किया गया था कि कथित कंपनी ने वर्ष 2016-17 में उत्पादन शुरू किया था और वाणिज्यिक उत्पादन केवल जांच की अवधि के दौरान हुआ था। जबकि याचिकाकर्ताओं के लिए क्षति डाटा समग्र क्षति अवधि के लिए उपलब्ध है, कथित उत्पादक से पूर्ण डेटा केवल एक अथवा दो वर्षों के लिए उपलब्ध है। याचिकाकर्ता के डेटा के लिए इस प्रकार के डेटा को शामिल किए जाने से इस प्रवृत्ति को विकृत किया जाएगा और वर्तमान मामले के प्रसंग में कथित याचिकाकर्ता के क्षति संबंधी डेटा पर विचार करना उचित नहीं होगा। तथापि, याचिका में नियम 2 (ख) की अपेक्षाओं को पूरा किया गया है। ऐसी कोई कानूनी अपेक्षा नहीं है, जिसमें यह उल्लेख हो कि किसी याचिकाकर्ता कंपनी को एक संगत उत्पादक के साथ संयुक्त रूप से आना अनिवार्य है और कानूनी अपेक्षा यह है कि याचिकाकर्ताओं को घरेलू उद्योग के रूप में पात्र होने के लिए बड़ा हिस्सा होने के मापदंड को पूरा करना होगा। याचिका बड़ा हिस्सा होने के मापदंड को पूरा करती है।
- x. प्रतिवादी पक्षकारों के तर्कों के विपरीत निर्यातकों के लिए मूल्य श्रृंखला की अपेक्षा का नियम 2 (ख) की अपेक्षाओं से कोई संबंध नहीं है। निर्यात के मामले में मूल्य श्रृंखला की यह अपेक्षा सी टी ए की धारा 9 क में पाटन के मार्जिन की परिभाषा से संबद्ध है, जिसमें यह उल्लेख किया गया है कि किसी वस्तु के संबंध में पाटन के मार्जिन से तात्पर्य निर्यात कीमत और उसके सामान्य मूल्य के बीच अंतर से है। परिभाषा में "इसकी" अपेक्षाओं

को पूरा करने के लिए, भारत में इसके निर्यात में शामिल सभी पक्षकारों को भाग लेना होगा। इस अपेक्षा का नियम 2 (ख) की परिणाम परिभाषा से कोई संबंध नहीं है।

- xi. यह तर्क दिया गया है कि अन्य उत्पादकों की सूचना का स्रोत प्रदान नहीं किया गया है। यह ठीक नहीं है। 8 उत्पादकों में से 5 उत्पादक या तो याचिकाकर्ता हैं या समर्थक हैं। शेष 3 में से दो बहुत ही छोटे उत्पादक हैं और उनके उत्पादन का याचिकाकर्ता की बाजार सूचना के आधार पर अनुमान लगाया गया था। तथापि, शेष अग्रणी उत्पादक नामतः एन्केई व्हील्स इंडिया लि० एक सूचीबद्ध कंपनी है और उनका उत्पादन उनकी वार्षिक रिपोर्ट के आधार पर तैयार किया गया था।
- xii. याचिकाकर्ताओं द्वारा रखे गए शेयर आधार की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं, जैसा कि विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू टी ओ) पैनल द्वारा नई जांचों के संबंध में व्याख्या की गई है तथा यह निर्णायक समीक्षा जांच में प्राधिकारी के पूर्व जांच परिणामों के अनुसार भी है। घरेलू उद्योग की परिभाषा, जैसा कि अनुच्छेद 3.1, 4.1 और 5.4 के तात्पर्य से है, उसकी डब्ल्यू टी ओ द्वारा व्याख्या की गई है और अनुच्छेद 11 के प्रयोजन से घरेलू उद्योग की परिभाषा को एक बड़े भाग के रूप में माना गया है, क्योंकि कथित अनुच्छेद के तहत घरेलू उद्योग की कोई व्याख्या नहीं है। अर्जेन्टाइना में डब्ल्यू टी ओ पैनल ने पोल्ट्री मामले में यह पाया था कि “बड़ा शब्द” महत्वपूर्ण, गंभीर अथवा पर्याप्त के रूप में परिभाषित किया गया है। यह पाया गया था कि घरेलू उत्पादकों के पास कुल घरेलू उत्पादन का 46 प्रतिशत हिस्सा है, वह अनुच्छेद 4.1 की अपेक्षाओं को पूरा करता है। यह भी पाया गया था कि 50 प्रतिशत से कम प्रतिशत को भी बड़ा हिस्सा माना जा सकता है। चीन जन. गण., यूरोपीय संघ, केन्या, पाकिस्तान, ईरान, यूक्रेन तथा संयुक्त राज्य अमेरिका से सोडा ऐश की निर्यातक समीक्षा जांच जैसे मामले (फाइल सं. 7/5/ 2017- डी जी ए डी दिनांक 14.2.2018, पैरा 15-16) में, प्राधिकारी ने यह पाया है कि घरेलू उद्योग बनने के लिए अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए याचिकाकर्ताओं द्वारा 40 प्रतिशत हिस्सा एक बड़ा हिस्सा है। वर्तमान मामले में याचिकाकर्ताओं का हिस्सा बड़े हिस्से के तात्पर्य में आता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

17. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में घरेलू उद्योग की परिभाषा इस प्रकार है:-

(ख) “घरेलू उद्योग” का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से हैं, जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परन्तु जब ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं। ऐसे मामले “घरेलू उद्योग” शेष उत्पादकों को समझा जाएगा।

18. यह याचिका मैसर्स सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० (ई ओ यू) तथा मैसर्स कोसेई मिंडा एल्यूमिनियम कंपनी लि० द्वारा संयुक्त रूप से दाखिल की गई है। याचिकाकर्ताओं ने न तो संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है और न ही वे संबद्ध देशों में वस्तुओं के किसी अन्य उत्पादक / निर्यातक अथवा भारत में किसी आयातक से संबद्ध है। मैसर्स सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० (ई ओ यू) वर्तमान मामले की मूल जांच में घरेलू उद्योग रहा था।
19. याचिकाकर्ताओं के अनुरोधों से यह नोट किया गया है कि भारत में संबद्ध वस्तुओं के 8 उत्पादक हैं। उत्पादक नामतः मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील प्रा० लि० और नियो व्हील्स लि० ने याचिका के समय ही याचिका का स्पष्ट रूप से समर्थन किया था। उत्पादक नामतः स्टील स्ट्रिप्स व्हील्स लि० ने दिनांक 1.2.2019 के पत्र के तहत अपना समर्थन स्पष्ट किया था। 8 उत्पादकों में से 3 उत्पादकों ने प्राधिकारी के समक्ष अनुरोध दाखिल नहीं किए हैं। याचिकाकर्ताओं के अनुरोधों से यह भी नोट किया गया है कि याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन में 42.60 प्रतिशत हिस्सा है और करीब 71 प्रतिशत हिस्सा समर्थकों को मिलाकर है।
20. उपरोक्त को देखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि याचिकाकर्ताओं के उत्पादन में कुल भारतीय उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा शामिल है और साथ ही, पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 (I ख) के साथ पठित नियम 2 (ख) के तात्पर्य से घरेलू उद्योग है।

21. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० की स्थिति इसके पते से ही सेज की प्रतीत होती है, यद्यपि कंपनी ने स्वयं दावा किया है कि वह एक ई ओ यू है। सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० मूल मामले में घरेलू उद्योग थी और कंपनी तब ई ओ यू भी थी।
22. इस मामले में विभिन्न पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिए गए हैं कि सिनर्जीज कास्टिंग्स लि०, जो एक ई ओ यू है, उसे नियम 2 (ख) के तात्पर्य से घरेलू उद्योग होने के लिए एक पात्र उत्पादक नहीं माना जा सकता। इस मामले में यह नोट किया जाना चाहिए कि एक याचिकाकर्ता नामतः सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० एक ई ओ यू यूनिट है और वही कंपनी मूल जांच में भी एक घरेलू उद्योग के रूप में मानी गई थी। प्रतिवादी पक्षकारों ने मूल जांच में भी ई ओ यू की पात्रता के संबंध में ऐसे मामलों को उठाया है तथा प्राधिकारी द्वारा किया गया विचार नीचे दिया गया है, जो कि इस जांच के लिए भी संगत है क्योंकि वर्तमान मामला पहले से प्रवृत्त पाटनरोधी शुल्क की एक निष्पत्ति समीक्षा का है।

"26. पूर्व पैरा में यथा उल्लिखित वास्तविक और कानूनी प्रावधानों की विस्तृत जांच करने के बाद प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि मैसर्स सिनर्जीज कास्टिंग्स लि० के पास जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा है और इस प्रकार से यह नियम 2 (ख) के तात्पर्य से घरेलू उद्योग होता है और पाटनरोधी शुल्क नियमावली के नियम 5 (3) के प्रावधानों के तहत आधार के मापदंडों को पूरा करता है।"

23. यह भी नोट किया जाता है कि अनेक पक्षकार जैसे ह्यून्डई ने रिट याचिका में मूल मामले में घरेलू उद्योग के रूप में एक ई ओ यू की पात्रता को चुनौती दी थी और प्राधिकारी द्वारा ई ओ यू को घरेलू उद्योग के रूप में दिए गए उपचार के संबंध में कोई प्रतिकूल निर्णय नहीं दिया गया है।
24. कुछ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि यदि प्राधिकारी घरेलू उद्योग के तात्पर्य से ई ओ यू को शामिल करने का निर्णय लेते हैं तो केवल घरेलू उद्योग के रूप में ई ओ यू की पात्रता पर ही कुल भारतीय उत्पादन की गणना के लिए विचार किया जाना चाहिए। इस संबंध में यह नोट किया गया है कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के तहत बड़ा हिस्सा होने की अपेक्षा कुल भारतीय उत्पादन के लिए विशिष्ट है न कि बिक्रियों की दृष्टि से है। केवल कुल उत्पादन ही संगत है। तदनुसार दावे को अस्वीकार किया जाता है।
25. विभिन्न पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील प्रा० लि०, जो एक हितबद्ध पक्षकार नामतः मै० कोसेई मिंडा एल्यूमिनियम कंपनी लि० का एक संगत पक्षकार है, द्वारा एक याचिकाकर्ता के रूप में वर्तमान जांच में भाग लिया जाना है न कि एक समर्थक के रूप में। इसके लिए याचिकाकर्ताओं ने यह अनुरोध किया है कि यदि याचिका में नियम 2 (ख) के बड़े हिस्से की अपेक्षाओं की पूर्ति होती है तो एक संयुक्त याचिकाकर्ता के रूप में भाग लेने के लिए ऐसी किसी एक संगत संस्था के लिए कोई कानूनी अपेक्षा नहीं है याचिकाकर्ताओं द्वारा यह भी अनुरोध किया गया है कि मिंडा कोसेई एल्यूमिनियम व्हील प्रा० लि० ने वर्ष 2016-17 में ही उत्पादन शुरू किया था और इस उत्पादन के लिए क्षति संबंधी डाटा दो आधार वर्षों के लिए उपलब्ध नहीं है, जिससे खंडित क्षति जांच होगी। प्राधिकारी ने वर्तमान मामले में पक्षकारों के दावों की जांच की है और यह नोट करते हैं कि एक पाटनरोधी आवेदन में यह अपेक्षा घरेलू उद्योग के दर्जे का दावा करते समय नियम 2 (ख) की शर्त को पूरा करना है। ऐसी शर्तें याचिकाकर्ताओं द्वारा वर्तमान मामले में पूरी की गई हैं, जो कि कुल भारतीय उत्पादन में याचिकाकर्ताओं का हिस्सा एक बड़ा हिस्सा पाया गया है। अर्थात् 42.60 प्रतिशत है। तदनुसार, इस संबंध में हितबद्ध का तर्क अस्वीकार किया जाता है।

ड. गोपनीयता के दावों संबंधित मामले

उत्पादकों / निर्यातकों / आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार :

26. जांच की अवधि के दौरान अत्यधिक गोपनीयता के संबंध में निर्यातकों / आयातकों / अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए अनुरोध इस प्रकार हैं :

- i. याचिकाकर्ताओं ने अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है और एक अधूरी याचिका दाखिल की है। आवेदन की खंड -VI (लागत संबंधी सूचना) के उत्तर में, याचिकाकर्ता ने अभी कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है। घरेलू उद्योग ने याचिका के भाग VI “गोपनीयता अनुबंध – 6.2 से 6.13 के रूप में संलग्न” में उठाए गए प्रश्नों का उत्तर दिया है। तथापि, अनुबंध 6.2 से 6.13 में गोपनीयता का दावा किया गया है।
- ii. याचिकाकर्ताओं ने इस बात के लिए कोई पर्याप्त कारण प्रदान नहीं किए हैं कि कतिपय सूचना के लिए सार प्रदान करना क्यों संभव नहीं था। याचिकाकर्ताओं को अपने दावे के लिए स्पष्टीकरण प्रदान करना अपेक्षित है लेकिन वे ऐसा करने में विफल रहे हैं। तदनुसार, यह स्पष्ट है कि याचिकाकर्ताओं ने आवेदन के तहत यथा अपेक्षित पूरी सूचना प्रदान नहीं की है।
- iii. याचिकाकर्ता ने कतिपय सूचना रोक कर रखी है और अत्यधिक गोपनीयता का भी सहारा लिया है।
- iv. याचिका में अत्यधिक गोपनीयता दिखाई गई है। याचिका में याचिकाकर्ता के संबंध में उसके वितरण माध्यमों, कमीशन/छूट की नीति, ऋण की शर्तों, सामान्य मूल्य की गणना इत्यादि के संबंध में कोई भी सूचना प्रदान नहीं की गई है। याचिकाकर्ताओं द्वारा डब्ल्यू टी ओ के पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 6.5.1 तथा पाटनरोधी नियमावली, के नियम 7 के उल्लंघन में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया गया है।
- v. याचिकाकर्ताओं ने इस दृष्टि से अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है कि उन्होंने सार्वजनिक फाइल में अपनी वार्षिक रिपोर्ट उपलब्ध नहीं कराई है।
- vi. अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया गया है और एक सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट जैसे दस्तावेज प्रदान नहीं किए गए हैं।
- vii. याचिकाकर्ताओं ने न तो अपेक्षित सूचना प्रदान की है और न ही याचिका में प्रदान की गई सूचना के लिए कोई आधार अथवा समर्थन में कोई दस्तावेज प्रदान किए हैं।

घरेलू उद्योग के विचार

27. घरेलू उद्योग द्वारा अत्यधिक गोपनीयता के संबंध में किए गए अनुरोध, जो प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए हैं, इस प्रकार हैं :
- i. वर्तमान जांच में भाग लेने वाले निर्यातकों और आयातकों ने अत्यधिक गोपनीयता का सहारा लिया है।
- ii. निर्यातकों / आयातकों द्वारा दाखिल किए गए उत्तरों के अगोपनीय (एनसीवी) अंश में उनके द्वारा किए विभिन्न दावों की कोई जानकारी देने की अनुमति नहीं है।
- iii. प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा गोपनीयता के दावे पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 का उल्लंघन करते हैं।
- iv. फोर्ड जैसी कंपनियों ने प्रमुख तथ्यों को प्रकट किए बिना विचाराधीन उत्पाद के संबंध में तर्क उठाए हैं, ताकि घरेलू उद्योग को पर्याप्त टिप्पणियां प्रदान करने से रोका जा सके।
- v. याचिकाकर्ताओं ने या तो क्षति मापदंडों के वास्तविक व्यौरे प्रदान किए हैं या एक सूचीबद्ध सार प्रदान किया है। ताकि अन्य पक्षकार मामले को समझ सकें। लेकिन प्रतिवादी निर्यातकों अथवा आयातकों द्वारा किए गए आयातों के संबंध में ऐसी कोई सूचना उपलब्ध नहीं है।
- vi. यह तर्क दिया गया है कि व्यापार उपचार महानिदेशालय (डी जी टी आर) को वर्तमान मामला शुरू नहीं करना चाहिए क्योंकि याचिकाकर्ता ने अत्यधिक गोपनीयता का सहारा लिया है और प्रतिवादी पक्षकारों के टिप्पणी करने के अधिकारों को प्रभावित करने के लिए कई डेटा की गोपनीयता का सहारा लिया है। इस तर्क का कोई आधार नहीं है। नियम 7 के तहत भी गोपनीयता का दावा किया गया है, जिसमें ऐसी गोपनीयता के लिए दावे के कारण प्रदान किए गए हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

28. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीयता के संबंध में किए गए अनुरोधों और प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए अनुरोधों की जांच की गई है और तदनुसार उन्हें शामिल किया गया है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीयता के आधार पर प्रदान की गई सूचना की, गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई थी। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर गोपनीयता के दावे को आवश्यकता के अनुसार स्वीकार किया है और ऐसी सूचना की गोपनीय माना है तथा उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं किया है। जहां कहीं भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों की गोपनीय आधार पर दाखिल की गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय अंश प्रदान करने का निदेश दिया गया था। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सार्वजनिक फाइल के रूप में प्रदान की गई सूचना का अगोपनीय अंश उपलब्ध कराया है। घरेलू उद्योग के क्षति मापदंडों, आयातों और क्षति मापदंडों के संबंध में सूचना उपरोक्त आधार पर सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध कराई गई है। विभिन्न पक्षकारों द्वारा अपने अनुरोधों में कारोबार की संवेदनशीलता के रूप में दावा की गई सूचना को वर्तमान प्रक्रिया के अनुसार गोपनीय रखा गया है।

च. विविध अनुरोध

उत्पादकों / निर्यातकों / आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार :

29. निर्यातकों / आयातकों / अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा विविध मामलों के संबंध में कतिपय विविध अनुरोध भी किए गए थे और जो संगत पाए गए थे, वे इस प्रकार हैं :
- याचिकाकर्ता ने पाटनरोधी जांच की निर्णायक समीक्षा शुरू करने के लिए स्थिति को सिद्ध करने के लिए कोई पर्याप्त साक्ष्य प्रकट नहीं किए हैं।
 - याचिका पाटनरोधी शुल्क करार और पाटनरोधी शुल्क नियमावली के तहत साक्ष्य और कानूनी आधारों को पूरा नहीं करती।
 - याचिकाकर्ता ने जांच शुरू करने के बाद जांच की अवधि की प्रथम तिमाही के लिए डी जी सी आई एंड एस द्वारा सौदा - वार आकड़े प्रदान किए गए हैं, तथापि, याचिका में कुछ अन्य पहलू, जिनका इससे संबंध है, अद्यतन नहीं किए गए हैं।

घरेलू उद्योग के विचार

30. घरेलू उद्योग द्वारा विविध मामलों के संबंध में किए गए अनुरोध इस प्रकार हैं :
- यह तर्क दिया गया है कि याचिका में पाटनरोधी शुल्क करार और साथ ही पाटनरोधी शुल्क नियमावली के तहत साक्ष्य और कानूनी मानकों की पूर्ति नहीं की गई है। इस तर्क में कोई भी दम नहीं है। याचिका में सभी संगत सूचना शामिल हैं, जिनसे नियम 23 (I ख) के तहत एक जांच न्यायोचित हो सके। याचिका में पाटन की क्षति और कारणात्मक संबंध तथा क्षति की संभावना वाले सभी कारक जैसे चीन जन. गण. में अत्यधिक क्षमता, विचाराधीन उत्पाद सहित चीन के निर्यातों के संबंध में यू एस द्वारा किए गए उपायों के संबंध में साक्ष्य इत्यादि की जांच के लिए संगत सूचना निहित है। इसके विपरीत, प्रतिवादी पक्षकार अपने अनुरोधों में कहीं भी याचिकाकर्ता के क्षति की संभावना के दावों का प्रतिवाद करने के लिए कोई अनुरोध नहीं कर सके।
 - यह तर्क दिया गया है कि याचिकाकर्ता ने जांच की अवधि के उपरांत जांच शुरूआत करने में प्रथम तिमाही के लिए डीजीसीआई एंड एस के टी/टी डाटा अद्यतन किए हैं, तथापि, याचिका में कतिपय अन्य पहलुओं को अद्यतन नहीं किया है, जिनका इनसे कोई संबंध नहीं है। यह तर्क सही नहीं है। याचिकाकर्ता ने टी/टी आयात डाटा और सभी संगत अनुबंध, जो ऐसे आयात डाटा से संबद्ध हैं, को अद्यतन किया है। एक तिमाही के लिए आयात डाटा में परिवर्तन के कारण याचिका को पुनः तैयार नहीं किया क्योंकि याचिका की बुनियादी बातें, जांच की अवधि में एक तिमाही के लिए अद्यतन आयात डाटा पर विचार करने के बाद भी वही रही। ऐसी प्रक्रिया कई मामलों में रही है और ऐसी संकल्पना में कोई रुकावट नहीं है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

31. हितबद्ध पक्षकारों और याचिकाकर्ताओं द्वारा विविध मामलों के संबंध में किए गए कई अनुरोध, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, की जांच की गई है और इस प्रकार उन्हें शामिल किया गया है :

- i. इस तर्क के संबंध में कि याचिकाकर्ताओं ने पाटनरोधी जांच की निर्णायक समीक्षा शुरू करने के लिए शर्त को सिद्ध करने के लिए कोई भी पर्याप्त साक्ष्य प्रदान नहीं किया है, यह नोट किया गया है कि वर्तमान मामला नियम 23 के तहत जांच शुरू करने को न्यायोचित ठहराने के लिए सूचना प्राप्त हो जाने के बाद शुरू किया गया था।
- ii. प्राधिकारी द्वारा कानून के तहत निर्धारित अपेक्षाओं का पालन करने के बाद ही पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई थी। याचिका में जांच शुरुआत के लिए और संगत तथ्यों के लिए कहा गया है, जिनके कारण समीक्षा जांच शुरू करनी पड़ी।

छ. सामान्य मूल्य निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन की कार्यप्रणाली और निर्धारण

उत्पादकों / निर्यातकों, आयातकों और अन्य संबद्ध पक्षकारों के विचार :

32. उत्पादकों / निर्यातकों / आयातकों / अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य और पाटन मार्जिन के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :

- i. वाओडिंग लिजोंग तथा न्यू थाई के उत्तर इस आधार पर अस्वीकार किए गए थे कि उनके व्यापारियों नामतः ह्यून्डई ग्लोबिस कंपनी लि० तथा फोर्ड मोटर कंपनी (थाईलैंड) लि० ने प्रश्नावली उत्तर दाखिल नहीं किए हैं। कानून के अनुसार, कहीं भी यह उल्लेख नहीं किया है कि असंगत व्यापारी उत्तर दाखिल करेंगे। तथापि, वर्तमान मामले में, मिंडा कोसेई एक संगत कंपनी है और उसने विस्तृत उत्तर दाखिल नहीं किए हैं, इस प्रकार से कोसेई मिंडा के आवेदन को अस्वीकार किया जाना चाहिए।
- ii. याचिकाकर्ताओं ने केवल इतना कहा है कि उन्हें एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमतों अथवा एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में सामान्य मूल्य का निर्माण करने के संबंध में कोई कीमत संबंधी ब्यौरे प्राप्त नहीं हुए। यह आवेदन स्पष्ट रूप से अधूरा है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को पाटनरोधी नियमावली में प्रदान किए गए पहले दो विकल्पों को प्रयोग में लाना चाहिए ताकि वर्तमान जांच में सामान्य मूल्य निकाला जा सके।
- iii. याचिकाकर्ताओं का अनुरोध और सामान्य मूल्य के संबंध में डेटा विभिन्न अन्य देशों और यूरोपीय संघ जैसे क्षेत्राधिकारों में अपनाई गई जांच प्रक्रिया के अनुसार नहीं है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के लिए अपनाई गई कोई व्याख्या यूरोपीय कमीशन द्वारा तथा भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय के शेन्यांग मतसुशिता मामले में जांच परिणामों में प्रयोग की गई व्याख्या से भिन्न नहीं हो सकती।
- iv. याचिकाकर्ताओं ने सामान्य मूल्य की गणना के लिए अपेक्षित उत्पादन की अपनी लागत की, भारत में उसके द्वारा किए गए व्यय की लागत के साथ गलत समानता की है। याचिकाकर्ता की उत्पादन की लागत ऐसे विदेशी उत्पादकों, विशेषकर चीन जन. गण. में उत्पादकों, जो संबद्ध उत्पाद के निर्माण के लिए स्थानीय तौर पर सभी घटकों को खरीद सकते हैं, से अपेक्षाकृत भिन्न होगी। याचिकाकर्ताओं ने कोई भी ऐसे सकारात्मक साक्ष्य अथवा आधार प्रदान नहीं किए हैं, जिनके आधार पर उसने सामान्य मूल्य की गणना के लिए उत्पादन की अपनी लागत अपनाई है, इस प्रकार वे पाटनरोधी अधिनियम के तहत साक्ष्य की अपेक्षाओं का परीक्षण करने में विफल रहे हैं।
- v. यह कहा जाता है कि विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू टी ओ) के लिए चीन के अभिवृद्धि संबंधी प्रोटोकॉल के संगत प्रावधानों के अनुसार, पाटनरोधी कार्रवाई में "प्रतिनिधि देश" की प्रथा में 11 दिसम्बर, 2016 से विविध कानूनी आधार का अभाव होगा। ऐसी प्रथा तब से ही समाप्त मानी जाएगी। अतः हम भारत के जांच

प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में चीन को मानने के बावजूद इस मामले के लिए सामान्य मूल्य की गणना में “प्रतिनिधि देश” का प्रयोग न करें।

घरेलू उद्योग के विचार

33. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए थे :
- i. संबद्ध देशों के लिए एन वी, ई पी और डी एम के दावों के आधार याचिका में और इस अनुरोध के साथ जांच शुरू होने के बाद अद्यतन अनुबंध में प्रदान किए गए हैं कि चीन जन. गण. को सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजन से एन एम ई देश के रूप में माना जाना चाहिए।
 - ii. यद्यपि ऐसे पक्षकार हैं, जिन्होंने चीन जन. गण. से अपने निर्यातक प्रश्नावली उत्तर दाखिल किए हैं, चीन जन. गण. से ऐसे उत्पादकों / निर्यातकों ने संगत अनुपूरक प्रश्नावली फॉर्मेट का उत्तर देकर गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की अवधारणा का खंडन नहीं किया है। इस प्रकार ऐसे कोई आधार नहीं हैं कि वर्तमान मामले में चीन जन. गण. को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दर्जा प्रदान करे और चीन के उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी शुल्क नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर किया जाए।
 - iii. साथ ही, सैम्पल कंपनी नामतः साइटिक ग्रुप वर्तमान मामले भी बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रभावित नहीं कर सकी और उनके उत्तर को अस्वीकार किया जाना था, जैसा कि मूल मामले के अंतिम जांच परिणामों से स्पष्ट है।
 - iv. निर्मित सामान्य मूल्य, जैसा कि याचिका में दावा किया गया है, उपयुक्त कार्यप्रणाली होगी और हम प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए उसे अपनाएं। कोरिया गणराज्य तथा थाईलैंड के लिए तथा साथ ही, चूंकि कोरिया गणराज्य और थाईलैंड से भी सहयोग नहीं है, उसके लिए इस आधार पर सामान्य मूल्य लागू नहीं होगा।
 - v. याचिकाकर्ता ने डी जी सी आई एंड एस के सौदा-वार आंकड़ों के आधार पर निर्यात कीमत का दावा किया है। इस पर निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए विचार किया जाना चाहिए। प्रस्तुत की गई सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के संबंध में सूचना में यहां तक कि जांच की अवधि के दौरान भी संबद्ध देशों से पाटन मार्जिन का महत्वपूर्ण स्तर दर्शाया गया है, जो वर्तमान शुल्कों की समाप्ति की अवस्था में पाटन में तेजी आने को दर्शाता है।
 - vi. यह प्रतीत होता है कि साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि० किसी से और हर किसी से विचाराधीन उत्पाद की खरीद और निर्यात करती है। कंपनी को ऐसे परिदृश्य में कोई भी व्यक्तिगत पाटन मार्जिन प्रदान नहीं किया जाना चाहिए। उपरोक्त तथ्य यह भी दर्शाते हैं कि साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि० मात्र एक संस्था नहीं है बल्कि यह विचाराधीन उत्पाद के विविध उत्पादकों का एक समूह है। यह स्पष्ट नहीं है कि कैसे कई कंपनियां ऐसी संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन में वास्तव में लगी हुई हैं जिसका साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि० द्वारा भारत को निर्यात किया गया था। ऐसे अवसर भी हैं कि साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि० द्वारा तैयार विचाराधीन उत्पाद अन्य कंपनियों द्वारा भी भारत को निर्यात किया गया है। इसमें गहन जांच करने की जरूरत है। इस कंपनी को न तो व्यक्तिगत मार्जिन प्रदान किया गया था और न ही मूल मामले में बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया गया था क्योंकि कंपनी ऐसे दावों को प्रमाणित नहीं कर सकी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

क. चीन जन. गण. में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य :

34. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन जन. गण. से किसी भी उत्पादक / निर्यातक ने अनुपूरक प्रश्नावली उत्तर दाखिल नहीं किया है, जिसमें कि उन्हें पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 में यथा उल्लिखित अवधारणा का खंडन करने की मांग की थी। इस स्थिति में प्राधिकारी को इस संबंध में नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार कार्रवाई करनी है।

35. उपरोक्त को देखते हुए चीन जन. गण. से भारत में आयातित विचाराधीन उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया जाना है। बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा तर्कसंगत लाभ मार्जिन के लिए तर्कसंगत मूल्य वर्धन करने के बाद याचिकाकर्ताओं के लिए उत्पादन की लागत को अनुकूल बनाकर विचार किया गया है। तदनुसार, जांच की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य का निर्माण किया गया है। जैसा कि नीचे दी गई पाटन मार्जिन सारणी में दिया गया है।

ख. कोरिया गणराज्य और थाईलैंड में उत्पादकों / निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य :

36. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कोरिया गणराज्य और थाईलैंड से किसी भी उत्पादक / निर्यातक को वर्तमान जांच में निर्धारित रूप में और निर्धारित तरीके से निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। अतः उनके मामलों में सामान्य मूल्य का निर्धारण रिकार्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम तथ्यों के आधार पर किया गया है, जो कि नीचे दी गई पाटन मार्जिन सारणी में प्रदान किया गया है :

ज. निर्यात कीमत का निर्धारण :

37. निर्यातक प्रश्नावली उत्तरों की जांच यह दर्शाती है कि निम्नलिखित पक्षकारों द्वारा उत्तर दाखिल किए गए थे, जो अधूरे थे और उन पर व्यक्तिगत मार्जिन के लिए विचार नहीं किया जा सकता :

- (1) मैसर्स बाओडिंग लिजोंग व्हील्स मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लि०, चीन जन. गण., जो कि भारत में संबद्ध वस्तुओं का एक उत्पादक और निर्यातक है।
- (2) मैसर्स न्यू थैल व्हील्स मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लि०, थाईलैंड, जो भारत में संबद्ध वस्तुओं का एक उत्पादक और निर्यातक है।

38. यह नोट किया गया था कि उपरोक्त उत्तरों को अस्वीकार करने के बाद भी, ऐसे बड़ी मात्रा में उत्पादक / निर्यातक अभी भी हैं, जिन्होंने निर्यातक प्रश्नावली उत्तर दाखिल किए हैं। इसे देखते हुए पाटनरोधी नियमावली के नियम 17 (3) के प्रावधानों के तहत एक तर्क संगत संख्या में उत्पादकों / निर्यातकों के जांच परिणामों को सीमित रखने का निर्णय लिया गया है। तदनुसार, जांच की अवधि के दौरान भारत को निर्यात की मात्रा के आधार पर आगे जांच करने के लिए सैंपल में पात्र उत्पादकों / निर्यातकों को चुना गया है, जो नीचे दिए गए अनुसार है :

- i. साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि०, चीन जन. गण.
- ii. बिनझोऊ मोववर डाईकास्टल व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
- iii. किनहुआंगदाओ डाईकास्टल सिनोलायन व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
- iv. किनहुआंगदाओ जिंगलांग व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण.
- v. एस एम एक्स डाईकास्टल व्हील मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लि०, चीन जन. गण.

क) चीन जन. गण. में चुनिंदा उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण :

39. साइटिक ग्रुप के निर्यातक उत्तरों की जांच की गई थी और जहां तक संभव हुआ सत्यापित की गई। मैसर्स साइटिक डाईकास्टल भारत में असंगत आयातकों को सीधे निर्यातों में शामिल है। वह ऐसी संबद्ध वस्तुओं का निर्यात करता है, जो स्वयं उत्पादन करते हैं और साथ ही ग्रुप में और बाहर अन्य उत्पादकों से भी खरीद करते हैं। साइटिक ग्रुप के पास 8 संगत कंपनियां हैं, जो विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में शामिल हैं, नामतः

1. साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि०,
2. सानमेंजिया (एसएमएक्स) डाईकास्टल व्हील मैन्युफैक्चर कंपनी लि०

3. किनहुआंगदाओ दैकाजिंगलांग व्हील कंपनी, लि०,
4. किनहुआंगदाओ जिंगलांग व्हील कंपनी लि०,
5. गुआंगझाऊ डार्इकास्टल असाही एल्यूमिनियम कास्टिंग कंपनी, लि०,
6. चोंगकिंग डार्इकास्टल जीली व्हील कंपनी, लि०,
7. वूजी डार्इकास्टल व्हील मैनुफैक्चरिंग कंपनी, लि०,
8. यांगझाऊ डार्इकास्टल व्हील मैनुफैक्चरिंग कंपनी, लि०,
40. यह स्पष्ट किया गया था कि केवल क्र. सं. 1,2,3, और 4 पर उत्पादक ही भारत में संबद्ध वस्तुओं के निर्यात में शामिल हैं। संगत उत्पादकों ने अलग से प्रश्नावली उत्तर दाखिल किए हैं। मै० साइटिक डार्इकास्टल कंपनी लि० को छोड़कर किसी भी उत्पादक ने भारत में संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया है। मै० साइटिक डार्इकास्टल कंपनी लि० ने भी भारत को निर्यातों के लिए मै० बिनजोऊ मूवएवर डार्इकास्टल व्हील कंपनी लि०, चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं की खरीद की है।
41. मै० साइटिक डार्इकास्टल ने कहा है कि वे विचाराधीन उत्पाद के केवल ट्रेडर ही नहीं हैं बल्कि वे उत्पाद के डिजाइन और विकास, ओईएम के साथ बोली और कीमत संबंधी बातचीत, उत्पादन योजना बनाने तथा उत्पादक के तकनीशियनों को भेजने और उत्पादन की निगरानी करने तथा उत्पाद की गुणवत्ता के लिए जिम्मेदार हैं। उन्होंने यह कहा कि वे “डार्इकास्टल” ब्रांड के स्वामी हैं और अन्य उत्पादक उनके द्वारा यथा निर्देशित निर्माण प्रक्रिया में ही हैं। अतः उनका अंतिम अधिसूचना में और विचाराधीन उत्पाद के निर्यात की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भागीदार होने के कारण प्राधिकारी द्वारा सिफारिश किए गए शुल्क विशेष रूप से उल्लिखित किए जाएं।
42. मै० साइटिक डार्इकास्टल ने यह कहा है कि भारत को अधिकांश बिक्रियां एक्स वर्क्स / एक्स गोडाउन आधार पर की गई थी और केवल कुछ ही एफओबी सौदों के लिए समायोजनों का दावा स्वदेशी परिवहन और बंदरगाह तथा अन्य संगत व्यय के संबंध में किया गया है। उपरोक्त समायोजनों की मदों के संबंध में समायोजनों के दावे स्वीकार किए गए थे और नीचे दी गई पाटन मार्जिन सारणी में निवल निर्यात कीमत का उल्लेख किया गया है।

ख) कोरिया गणराज्य और थाईलैंड से उत्पादकों / निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

43. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कोरिया गणराज्य और थाईलैंड से किसी भी उत्पादक / निर्यातक में ने निर्धारित रूप में और निर्धारित तरीके से वर्तमान जांच में उत्तर नहीं दिया है। इसे देखते हुए प्राधिकारी ने सौदे के आधार पर सौदों के संबंध में डीजीसीआई एंड एस द्वारा सूचित किए गए आयातों की मात्रा और मूल्य के संदर्भ में सर्वोत्तम रूप से उपलब्ध तथ्यों के आधार पर कोरिया गणराज्य और थाईलैंड में सभी उत्पादकों / निर्यातकों के लिए निवल निर्यात कीमत का निर्धारण किया है और उसका उल्लेख नीचे दी गई पाटन मार्जिन सारणी में दिया गया है।

झ. चीन जन. गण., कोरिया गणराज्य तथा थाईलैंड में उत्पादकों / निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण

44. सामान्य मूल्य और निवल निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए आधार भी आगे प्रदान किए गए हैं। भारत के लिए निवल निर्यात कीमत की तुलना पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए सामान्य मूल्य से की गई है। संबद्ध देशों से सभी निर्यातकों / उत्पादकों के लिए जांच की अवधि के दौरान पाटन मार्जिन का निर्धारण नीचे पाटन मार्जिन सारणी में दिए गए अनुसार की गई है :

पाटन मार्जिन सारणी

क्र. सं.	उत्पादक	निर्यातक	सीएनवी यूएस डॉलर /केजी	एनईपी यूएस डॉलर /केजी	डीएम यूएस डॉलर /केजी	डीएम %	डीएम (रेंज)
चीन जन. गण. से चुनिंदा उत्पादकों / निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन							
1	साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि०/सानमेंजिया (एसएमएक्स) डाईकास्टल व्हील मैनुफैक्चरर कंपनी लि०/किनहुआंगदाओ दैकाजिंगलांग व्हील कंपनी, लि०/किनहुआंगदाओ जिंगलांग व्हील कंपनी लि०/बिनजोऊ मूवएवर डाईकास्टल व्हील कंपनी लि०,	साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि०,	***	***	***	***	10-20
चीन जन. गण. से गैर- चुनिंदा उत्पादकों / निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन							
2	झेजियांग जिनफी कैडा व्हील कंपनी, लि०,		***	***	***	***	10-20
3	शानडांग शांग वांग एल्यूमिनियम इंडस्ट्री कंपनी लि०,		***	***	***	***	10-20
4	झेजियांग शुआंग इंडस्ट्रियल कंपनी, लि०,		***	***	***	***	10-20
चीन पीआर से गैर-उत्पादक उत्पादकों / निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन							
5	कोई	कोई	***	***	***	***	35-45
कोरिया गणराज्य से सभी उत्पादकों / निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन							
6	कोई	कोई	***	***	***	***	0 - 10
थाईलैंड से सभी उत्पादकों / निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन							
7	कोई	कोई	***	***	***	***	5 - 15

45. यह देखा गया है कि सहयोगी प्रतिवादी उत्पादकों / निर्यातकों सहित सभी संबद्ध देशों के लिए पाटन मार्जिन सकारात्मक है। प्राधिकारी ने चीन से अन्य सहकारी प्रतिक्रियाशील उत्पादक निर्यातकों को समान मार्जिन का विस्तार करने का निर्णय लिया है, जिन्हें सत्यापन के लिए नमूना नहीं लिया गया था।

ट. क्षति का निर्धारण और कारणात्मक संबंध

46. अनुबंध-II के साथ पाटित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में यह प्रावधान है कि एक क्षति निर्धारण में ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी, जो घरेलू उद्योग को क्षति दर्शा सकती है, ".....पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामस्वरूप प्रभाव सहित संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए.....।" कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक समझा गया है कि यह जांच की जाए कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा एक महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव एक महत्वपूर्ण मात्रा में कीमतों में अन्यथा कटौती करने के लिए अथवा कीमत में वृद्धि को रोकने के लिए है, जो अन्यथा इस महत्वपूर्ण मात्रा में हो गई होती।
47. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित वस्तुओं के आयातों के प्रभाव, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि जैसे उद्योग की हालत पर संबंध रखने वाले संकेतकों की जांच के लिए पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-II के अनुसार विचार किया गया है।

उत्पादकों/निर्यातकों और आयातकों के विचार

48. जांच के दौरान घरेलू उद्योग के क्षति संबंधी दावों के संबंध में निर्यातकों / आयातकों / अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध तथा प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए अनुरोध इस प्रकार हैं :
- रिकार्ड पर उपलब्ध तथ्यों से यह पता चलता है कि याचिकाकर्ता ने संबद्ध उत्पाद के बढ़ते आयात का विस्तार से वर्णन करके दिखाया है और जानबूझकर घरेलू उद्योग को क्षति बताया है। संबद्ध देशों से आयातों से जांच की अवधि के दौरान किसी भी समय याचिकाकर्ता की बिक्रियों पर किसी भी प्रकार का मात्रा संबंधी भार नहीं डाला है। यह देखा जाएगा कि जांच की अवधि के दौरान मांग, आधार वर्ष 2014-15 के दौरान के 100 से बढ़कर 213 हो गई है। तथापि, संबद्ध देशों से आयातों में मांग के अनुसार वृद्धि नहीं हुई है, लेकिन यह जांच की अवधि के दौरान आधार वर्ष 2014-15 के दौरान के 100 से बढ़कर 133 हो गई है।
 - अन्य देशों से आयातों में जांच की अवधि के दौरान आधार वर्ष 2014-15 के 100 से बढ़कर 377 हो गई है।
 - घरेलू उद्योग की बिक्री में भी मांग जांच की अवधि में आधार वर्ष 2014-15 के दौरान 100 से बढ़कर 225 हो गई है। भारत में अन्य उत्पादकों की बिक्रियां भी जांच की अवधि के दौरान वर्ष 2014-15 के दौरान की 100 से बढ़कर 307 हो गई है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारत में संबद्ध वस्तुओं के आयातों से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।
 - चीन जन. गण. से आयातों की हिस्सेदारी आधार वर्ष 2014-15 की तुलना में जांच की अवधि के दौरान 78.74 प्रतिशत से गिरकर 48.35 प्रतिशत आ गई है। संबद्ध देशों से कुल आयातों का हिस्सा भी आधार वर्ष 2014-15 के दौरान 82.06 प्रतिशत से गिरकर जांच की अवधि के दौरान 61.65 प्रतिशत हो गया है। अन्य देशों से कुल आयातों का हिस्सा जांच की अवधि के दौरान दोगुणा बढ़कर 17.74 से 38.35 प्रतिशत हो गया है।
 - घरेलू उद्योग की बिक्री की लागत और बिक्री की कीमत के बीच कोई सह संबंध नहीं है। बिक्रियों की लागत जांच की अवधि के दौरान आधार वर्ष 2014-15 के दौरान के 100 से बढ़कर 106 हो गई है। जबकि बिक्री की कीमत में बिक्रियों की लागत में वृद्धि के अनुसार वृद्धि नहीं हुई है। यह जांच की अवधि के दौरान आधार वर्ष 2014-15 के दौरान के 100 के समान 100 ही रही है।
 - याचिकाकर्ता हर वर्ष क्षमता बढ़ा रहे हैं। उत्पादन और क्षमता उपयोग में भी जांच की अवधि के दौरान आधार वर्ष 2014-15 के दौरान के 100 की तुलना में काफी वृद्धि होकर क्रमशः 207 और 159 हो गई है। क्षमता उपयोग अधिकतम था।
 - याचिकाकर्ताओं की बिक्री मात्रा आधार वर्ष 2014-15 के दौरान के 100 की तुलना में बढ़कर जांच की अवधि के दौरान 228 हो गई है। निर्यात बिक्रियों में भी जांच की अवधि के दौरान काफी वृद्धि हुई है। इस प्रकार से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

- viii. याचिका में याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रदान की गई सूचना के अनुसार, घरेलू उद्योग की बिक्रियों में जांच की अवधि के दौरान वर्ष 2014-15 के 100 की तुलना में काफी बढ़कर 225 हो गई है। इसके अलावा, जबकि संबद्ध देशों से आयातों से जांच की अवधि के दौरान कोई महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं दर्शाई गई है, लेकिन यह देखा गया है कि अन्य देशों से आयातों में जांच की अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि 2014-15 में 3472 मी. टन से बढ़कर 13118 हो गई है। इसके अलावा, अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्रियों में भी पर्याप्त वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है, जो वर्ष 2014-15 में 100 की तुलना में जांच की अवधि के दौरान 307 हुई है।
- ix. ऐसा प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ताओं को संबद्ध देशों से कथित पाटन के कारण कोई भी वृद्धि नहीं हुई है। इसके विपरीत याचिकाकर्ताओं के साथ-साथ विचाराधीन उत्पाद के अन्य घरेलू उत्पादकों की स्थिति में भी सुधार आया है, जैसा कि घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद की बिक्रियों में वृद्धि से स्पष्ट है।
- x. याचिकाकर्ताओं को हुई कथित हानि, यदि कोई हो, विचाराधीन उत्पाद के कथित पाटन के कारण हुई प्रतीत नहीं होती लेकिन याचिकाकर्ताओं को हुई स्व-प्रवर्तित क्षति के कारण से है। याचिकाकर्ताओं ने जांच की अवधि के दौरान संस्थागत क्षमता में पर्याप्त वृद्धि के लिए निवेश किए हैं। याचिकाकर्ताओं द्वारा वर्तमान में हुई हानियां पाटन के कारण से नहीं हैं लेकिन संस्थापित क्षमता में वृद्धि के लिए याचिकाकर्ताओं द्वारा किए गए भारी निवेशों के कारण से है।
- xi. उनकी स्वयं की सूचना के अनुसार, विचाराधीन उत्पाद की प्रति यूनिट बिक्री वसूली में जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ताओं के लिए वृद्धि हुई है। याचिकाकर्ताओं के कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई है और इसी प्रकार से उत्पादकता में प्रति दिन वृद्धि हुई है।
- xii. याचिकाकर्ताओं को हो रही कथित क्षति और कथित पाटन के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है और कंपनी भारत में विचाराधीन उत्पाद का पाटन नहीं कर रही है। कारणात्मक संबंध के अभाव में, प्राधिकारी को वर्तमान जांच समाप्त करनी चाहिए।
- xiii. घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति नहीं हो रही है और पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है। भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग में वृद्धि घरेलू उत्पादकों द्वारा सफलतापूर्ण की जा रही है, जो संबद्ध देशों से आयातों के मात्रात्मक प्रभावों की कमी को दर्शाता है।
- xiv. घरेलू उद्योग ने दो लाभप्रदता पैरामीटरों के संबंध में केवल एक नकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाई है। तथापि, इसका कारण पाटन नहीं हो सकता और यह परस्पर प्रतिस्पर्धा के कारण से है।
- xv. घरेलू उद्योग की संस्थापित क्षमता में 30 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग के उत्पादन में 107 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है।
- xvi. क्षमता उपयोग में भी अतिरिक्त क्षमता के बावजूद 59 प्रतिशत तक की महत्वपूर्ण हुई है और यह 92 प्रतिशत पर स्थिर है।
- xvii. घरेलू उद्योग में क्षमता, उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग, रोजगार और उत्पादकता के संबंध में वर्ष दर वर्ष विकास में सुधार प्रदर्शित किया गया है।
- xviii. आगे निवेशों के लिए पूंजी जुटाने की योग्यता भी प्रभावित नहीं हुई थी क्योंकि घरेलू उद्योग अपनी क्षमता बढ़ाने में समर्थ था और भारी निवेशों के साथ अधिक योजनाएं स्थापित करने की योजना है।
- xix. संबद्ध देशों से आयातों के कारण कोई भी कीमत कटौती, कीमत ह्रास तथा कीमत में मंदी नहीं थी। कथित कीमत ह्रास / मंदी, यदि कोई हो, घरेलू उत्पादकों के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा के कारण से थी, क्योंकि घरेलू उद्योग अपने उत्पादों की संबद्ध देशों से आयातों की कीमतों से काफी कम कीमत पर बिक्री कर रहा था और क्षति विश्लेषण अवधि के दौरान आयातों की प्रवृत्ति के कारण अपनी कीमत नहीं बढ़ाई है।

घरेलू उद्योग के विचार

49. घरेलू उद्योग द्वारा क्षति संबंधी मामलों के संबंध में किए गए अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए अनुरोध निम्नलिखित हैं:-

- i. आयात संबंधी डाटा यह दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों में जांच की अवधि के दौरान महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है और सभी संबद्ध देशों के मामलों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। यह पाटित कीमतों पर महत्वपूर्ण सामग्री के लिए निरंतर अधिमानता को दर्शाता है। जिससे वर्तमान पाटनरोधी शुल्क जारी रहते हैं और घरेलू उद्योग पर ऐसे

- पाटन के प्रभावों को कम करने के लिए पाटन और उसके परिणामस्वरूप क्षति पर प्रति कार्रवाई आवश्यक होती है।
- ii. संबद्ध देशों से आयात की मात्रा में वृद्धि कीमत में कटौती के साथ हो रही है, जो आयातों में कम पाटित कीमत को दर्शाता है, जिससे उनके लिए अधिमानता सुनिश्चित होती है और निर्यातक कीमत में कटौती करके मात्रा को बनाए रख सकता है।
 - iii. यद्यपि आयातों में भारतीय मांग और उत्पादन के संबंध में गिरावट आई है लेकिन भारतीय मांग में पाटित आयातों के द्वारा हिस्सा अभी भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। कतिपय अन्य देशों से आयातों में भी वृद्धि हुई है और हाल ही में इसके खिलाफ एक याचिका दाखिल की गई थी, जो पर्याप्त आधारों के अभाव में अस्वीकार कर दी गई थी। घरेलू उद्योग पुनः प्राधिकारी को अनुरोध करेगा, जब ऐसी याचिका के लिए पर्याप्त आधार होगा।
 - iv. घरेलू उद्योग की स्थिति जांच की अवधि में मात्रा संबंधी मापदंडों जैसे क्षमता, उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग की दृष्टि से सकारात्मक रही है। तथापि, घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ प्रति यूनिट, लाभप्रदता, आरओसीई इत्यादि जैसे कीमत मापदंडों के संदर्भ में काफी गिरावट दर्शाई गई है।
 - v. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और आरओसीई न्यूनतम पर भी और क्षति अवधि में पूर्व वर्षों की तुलना में जांच की अवधि के दौरान के नगण्य स्तरों पर भी, घरेलू उद्योग, दोनों में पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद तत्काल सुधार हुआ है, तीव्रता से गिरावट शुरू हो गई क्योंकि निर्यातकों ने कीमतों में निरंतर हो रही कटौती के साथ पाटित दरों पर भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात करना जारी रखा। इस प्रकार से पाटनरोधी शुल्क रखने के लाभ संबद्ध देशों से पाटित आयातों के जारी रहने से प्रभावित हुए हैं।
 - vi. सकारात्मक पाटन मार्जिन, कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री, कोरिया गणराज्य के मामले में नकारात्मक कटौती को छोड़कर, जांच की अवधि में सकारात्मक रही है। कोरिया गणराज्य से नकारात्मक कीमत कटौती नकारात्मक है क्योंकि कोरियाई निर्यातक निरंतर कीमतों में कटौती कर रहे हैं जिसके कारण यात्रा में वृद्धि हुई है।
 - vii. सकारात्मक कीमत कटौती का प्रभाव लागू पाटनरोधी शुल्क के द्वारा कुछ हद तक कम हुआ था। ऐसे समय में, जब पाटनरोधी शुल्क लागू हो, कीमत कटौती सकारात्मक हो, तो वर्तमान पाटनरोधी शुल्क की किसी भी समाप्ति के स्पष्ट परिणाम यह होंगे कि कटौती का स्तर बहुत ही भारी होगा, यदि शुल्कों को समाप्त करने दिया गया।
 - viii. इतने बड़े स्तर पर पाटित आयातों की मौजूदगी यह दर्शाती है कि अधिक मात्रा में पाटित दरों पर ऐसे आयातों की अधिक संभावना है और पाटित आयातों के अनुचित कीमत प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप शीघ्र ही कंपनियां नुकसान की ओर जा रही हैं।
 - ix. घरेलू उद्योग का निष्पादन याचिका के अनुसार यह दर्शाता है कि यह अभी पाटित आयातों के प्रति संवेदनशील है और जिससे घरेलू उद्योग को अपना निष्पादन कम से कम मात्रा मापदंडों के संदर्भ में बनाए रखने के लिए जो मदद कर रहा है, वह लागू पाटनरोधी शुल्क है और इसके समाप्त होने से घरेलू उद्योग को पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।
 - x. संबद्ध देशों से पाटित आयात, जिनमें वर्षों के दौरान महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है, वह भी महत्वपूर्ण सकारात्मक कीमत कटौती स्तर पर थी। इससे घरेलू उद्योग को ऐसी कीमत के लिए मजबूर किया गया जो पर्याप्त लाभकार नहीं हैं, यद्यपि उसे मात्रात्मक सुधार की प्राप्ति हुई।
 - xi. घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि कम प्राप्ति के साथ यह दर्शाती है कि प्रयोक्ताओं ने घरेलू सामग्री को तरजीह दी है, लेकिन पाटित आयातों की मौजूदगी घरेलू उद्योग के लिए लाभकारी कीमत प्राप्ति एक चुनौती है। सकारात्मक कीमत कटौती ने कीमत वृद्धि को रोका है जो निरंतर पाटन के अभाव में संभव हो सकी और लाभप्रदता के कारण तथा घरेलू उद्योग की आरओसीई के कारण जांच की अवधि में काफी गिरावट आई है।
 - xii. याचिका में प्रस्तुत गैर-संबद्ध विश्लेषण यह दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों से निरंतर पाटन और घरेलू उद्योग को इसके कारण से हुई हानि के बीच स्पष्ट रूप से कारणात्मक संबंध है। यह विश्लेषण यहां पुनः नहीं दिखाया गया है

- लेकिन उस पर भरोसा किया गया है। संबद्ध देशों से आयात जांच की अवधि के दौरान पाटित कीमतों पर थे। ऐसे आयातों में समय के साथ-साथ काफी वृद्धि दर्शाई गई है।
- xiii. कीमत कटौती के स्तरों पर पाटित आयातों की कमी के कारण घरेलू उद्योग कीमतों में वृद्धि कर पाया जिससे कि तर्कसंगत कीमत और लाभ / प्रतिफल की प्राप्ति हो। इसके विपरीत पाटन से बेहतर निष्पादन में रूकावट आई। तथापि, लागू पाटनरोधी शुल्क से संबद्ध देशों से निरंतर पाटन के प्रभावों में कमी आई है और इससे आगे ऐसे पाटन रोधी शुल्क के जारी रखने की जरूरत स्थापित होती है तथा कारणात्मक संबंध इस तथ्य में स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है कि पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को पाटन के गंभीर प्रभावों से संरक्षण प्रदान कर रहा था, जिससे वर्तमान पाटनरोधी शुल्क जारी रहना, वर्तमान मामले में बहुत ही आवश्यक है।
- xiv. 8 उत्पादकों में से 5 उत्पादक वर्तमान जांच का भाग हैं, जो या तो याचिकाकर्ताओं के रूप में हैं या समर्थकों के रूप में हैं। उन तीन में से, जिन्होंने समर्थन नहीं किया या जांच का विरोध किया, केवल एन्केई ही एक बड़े पैमाने पर उत्पादक है, लेकिन यह कंपनी चीन जन. गण. और थाईलैंड से निर्यातकों से संबद्ध है। वर्तमान मामले में 5 उत्पादकों के भागीदार होने के कारण यह प्रमाणित होता है कि महत्वपूर्ण कारण, जो सभी उत्पादकों को प्रभावित कर रहा है, वह है पाटित आयात और परस्पर प्रतिस्पर्धा होने के तर्क में कोई दम नहीं है। उत्पादकों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा मौजूद होना ही ग्राहकों के लिए मूल्य वर्धन है।
- xv. प्रतिवादी पक्षकारों को क्षति होने का तर्क सत्य नहीं है और यह केवल स्वयं के लिए ही है जिसे अस्वीकार किया जाता है। घरेलू उद्योग का समग्र निष्पादन, जिसमें पाटनरोधी शुल्क लगाने के तत्काल बाद मात्रा और कीमत संबंधी मापदंडों दोनों की दृष्टि से सुधार आया है, उसमें तेजी से गिरावट आनी शुरू हो गई क्योंकि निर्यातकों ने भारत को कीमतों में निरंतर कटौती के साथ और कीमत कटौती के स्तरों पर पाटित दरों पर संबंध वस्तुओं का निर्यात जारी रखा। इस प्रकार पाटनरोधी शुल्क के लाभ संबद्ध देशों से निरंतर पाटित आयातों के कारण से कुछ हद तक प्रभावित हुए हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

50. प्राधिकारी द्वारा नीचे दिए गए क्षति विश्लेषण में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोध शामिल किए गए हैं।
51. इस संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों पर विचार करते हुए प्राधिकारी संबद्ध देशों से आयातों के कारण से पाटन और क्षति की संभावना के पहलुओं की जांच करने के लिए कार्यवाही शुरू करने से पूर्व घरेलू उद्योग को हुई वर्तमान क्षति, यदि कोई हो, की जांच शुरू करते हैं। इस प्रयोजन के लिए, प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार ऐसे संकेतकों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति और पाटन के मार्जिन की मात्रा इत्यादि, पर विचार किया है, जिनका उद्योग की स्थिति से कोई संबंध है।

ठ. संचित आकलन

52. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II पैरा (iii) तथा डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 3.3 के तहत यह प्रावधान है कि ऐसे मामले में, जहां किसी उत्पाद का एक से अधिक देशों से आयात किया जा रहा है, जो पाटनरोधी जांच के अध्याधीन है, प्राधिकारी यदि निर्धारित करते हैं तो ऐसे आयातों के प्रभाव का संचित आकलन करेंगे कि :
- (क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन का मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में 2 प्रतिशत से अधिक अभिव्यक्त हो और प्रत्येक देश से आयात की मात्रा समान वस्तु के आयात के 3 प्रतिशत (या उससे अधिक) हो अथवा जहां अलग-अलग देशों से निर्यात 3 प्रतिशत से कम हो, सामूहिक रूप से आयात समान वस्तु के आयात के 7 प्रतिशत से अधिक बनता हो तथा

(ख) आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के आलोक में उपयुक्त है।

53. उपरोक्त को देखते हुए प्राधिकारी घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों से क्षति का संचित रूप से आकलन करना उचित समझा है।

ड. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव**i. मांग का आकलन :**

54. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजन से भारत में संबद्ध उत्पाद की मांग, अथवा स्पष्ट खपत को घरेलू बिक्रियों और आवेदक की कैप्टिव खपत तथा सभी स्रोतों से आयातों के रूप में स्पष्ट किया है। इस प्रकार से मांग का विवरण नीचे सारणी में दिया गया है :

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
चीन जन. गण. से आयात	मी. टन	15,236	16,185	14,481	16,501
कोरिया गणराज्य से आयात	मी. टन	218	305	697	854
थाईलैंड से आयात	मी. टन	424	1,105	2,367	3,686
संबद्ध देशों से कुल आयात	मी. टन	15,878	17,595	17,545	21,042
अन्य देशों से कुल आयात	मी. टन	3,472	4,500	8,036	13,087
याचिकाकर्ताओं की घरेलू बिक्रियां	सूचीबद्ध	100	127	180	229
अन्य उत्पादकों की घरेलू बिक्रियां	सूचीबद्ध	100	116	159	307
कुल मांग	मी. टन	31,608	36,912	46,220	67,534
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	117	146	214

55. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से मांग में जांच की अवधि सहित क्षति की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। वास्तव में यह मांग आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान दोगुणा से भी अधिक हो गई है।

ii. संबद्ध देश से आयातों की मात्रा और हिस्सा :

56. डीजीसीआई एंड एस से सौदा- वार आयात के आंकड़े प्राप्त किए गए हैं और इस प्रकार से विश्लेषण किया गया है :

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
चीन जन. गण.	मी. टन	15,236	16,185	14,481	16,501
कोरिया गणराज्य	मी. टन	218	305	697	854
थाईलैंड	मी. टन	424	1,105	2,367	3,686
संबद्ध देशों से कुल आयात	मी. टन	15,878	17,595	17,545	21,042
अन्य देशों से कुल आयात	मी. टन	3,472	4,500	8,036	13,087
कुल मांग	मी. टन	31,608	36,912	46,220	67,534
घरेलू उद्योग का उत्पादन	सूचीबद्ध	100	116	153	187
आयात की मात्रा में बाजार का हिस्सा					
चीन जन. गण.	%	78.74	73.25	56.61	48.35
कोरिया गणराज्य	%	1.12	1.38	2.72	2.50
थाईलैंड	%	2.19	5.00	9.25	10.80
संबद्ध देशों का हिस्सा	%	82.06	79.63	68.59	61.65
अन्य देशों का हिस्सा	%	17.94	20.37	31.41	38.35
कुल	%	100	100	100	100
निम्नलिखित के संबंध में संबद्ध देशों से आयात					
भारतीय खपत	%	50.23	47.67	37.96	31.16
घरेलू उद्योग का उत्पादन	सूचीबद्ध	100	95	72	71

57. पूर्ववर्ती आंकड़ों के आधार पर यह नोट किया जाता है कि :

क. संबद्ध देशों से आयातों में क्षति की अवधि और जांच की अवधि के दौरान निरपेक्ष रूप में वृद्धि हुई है।

ख. संबद्ध देशों से भारतीय उत्पादन और खपत के संबंध में संबद्ध देशों से आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है।

ड. **घरेलू उद्योग पर आयातों के कीमत संबंधी प्रभाव**

58. घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत का दमन, यदि कोई हो, के संदर्भ में जांच की गई है।

।. **कीमत कटौती**

59. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, याचिकाकर्ता ने डीजीसीआई एंड एस डाटा के आधार पर आयातों के पहुंच मूल्य के संबंध में सूचना प्रदान की है तथा उसे घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के साथ उसकी तुलना की गई है (कारखाना बाह्य स्तर पर)। घरेलू कीमत और कीमत कटौती का मार्जिन नीचे सारणी में दिखाया गया है:-

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
पहुंच मूल्य					
चीन जन. गण.	रू./ कि.ग्रा.	292.27	326.65	318.65	311.28
कोरिया गणराज्य	रू./ कि.ग्रा.	281.53	328.91	311.02	332.07
थाईलैंड	रू./ कि.ग्रा.	294.17	319.79	345.89	289.15
संबद्ध देश	रू./ कि.ग्रा.	292.18	326.26	322.03	308.25
घरेलू बिक्री कीमत	रू./ कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	95	99
कीमत कटौती- रू. प्रति कि.ग्रा.					
चीन जन. गण.	रू./ कि.ग्रा.	***	***	***	***
कोरिया गणराज्य	रू./ कि.ग्रा.	***	***	***	***
थाईलैंड	रू./ कि.ग्रा.	***	***	***	***
संबद्ध देश	रू./ कि.ग्रा.	***	***	***	***
कीमत कटौती %					
चीन जन. गण.	एलवी का %	***	***	***	***
कोरिया गणराज्य	एलवी का %	***	***	***	***
थाईलैंड	एलवी का %	***	***	***	***
संबद्ध देश	एलवी का %	***	***	***	***
कीमत कटौती रेंज					
चीन जन. गण.	रेंज	5-15	नकरात्मक	नकरात्मक	1-10
कोरिया गणराज्य	रेंज	10-15	नकरात्मक	नकरात्मक	नकरात्मक
थाईलैंड	रेंज	5-15	नकरात्मक	नकरात्मक	5-15
संबद्ध देश	रेंज	5-15	नकरात्मक	नकरात्मक	1-10

60. यह नोट किया जाता है कि कीमत कटौती जांच की अवधि के दौरान चीन जन. गण. और थाईलैंड से आयातों के मामले में सकारात्मक है और कोरिया गणराज्य के मामले में नकारात्मक है। तथापि, संबद्ध देशों से कीमत कटौती जो संचित मानी गई है, वह सकारात्मक है।

ii. कम कीमत पर बिक्री:

61. घरेलू उद्योग ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के संबंध में कम कीमत पर हो रही बिक्रियों के संबंध में सूचना प्रदान की है। इस प्रयोजन के लिए, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए एनआईपी का निर्धारण किया है और उसकी तुलना जांच की अवधि के दौरान आयातों की पहुंच कीमत के साथ की है (पहुंच कीमत डीजीसीआई एंड एस डाटा के अनुसार)।

विवरण	इकाई	चीन जन. गण.	कोरिया जन. गण.	थाईलैंड
जांच अवधि के लिए पहुंच कीमत	रू./कि.ग्रा.	311.28	332.07	289.15
गैर- क्षति कीमत	रू./कि.ग्रा.	***	***	***
क्षति मार्जिन	रू./कि.ग्रा.	***	***	***
	%	***	***	***
	रेंज	10-20	5-15	20-30

62. यह देखा गया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित किए गए एनआईपी से कम थी तथा पाटित आयात होने के कारण घरेलू उद्योग की कीमत पर कम कीमत की बिक्री का प्रभाव है।

iii. कीमत ह्रास / कीमत का दमन

63. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयातों का प्रभाव महत्वपूर्ण मात्रा में कीमतों के ह्रास/ दमन अथवा कीमतों में वृद्धि को रोकने के लिए है, जो अन्यथा हो गई होती, घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि के दौरान लागतों और कीमतों में परिवर्तनों के लिए सूचना प्रदान की है, जो इस प्रकार है:-

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
बिक्रियों की लागत	रू./कि.ग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	98	96	102
घरेलू बिक्री कीमत	रू./कि.ग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	97	95	99
पहुंच मूल्य-संबद्ध देश	रू./कि.ग्रा.	292.18	326.26	322.03	308.25
	सूचीबद्ध	100	112	110	106

64. यह नोट किया जाता है कि जांच की अवधि के दौरान, आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्रियों की लागत में वृद्धि हुई है। तथापि, इसी अवधि के दौरान बिक्री कीमत में मामूली वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच कीमत जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्रियों की लागत तथा बिक्री कीमत से कम थी, जिनमें संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच कीमत के कारण कीमत के ह्रास / दमन संबंधी प्रभावों का उल्लेख किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा यह दावा किया गया है कि वे बाजार में पाटित आयातों के कारण अपेक्षित स्तर तक कीमतों में वृद्धि नहीं कर पाए।

ण. घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

65. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षा की गई है कि क्षति का निर्धारण करने में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की एक उद्देश्यपरक जांच शामिल होनी चाहिए। इसके अलावा नियमों में यह प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक कारकों तथा ऐसे संकेतकों का एक उद्देश्यपरक और निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होना चाहिए, जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति से संबंध हो, जिनमें बिक्रियों, लाभों, आउटपुट, बाजार अंश, उत्पादकता, निवेशों पर प्रतिफल अथवा क्षमता का उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह का वास्तविक और क्षमता संबंधी नकारात्मक प्रभाव, इन्वेंट्री, रोजगार, मजदूरी, विकास, पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता शामिल है। घरेलू उद्योग के निष्पादन की एक जांच से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का सामना करना पड़ा है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंड नीचे दिए गए हैं:-

i. उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्रियां

66. उत्पादन, घरेलू बिक्रियों क्षमता, क्षमता के उपयोग तथा बिक्रियों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन इस प्रकार है:-

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
संस्थागत क्षमता	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	114	130
उत्पादन	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	116	153	187
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	113	135	144
घरेलू बिक्रियां	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	127	180	229

67. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की संस्थापित क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा बिक्रियों में क्षति अवधि तथा जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

ii. लाभप्रदता

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (पीओआई)
बिक्री की लागत	रू./किग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	98	96	102
घरेलू बिक्री प्राप्ति	रू./किग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	97	95	99

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (पीओआई)
लाभ / (हानि) पीवीटी	रू./किग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	92	37	-97
लाभ / (हानि) पीवीटी	Rs./Kg	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	72	21	(42)
लाभ / (हानि) पीवीटी	रू./किग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	102	67	83
लाभ / (हानि) पीवीटी	रू./किग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	80	37	36

68. यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में वृद्धि हुई है। ब्याज तथा कर से पूर्व घरेलू बिक्रियों के संबंध में लाभ में गिरावट आई है तथा जांच की अवधि के दौरान न्यूनतम स्तर पर है।

iii. **शामिल पूंजी पर प्रतिफल**

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
आरओसीई	%	***	***	***	***
	रेंज	100	100	51	56

69. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की शामिल पूंजी पर प्रतिफल (आरओसीई) में जांच की अवधि तथा क्षति की अवधि में गिरावट आई है।

iv. **मांग में बाजार का हिस्सा :**

70. घरेलू उद्योग के बाजार अंश पर पाटित आयातों के प्रभाव की इस प्रकार से जांच की गई है:-

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	123	107

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
अन्य भारतीय उत्पादक	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	प्रवृत्ति	100	100	109	144
संबद्ध देशों से आयात	%	50.23	47.67	37.96	31.16
प्रवृत्ति	प्रवृत्ति	100	48	38	31
अन्य देशों से आयात	%	10.98	12.19	17.39	19.38
प्रवृत्ति	प्रवृत्ति	100	111	158	176

71. उपरोक्त सारणी से यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयातों के बाजार अंश में विगत वर्षों से और जांच की अवधि में गिरावट आई है। साथ ही घरेलू उद्योग के बाजार अंश तथा साथ ही अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार अंश में वृद्धि हुई है।

v. माल सूची (इन्वेंट्री)

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
माल सूची (इन्वेंट्री)	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	121	157
उत्पादन के दिनों की संख्या के रूप में माल सूची	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	93	79	84
विक्रियों के दिनों की संख्या के रूप में माल सूची	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	89	77	78

72. यह नोट किया जाता है कि जांच की अवधि में घरेलू उद्योग के पास माल सूची (इन्वेंट्री) में वृद्धि हुई है। तथापि, इसमें उत्पादन और विक्रियों के दिनों की संख्या के रूप में इन्वेंट्री के संदर्भ में गिरावट आई है। तथापि, संबद्ध वस्तुओं की प्रकृति के संबंध में इन्वेंट्री का स्तर किसी विशिष्ट क्षति का संकेत नहीं है।

vi. घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर और उत्पादकता का स्तर

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
कर्मचारियों की संख्या	सं.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	सूची	100	105	113	127
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी. टन/ कर्मचारी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	सूची	100	116	153	187

73. यह उल्लेख किया जाता है कि घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर में क्षति अवधि में और जांच की अवधि के दौरान वृद्धि दर्शाई गई है। इसके अलावा, प्रति कर्मचारी उत्पादकता में भी विगत वर्षों की तुलना में वृद्धि दर्ज की गई है। यह सकारात्मक सुधार का संकेत है।

vii. पूंजीगत निवेशों की क्षमता

74. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि देश में उत्पाद की मांग में हो रही वृद्धि को देखते हुए घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में वृद्धि की है। तथापि, याचिकाकर्ताओं ने यह अनुरोध किया है कि पूर्व में किए गए निवेशों पर अर्जित आरओसीई में विगत वर्षों की तुलना में गिरावट आई है और जांच की अवधि में तो बहुत ही कम रहा है तथा आगे का निवेश पहले किए गए निवेशों की स्थायित्वता पर निर्भर करेगा।

viii. पाटन और पाटन मार्जिन का स्तर

75. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयात पाटित कीमतों पर देश में आना जारी रहा और पाटन का मार्जिन सभी स्रोतों से काफी रहा है।

ix. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

76. संबद्ध देशों से आयात कीमतों, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा अन्य कारक, जिनमें घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव पड़ता हो, इत्यादि की जांच से यह दर्शाया गया है कि संबद्ध देशों से आयातित वस्तुओं का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग गैर-क्षतिकारी कीमत तथा बिक्री कीमत से कम है, जिससे भारतीय बाजार में कीमत कटौती और कीमत ह्रास / मंदी तथा कम कीमत पर बिक्री हो रही है। घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले प्राथमिक कारणों को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य के रूप में नोट किया जा सकता है।

x. विकास

77. घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई सूचना से यह देखा जा सकता है कि क्षमता, क्षमता उपयोग तथा उत्पादन जैसे मात्रात्मक मापदंडों के संबंध में विकास सकारात्मक थी। तथापि, लाभप्रदता और शामिल पूंजी पर प्रतिफल के संदर्भ में घरेलू उद्योग के निष्पादन में क्षति की अवधि और जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है।

त. क्षति मार्जिन की मात्रा

78. निर्यातक ने एक्स-वर्क्स आधार पर सभी बिक्रियां की हैं और तब इन निर्यातों का सी आई एफ मूल्य तय करने के लिए विभिन्न आधारों पर समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने यह नोट किया कि आयातक मै. फोर्ड इंडिया लिमिटेड ने उत्तर प्रस्तुत किया है जो नमूने लिए गए निर्यातक के निर्यातों का 98 प्रतिशत है और इस कारण से आयातक के उत्तर से सी आई एफ मूल्य को अंतिम रूप देने का निर्णय लिया परंतु वैसा नहीं किया जा सका क्योंकि आयातक ने सहयोग नहीं किया और बार-बार अनुस्मारक दिए जाने के बावजूद सी आई एफ मूल्य के सत्यापन के लिए प्रविष्टि का बिल प्रस्तुत नहीं

किया। उसको देखते हुए, प्राधिकारी ने डी जी प्रणाली संबंधी आंकड़े (लेन-देन-वार) प्राप्त किए और इसका विश्लेषण किया। यह पाया गया था कि डी जी प्रणाली संबंधी आंकड़े में उत्तर में नमूने लिए गए सहयोगी निर्यातक द्वारा की गई घोषणा के अनुसार आयातों की तुलनात्मक मात्रा थी। तदनुसार, विचाराधीन उत्पाद का प्रति इकाई सी आई एफ मूल्य की गणना करने के लिए, डी जी प्रणाली संबंधी आंकड़े पर नमूने लिए गए और नमूने न लिए उत्पादक निर्यातकों के लिए विश्वास किया गया है।

उत्पादक	आयातक	पहुंच मूल्य यूएस डॉलर/केजी	गैर क्षतिकारी कीमत डॉलर/केजी	आईएम डॉलर/केजी	आईएम %	आई (रेंज)
साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि०/ सानमेंजिया (एसएमएक्स) डाईकास्टल व्हील मैनुफैक्चर कंपनी लि०/ किनहुआंगदाओ दैकाजिंगलांग व्हील कंपनी, लि०/ किनहुआंगदाओ जिंगलांग व्हील कंपनी लि०/ बिनजोऊ मूवएवर डाईकास्टल व्हील कंपनी लि०,	साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि०,	5.48	***	***	***	1-10
नमूनारहित उत्पादक / निर्यातक		5.48	***	***	***	1-10

क्षति के संबंध में निष्कर्ष

79. यह देखा गया है कि संबद्ध देशों से आयातों में जांच की अवधि में आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई है। यद्यपि ऐसे आयातों के बाजार अंश में मांग और भारतीय उत्पादन के संदर्भ में गिरावट आई है। आयातों में भी जांच की अवधि के बाद वृद्धि हुई है। पाटित आयातों से संबद्ध देशों से पाटनरोधी शुल्कों के बिना बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी आ रही है। पाटित आयातों का कीमतों में मंदी और कीमत हास के संदर्भ में प्रतिकूल कीमत संबंधी प्रभाव पड़ा था। घरेलू उद्योग को कम कीमत पर बिक्री का सामना करना पड़ रहा है। निर्धारित किया गया पाटन मार्जिन महत्वपूर्ण है। घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के परिणामों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के लाभ, नकदी लाभ, लाभ निवेश पर प्रतिफल तथा जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की हानियों के संदर्भ में निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। यद्यपि मात्रा संबंधी मापदंडों में सुधार दर्ज किया गया है। समग्र निष्पादन, जोकि पूर्व में शुल्क लगाए जाने के बाद विकास पथ पर था, अब पुनः वर्तमान जांच की अवधि में गिरावट पर आ गया है। प्राधिकारी ने ऐसे तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि घरेलू उद्योग को निरंतर क्षति का सामना करना पड़ा है।

य. कारणात्मक संबंध और अन्य कारक

80. प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या पाटनरोधी नियमावली के तहत सूचीबद्ध अन्य कारकों के कारण से घरेलू उद्योग को क्षति का सामना करना पड़ा है, यद्यपि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है। घरेलू उद्योग को पाटन और वास्तविक क्षति, यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंध की जांच की गई है, जो इस प्रकार है:-

(i) तीसरे देश से आयात

81. वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है और यह समीक्षा संबद्ध देशों पर ही पाटनरोधी शुल्क लगाने के संबंध में है तथा तीसरे देश से निर्यात का मामला इस जांच में नहीं देखा गया है।

(ii) **मांग में कमी**

82. संबद्ध वस्तुओं के लिए मांग में एक बढ़ती प्रवृत्ति देखी गई है। तदनुसार, मांग में गिरावट घरेलू उद्योग को क्षति के लिए कारक नहीं हो सकता है।

(iii) **विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंध प्रथा और प्रतिस्पर्धा**

83. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंध प्रथा नहीं है, जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो। इसके विपरीत चीन जन. गण. से यूरोपीय संघ, आस्ट्रेलिया आदि को विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों के लिए कोई उपचारी उपाय नहीं किए गए हैं और यूएसए में हाल ही में अतिरिक्त सीमा शुल्क लगाए गए हैं।

(iv) **प्रौद्योगिकी में विकास**

84. संबद्ध उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई बदलाव नहीं किए गए हैं। इस प्रकार से प्रौद्योगिकी में विकास के घरेलू उद्योग को क्षति होने के एक कारक के रूप में नहीं माना जा सकता।

(v) **खपत की पद्धति में परिवर्तन**

85. घरेलू उद्योग ऐसी टाइप की वस्तुओं का उत्पादन कर रहा है, जो भारत में आयात की गई हैं। खपत की पद्धति में संभावित परिवर्तन होना ऐसा कारक नहीं है, जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति होने का दावा किया जा सके।

(vi) **निर्यात निष्पादन**

86. घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में गिरावट आने के कारण से नहीं है। वास्तव में घरेलू उद्योग द्वारा निर्यातों में कीमत में वृद्धि के साथ-साथ वृद्धि हुई है। इस प्रकार से घरेलू बिक्रियों की क्षति की यथा संभव पहचान करके उनकी जांच की गई है। निर्यातों के संगत व्यौरे इस प्रकार हैं:-

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (जांच की अवधि)
निर्यात	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	117	125	164
कीमत	रू./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	112	122

(vii) **अन्य उत्पादों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन**

87. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि किसी अन्य उत्पाद के निष्पादन ने, जो कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बिक्री किए गए हैं, इस जांच में प्राधिकारी द्वारा किए गए क्षति आकलन को प्रभावित नहीं किया है। प्राधिकारी द्वारा जिस सूचना पर विचार किया गया है, वह केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में है।

(viii) **घरेलू उद्योग की उत्पादकता**

88. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उत्पादकता में गिरावट घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं है। इसकी बजाय प्रति कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है।

कारणात्मक संबंध का निष्कर्ष

89. जांच से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का पाटन और घरेलू उद्योग को उसके परिणामस्वरूप क्षति जारी रही, जैसा कि इस जांच में देखा गया है। गैर- उत्तरदायी विश्लेषण घरेलू उद्योग को क्षति को दर्शाते हैं, जो कि किसी अन्य कारक के कारण से थे। संबद्ध देशों के लिए जांच की अवधि के दौरान सकारात्मक पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन स्थापित हुआ है। क्षति की संभावना का विश्लेषण भी इस स्थिति की ओर इशारा करता है कि घरेलू उद्योग को पाटन और उसके परिणामस्वरूप क्षति में तेजी आएगी यदि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है।

द. संभावना का विश्लेषण

90. प्राधिकारी को पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (VII) के प्रावधानों के तहत पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की स्थिति में पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच करनी अपेक्षित है, क्योंकि ऐसी कोई विशेष कार्यप्रणाली उपलब्ध नहीं है जो संभावना का विश्लेषण कर सके। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के खंड (VII) में अन्य कारकों के साथ-साथ ऐसे प्रावधान हैं जिस पर विचार किया जाना आवश्यक है, अर्थात :

- क) भारत में पाटित आयातों में वृद्धि की एक महत्वपूर्ण दर, जिसमें आयातों में पर्याप्त वृद्धि होने की संभावना दर्शाई गई है।
- ख) पर्याप्त रूप से आसानी से निपटान योग्य, अथवा निर्यातक की क्षमता में पर्याप्त वृद्धि, जिसमें भारतीय बाजारों में पाटित निर्यातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना दर्शाई गई है और जिससे किसी अतिरिक्त निर्यात को समाहित करने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखा गया है।
- ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं, जिनसे घरेलू कीमतों पर एक महत्वपूर्ण कीमत मंदी अथवा कीमत ह्रास का प्रभाव पड़ रहा है और जिससे आगे के आयातों के लिए मांग में वृद्धि की संभावना है; और
- घ) जांची जा रही वस्तु की वस्तु सूची।

91. इसके अलावा, प्राधिकारी को ऐस किसी अन्य संगत कारक की भी जांच करना अपेक्षित है, जिसका घरेलू उद्योग पर पाटन और उसके परिणामस्वरूप क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना का संबंध है। प्राधिकारी के समक्ष लाए गए सभी कारकों की जांच यह निर्धारित करने के लिए की गई है कि क्या शुल्क समाप्त होने की अवस्था में पाटन अथवा क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदान की गई विभिन्न सूचनाओं पर विचार किया है ताकि वर्तमान मामले में पाटन अथवा क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना का मूल्यांकन किया जा सके।

92. पाटन और क्षति की संभावना के मापदंडों पर किए गए अनुरोध इस प्रकार हैं:-

उत्पादकों/निर्यातकों और आयातकों के विचार

93. पाटन और क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के संबंध में प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध नीचे सारबद्ध करके दिए गए हैं:-

- i. उत्पादक/निर्यातक भारत में कीमत से अधिक कीमत पर तीसरे देशों को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात कर रहे हैं। इस प्रकार से भारत को निर्यातों के शिफ्ट होने की संभावना है। वास्तव में निर्यातक अपने निर्यातों को भारत से तीसरे देशों को भेज सकते हैं, क्योंकि उन्हें उन पर अधिक कीमत मिल रही है।
- ii. यह प्रस्ताव किया गया था कि घरेलू उद्योग ने यह याचिका दायर की है न कि संबद्ध देशों से निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा। यह घरेलू उद्योग की जिम्मेदारी है कि वह यह प्रमाणित करे कि पाटन / क्षति शुल्कों को हटा लिए जाने के बाद भी जारी रहेगी अथवा उसकी पुनरावृत्ति होगी।

- iii. लक्षित देशों से आयात किसी भी समय इस अवधि के दौरान याचिकाकर्ता की बिक्रियों पर किसी प्रकार का यात्रा संबंधी भार नहीं डालेंगे।
- iv. याचिकाकर्ता अपने दावे के समर्थन में कोई सकारात्मक साक्ष्य प्रदान नहीं कर सके कि घरेलू उद्योग को पाटन और क्षति की पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना है।
- v. सहयोगी निर्यातकों द्वारा दाखिल किए गए उत्तर यह दर्शाते हैं कि उनके पास कोई अधिशेष क्षमता उपलब्ध नहीं है।
- vi. यदि कोई साक्ष्य इस मामले में प्रस्तुत किया गया है तो वह यह निर्धारित करने के लिए भी पर्याप्त नहीं है कि कथित पाटन संभव है, जो पाटन की संभावना के कानूनी परीक्षण को अकेला पूरा कर सके। अतः हम यह अनुरोध करते हैं कि इस आधार पर ही निर्णायक समीक्षा जांच समाप्त की जाए।

घरेलू उद्योग के विचार

94. घरेलू उद्योग द्वारा पाटन और क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के संबंध में किए गए अनुरोध इस प्रकार है:-

I. वर्तमान और जारी पाटन

- i. मूल मामले में तथा वर्तमान मामले में निर्धारित पाटन मार्जिन महत्वपूर्ण, जो वर्तमान शुल्कों के समाप्त होने की अवस्था में पाटन का जारी रहना दर्शाता है।
- ii. वर्तमान पाटन और क्षति स्तर यह दर्शाता है कि वर्तमान शुल्कों के समाप्त होने की अवस्था में पाटन और क्षति की स्पष्ट संभावना है। घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण पाटन और उसके परिणामस्वरूप क्षति की गंभीर संभावना है।

II. जांच की अवधि के उपरांत आयात

- i. जांच की अवधि के उपरांत आयात डीजीसीआई एंड एस द्वारा प्रकाशित डाटा से लिए गए थे और यह इस प्रकार है:-

संबद्ध देश	जांच की अवधि (अप्रैल 17- मार्च 18)	जांच की अवधि के उपरांत (अप्रैल 18-सितंबर 18)
चीन जन. गण.	16,501 मी. टन	9,634 मी. टन
थाईलैंड	3,686 मी. टन	1,808 मी. टन
कोरिया गणराज्य	854 मी. टन	342 मी. टन

- ii. उपरोक्त सारणी से जांच की अवधि की तुलना में जांच की अवधि के बाद के 6 माह में वृद्धि का एक स्पष्ट संकेत है।

III. अधिशेष सरप्लस उत्पादन क्षमताएं

- i. चीन जन. गण. में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए विश्व में सबसे बड़ी क्षमता है। मौजूदा अधिशेष क्षमताओं के अलावा, बड़ी नई क्षमताएं सामने आ रही हैं। यद्यपि इसके लिए बाजार बही रहा जिसमें एआरडब्ल्यू के चीन के उत्पादकों द्वारा अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं पर प्रतिक्रिया करने के लिए सशक्त अवरोध है।
- ii. यूरोपीय संघ के जांच परिणामों के आधार पर, चीन जन. गण. के पास करीब 4,56,846 मी. टन की एक अतिरिक्त उत्पादन क्षमता है, जबकि भारतीय मांग 65,000 मी. टन से 67,000 मी. टन है। ऐसी स्थिति में यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि जब चीन के उत्पादकों ने पाटनरोधी शुल्कों के बाद भी भारत में

विचाराधीन उत्पाद का पाटन करना जारी रखा, शुल्कों की समाप्ति की स्थिति में पाटन बंद हो जाएंगे।
यूरोपीय संघ के जांच निष्कर्ष इस प्रकार हैं:-

कंपनी के प्रकार	संबंधित कंपनियों की सं.	उत्पादन क्षमता (इकाई)	अतिरिक्त क्षमता (इकाई)
सभी सहयोगी प्रतिवादी निर्यातक	21	91804845	12355052
चुनिंदा निर्यातक	4	62589289	
प्रतिवादी लेकिन असहयोगी निर्यातक (सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सूचना)	31	51700000	15510000
अन्य (सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सूचना)	28	46696776	14009033
कुल	84	190201621	41874085

- iii. चीन जन. गण. में अधिशेष क्षमता के संबंध में यूरोपीय संघ को जांच परिणाम निष्कर्षों के अनुसार विवरणों को, यूरोपीय संघ के जांच परिणामों में ही दिए गए व्हील के औसतन भार के अनुसार मी. टन। कि.ग्रा. के संदर्भ में इस प्रकार परिवर्तित किया जा सकता है:-

उत्पादन क्षमता (इकाई)	190201621
अधिशेष क्षमता (इकाई)	41874085
उत्पादन क्षमता (मी. टन – औसतन व्हील भार को यूरोपीय संघ के जांच परिणामों को उसमें दिए गए फुटनोट के साथ पठित पैरा 33 के अनुसार 10.91 कि.ग्रा. के रूप में विचारा किया गया है।	2075100
अधिशेष क्षमता (मी. टन)	456846
भारतीय मांग (मी. टन)	65000-67000

- iv. आंकड़ों में चीन जन. गण. में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए करीब 4.5 लाख मी. टन अधिशेष क्षमताएं मौजूद होना दर्शाया गया है। जबकि भारतीय मांग केवल 65,000 से 75,000 मी. टन के बीच है। चूंकि यूरोपीय संघ के जांच परिणामों और भारत में विचाराधीन उत्पादन तुलनात्मक स्तर पर है, यूरोपीय संघ के जांच परिणाम में अधिशेष क्षमता के संबंध में डाटा अत्यधिक साक्ष्यपरक मूल्य के हैं।
- v. सूचना (घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त किए अनुसार मूल बाजार अनुसंधान रिपोर्ट के आधार पर संकलित) यह दर्शाती है कि मौजूदा उत्पादकों के अलावा चीन जन. गण. में आई नई क्षमताएं हैं, जो कम से कम 67 की संख्या में हैं। कतिपय नई क्षमताओं के ब्यौरे, जिनमें मोटर साइकल के पहिए भी शामिल हैं, इस प्रकार है। आंकड़ों में अधिशेष क्षमता सुझायी गई है, जो निकट भविष्य में ही बढ़ेगी:-

सं.	परियोजना	उत्पादन क्षमता (10,000 पीस)	टिप्पणियां
1	लियुफेंग मशीनरी हुबेई जियांटाओं प्रोजेक्ट	200	निर्माण
2	झोंगकिंग जिंगलांग इंडस्ट्रियल पार्क प्रोजेक्ट	300	फेज- I का निर्माण कार्य शुरू
3	जियामेन सनराइज ग्रुप प्रोजेक्ट	25	फेज- I निर्माण
4	अन्यांग गाओजिंग एल्यूमिनियम प्रोजेक्ट	150	निर्माण
5	जियांग्सू बोरान कंपनी, लि० पेईजियान प्रोजेक्ट	50	निर्माण
6	जियांगजी बेन्हाओ कार्स प्रोजेक्ट	200	निर्माण
7	लिनझोऊ जीरून एल्यूमिनियम प्रोजेक्ट	500	निर्माण
8	जिन्जियांग शिहेजी प्रोजेक्ट	1000	निर्माण
9	चोंगकिंग चाओकुन इंडस्ट्रियल कंपनी, लि० प्रोजेक्ट	200	निर्माण
10	हुबेई डाये हंगलांग व्हील्स कंपनी, लि०, प्रोजेक्ट	300	निर्माण
11	हायूफेंग लैवू मैग्नीशियम एलॉय व्हील प्रोजेक्ट	100	निर्माण
12	चोंगकिंग जीली प्रोजेक्ट	1200	निर्माण
13	हेबेई मेलन प्रोजेक्ट	500	आंशिक उत्पादन
14	झेजियांग जीली इन्वेस्टमेंट कंपनी, लि० प्रोजेक्ट	500	अनुबंध हस्ताक्षरित
15	हेनान जिनरूई व्हील परियोजना प्रोजेक्ट	100	योजना
16	गुईझोऊ हायूफेंग व्हील प्रोजेक्ट	300	निर्माण
17	वांगफेंग आटो इंटेलीजेंस प्रोजेक्ट	220	घोषणा
18	गांगयुआन अनयु प्रोजेक्ट	150	निर्माण
19	ताईझोऊ वीसाइट हुऐनान प्रोजेक्ट	60	अनुबंध हस्ताक्षरित
20	झेजियांग जीली डेकोरेशन मैटेरियल्स कंपनी, लि० अन्हुई मेंगचेंग प्रोजेक्ट	500	अनुबंध हस्ताक्षरित
	कुल	6555	

- vi. साक्ष्य चीन जन. गण. में अधिशेष क्षमता की मौजूदगी दर्शाते हैं। ऐसी ही स्थिति कोरिया गणराज्य और थाईलैंड में भी है। इन देशों से आयातों में वृद्धि ऐसी कीमतों में कटौती के अनुरूप है, जो अधिशेष क्षमताओं को देखते हुए अधिक निर्यात के लिए निर्यातकों पर बाध्यकारी है।
- vii. याचिकाकर्ता यह समझते हैं कि कोरिया गणराज्य और थाईलैंड ने भी भारत जैसे बाजारों को लक्ष्य में रखकर क्षमताएं स्थापित की हैं और पाटन की संभावना इस तथ्य से इन देशों से स्पष्ट है कि शुल्कों के बाद भी पाटन जारी रहे और वास्तव में कोरिया गणराज्य और थाईलैंड से कीमतों में आधार वर्ष के दौरान मात्रा को बढ़ाकर गिराई गई।

IV. निर्यात उन्मुखी

थाईलैंड के संबंध में उपलब्ध सूचना यह दर्शाती है कि थाईलैंड में उत्पादक अधिक निर्यातोंन्मुखी हैं (उत्पादन का करीब 70 प्रतिशत निर्यात किया जाता है और उद्योग को आशा है कि घरेलू बाजार में 800000 यूनिटें और निर्यात बाजार में 1200000 यूनिटें होंगी। सूचना यह भी दर्शाती है कि थाई अलॉय मैनुफैक्चरिंग कंपनी लि० जैसे उत्पादक के पास ही करीब 1.2 मिलियन यूनिट की क्षमता है और थाईलैंड में एआरडब्ल्यू के और भी कई अन्य बड़े उत्पाद हैं, जिन्हें वर्तमान पाटनरोधी शुल्कों के समाप्त होने की स्थिति में भारत जैसे मजबूत बाजार को भेजा जा सकता है।

V. निर्यातकों के साथ मालसूची

जांच के अधीन संबद्ध वस्तुएं ऐसी हैं कि खरीददार ऐसे ओईएम हैं, जो तैयार उत्पाद अर्थात् ऑटोमोबाइल की निर्माण प्रक्रिया में उत्पादकों को शामिल करने की प्रक्रिया अपनाते हैं और तब संबद्ध वस्तुएं डिजाइन करके आवश्यकता के अनुसार और ओईएम के आदेशों के अनुसार विकसित की जाती हैं। इसे देखते हुए उत्पादकों के निर्यातकों के पास इन्वेन्ट्री का स्तर असंगत हो गया है।

VI. अन्य बाजारों में पाटनरोधी शुल्क

- i. यूरोपीय संघ और आस्ट्रेलिया द्वारा चीन जन. गण. से एआरडब्ल्यू के निर्यातों के खिलाफ पाटनरोधी शुल्क लगाए गए हैं, जिन्हें अब निष्पक्ष समीक्षा जांच (एस एस आर) के बाद आगे बढ़ाया गया है। भारत में शुल्कों को समाप्त किए जाने से चीन के उत्पादकों को लाभ होगा जिससे भारत को निर्यात में वृद्धि होगी
- ii. यूरोपीय संघ – चीन जन. गण. से ए आर डब्ल्यू के संबंध में पाटनरोधी शुल्क (कार्यान्वयन विनियमन आयोग (ईयू) 2017/109 दिनांक 23 जनवरी, 2017) में निम्नलिखित जांच परिणाम वर्तमान मामले के प्रसंग में संगत हैं, जो इस प्रकार से हैं:-

(75) पीआरसी महत्वपूर्ण मात्रा में एल्यूमिनियम व्हील का यूरोपीय संघ के अलावा तीसरे देशों विशेषकर यूएस, जापान, मैक्सिको, कनाडा और भारत को निर्यात करता है। यह भार सहयोगी समूहों पर भी लागू होता है। इन बाजारों में उनके निर्यात की मात्रा में समीक्षा जांच की अवधि के दौरान तीसरे देशों को उनकी कुल निर्यात बिक्रियों का करीब 89 प्रतिशत शामिल है।

(78) पीआरसी से कनाडा, भारत, जापान और मैक्सिको को निर्यात कीमत के मामले में (सभी मिलकर समीक्षा जांच की अवधि के दौरान चार चुनिंदा समूहों के कुल निर्यात का लगभग 40 प्रतिशत शामिल है), औसतन बिक्री कीमत ऐसे उत्पाद टाइप से कम भी, जिसमें संघ को उनकी निर्यात कीमतों की बजाय इन देशों को निर्यात की गई कुल मात्रा का करीब 22 प्रतिशत शामिल है। यदि उपायों को समाप्त कर दिया जाता तो यह यूरोपीय संघ को चीन के निर्यातों के संभावित अभिमुखीकरण की ओर इशारा करता है। भारत से अभिमुखीकरण होने की संभावना है विशेषकर जब इस देश ने मई, 2015 में अर्थात् समीक्षा जांच की अवधि के बीच में निश्चयात्मक पाटनरोधी उपायों को शुरू किया गया था।

(240) अनेक पक्षकारों ने यह दावा किया है कि क्षति की पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि केंद्रीय उद्योग को एआरडब्ल्यू की वैश्विक और संघ में खपत बढ़ने से, संघ के चीन के आयातों में वृद्धि के बावजूद लाभ होगा। इसके अलावा, यह दावा किया गया था कि खपत में अनुमानित वृद्धि से चीन के निर्यात करने वाले उत्पादकों को अपने निर्यातों को कीमत संबंधी किसी दबाव के बिना केंद्रीय बाजार में वृद्धि करने की संतुष्टि होगी।

(241) जांच में यह दर्शाया गया है कि चीन के निर्यातों की महत्वपूर्ण मात्रा इसकी आकर्षकता के साथ (75 से 88 तक) संघ को भेजे जाने की संभावना है। अतः चीन के निर्यातक उत्पादन न केवल बढ़ी गई खपत प्राप्त करने योग्य होंगे बल्कि संघ के उत्पादकों की बिक्री मात्रा के लिए भी होंगे। बढ़ी खपत के परिदृश्य के बावजूद भी इस बात की अत्यधिक संभावना है कि चीन के निर्यातक बिक्री की मात्रा और बाजार का हिस्सा प्राप्त कर लेंगे ताकि यूनियन उद्योग को रोका जा सके।

इसके अलावा, संबद्ध कीमतें यूनियन उद्योग की कीमतों से कम के स्तर पर आने की संभावना है जो 8 से 30 प्रतिशत के बीच है, जैसा कि विवरण सं. 191 में उल्लिखित है और विवरण 192 में उल्लिखित प्रभावों के साथ जिसके कारण यूनियन उद्योग के लिए वास्तविक क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है। अतः यह दावा अस्वीकार किया जाता है।

- iii. यूरोपीय संघ के अलावा आस्ट्रेलिया में भी चीन जन. गण. से एआरडब्ल्यू के आयातों के संबंध में पाटन और क्षति की संभावना पाई गई थी। संगत जांच परिणाम इस प्रकार हैं:-
- पहचाने गए निर्यातकों द्वारा पाटन जांच की अवधि के दौरान जारी रहा है।
 - बाजार में निर्यात मार्ग का रखरखाव किया गया है और एक निर्यातक के लिए निर्यात की गई मात्रा में ध्यान देने योग्य वृद्धि हुई है, चूंकि ये उपाय 5 जुलाई, 2012 को लागू किए गए थे।
 - चीन में पर्याप्त रूप से अधिशेष क्षमता है।
 - चीन के उत्पादकों ने अन्य बाजारों में पाटन किया है, जो उन्हीं आर्थिक कारकों के कारण से हैं, जो निरंतर उत्पादन मात्रा को बढ़ाते हैं, और
 - चीन में निर्यातक जो बाजार के खुदरा विक्रेताओं के बाद आपूर्ति करते हैं, वे ओईएम को आपूर्ति करने वाले स्थल बाजारों में उस सीमा तक आपूर्ति नहीं करते।
 - परिणामस्वरूप आयोग यह विचार करता है कि यदि पाटनरोधी उपाय जारी नहीं रहते तो यह सुझाव देने के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं कि एल्यूमिनियम रोड व्हील का चीन से पाटन जारी रहने की संभावना है।
 - 9.7 निष्कर्ष – उपरोक्त विश्लेषण को ध्यान में रखते हुए आयोग का विचार है कि यह निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं कि :
 - चीन से आयात की मात्रा के जारी रहने की संभावना है और पाटनरोधी उपाय न होने की स्थिति में इसमें वृद्धि होने की संभावना है,
 - जीओसी के प्रभाव के कारण, चीन के एल्यूमिनियम रोड व्हील के निर्यातकों के पास आस्ट्रेलियाई निर्माताओं पर एक प्रतिस्पर्धी लाभ होना जारी रहेगा।
 - कीमत पर प्रतिस्पर्धा एरो केस्ट के लिए एक बड़ी अपेक्षा होगी जिससे बाजार (रिटेल) की 2017 के बाद की विक्रियों की मात्रा में वृद्धि हो सके।
 - चीन से निर्यातित वस्तुएं पाटित और रियायती किए जाने की संभावना है; और आस्ट्रेलियाई उद्योग ओईएम घटक में मूलभूत परिवर्तन से काफी कमजोर होगा और इसलिए आस्ट्रेलियाई उद्योग को पाटन और रियायत से जारी रहेगी अथवा उसकी पुनरावृत्ति होगी, यदि उपायों को हटा लिया जाता है, वास्तविक क्षति होने की संभावना है”
- iv. पाटनरोधी शुल्कों के अलावा, आस्ट्रेलिया ने सीवीडी शुल्क भी लगाए हैं, जो लागू भी हैं। इनसे चीन जन. गण. से उत्पादकों / निर्यातकों की निर्यात योग्यता मात्रा के दबाव से छुटकारा पाने के लिए अनुचित कीमत पर ऐसे देशों को प्रभावित करेगी।
- v. साथ ही, यूएसए ने चीन जन. गण. से एआरडब्ल्यू के आयातों पर 10 प्रतिशत का अतिरिक्त व्यापार टैरिफ लगाया है, जिसे बाद में 25 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। यूएसए चीन के एआरडब्ल्यू उत्पादकों के लिए सबसे बड़े बाजारों में से है और यूएसए द्वारा शुल्क लगाए जाने से वर्तमान शुल्कों के समाप्त होने की स्थिति में भारत को निर्यातों में वृद्धि होगी। यह चीन जन. गण. के लिए व्यवहार्य नहीं होगा कि ऐसे रिटेल व्यापार उपायों को देखते हुए यूएसए के लिए अपने आयात को बनाए रखे और भारतीय पाटनरोधी शुल्क की किसी भी समाप्ति से भारत को अधिक निर्यात करना चीन जन. गण. के लिए निश्चय ही लाभकारी होगा।

VII. भारतीय बाजार का आकर्षकता

- i. साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि भारत संबद्ध देशों के लिए विशेषकर चीन के उत्पादकों के लिए एक बड़ा निर्यात स्थान रहेगा और भारत में एआरडब्ल्यू का घरेलू उद्योग ऐसे पाटित आयातों के कारण गंभीर रूप से संवेदनशील रहेगा। यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किया जाता है तो पाटन जारी रहेगा और घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति में तेजी जारी रहेगी।
 - ii. एक अन्य निर्यातक द्वारा सुनवाई में यह कहा गया था कि भारतीय बाजार उनके लिए आकर्षक हैं और वे भारतीय उपभोक्ताओं की सहायता करना चाहते हैं। यदि चीन के निर्यातक भारतीय बाजार को आकर्षक मानते हैं और भारत को निर्यात करने की इच्छा रखते हैं तो कोई भी न्याय विरुद्ध बात नहीं है। लेकिन मामला यह है कि चीन के उत्पादक भारत जैसे बढ़ते बाजार में आकर कब्जा करने के लिए पाटन जैसी अनुचित प्रथा को अपनाते रहे हैं और यदि ऐसी प्रथा को जारी रखने दिया गया तो एआरडब्ल्यू के लिए भारतीय उत्पादन आधार के विनाश में अधिक समय नहीं लगेगा।
95. घरेलू उद्योग ने यह कहा है कि संबद्ध देशों से निरंतर पाटन और क्षति, वर्तमान शुल्क समाप्त होने की स्थिति में भारत को स्थानांतरित की जाने वाली संभावना के साथ संबद्ध देशों में उत्पादकों के पास उपलब्ध पर्याप्त अधिशेष क्षमताएं, यूएसए द्वारा अतिरिक्त शुल्क तथा पाटित आयातों और घरेलू उद्योग की कीमत के बीच कीमत संबंधी अंतर स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से घरेलू उद्योग को पाटन और क्षति जारी रहने की संभावना है।
96. किसी भी प्रतिवादी पक्षकार ने संबद्ध संभावना के पहलू वाले घरेलू उद्योग के अनुरोध का खंडन करने के लिए कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया है। कुछ प्रतिवादी उत्पादकों ने अपनी क्षमताओं के ब्यौरे प्रदान किए हैं, लेकिन अपनाए गए सैम्पल के बावजूद सभी प्रतिवादी निर्यातकों से देश के लिए कोई भी व्यापक सूचना प्रदान नहीं की गई है। प्राधिकारी को क्षमता, तीसरे देश के निर्यात के ब्यौरे आदि संकलित करने चाहिए।

घ. पाटन और क्षति की संभावना के संबंध में निष्कर्ष

97. इस जांच में संकलित अनिवार्य तथ्य यह दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का पाटन जारी रहा और इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति होनी जारी रही जैसा कि जांच की अवधि में और क्षति की अवधि में घरेलू उद्योग के निष्पादन से देखा जा सकता है। रिकार्ड में उपलब्ध सूचना यह भी दर्शाती है कि चीन जन. गण. जैसे देशों में अधिशेष क्षमताएं हैं और चीन जन. गण. से उत्पादकों / निर्यातकों के पास विभिन्न व्यापार उपायों जैसे पाटनरोधी शुल्कों, प्रतिसंतुलनकारी शुल्कों, यूरोपीय संघ, आस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे प्रमुख निर्यात बाजारों में अतिरिक्त सीमा शुल्क टैरिफ के अध्याधीन है। व्यापार अवरोध के साथ ऐसी अधिशेष क्षमताएं वर्तमान शुल्कों की समाप्ति की स्थिति में भारत को पाटित कीमत पर निर्यातों के स्तर में वृद्धि हो सकती है। इसके अलावा, संबद्ध देशों से पाटन और क्षति जारी रहती है, जब शुल्क लागू रहते हैं। संबद्ध देशों से उत्पादकों / निर्यातकों द्वारा यह भी प्रदर्शित नहीं किया गया है कि उनके पास संबद्ध वस्तुओं के लिए पर्याप्त बाजार हैं, यद्यपि अधिशेष क्षमताएं मौजूद हैं और उनके आयातों निर्यातों के लिए सशक्त व्यापार अवरोध हैं। भारतीय बाजार की आकर्षकता में केवल वर्तमान शुल्कों की समाप्ति के मामले में वृद्धि हो सकती है। इस प्रकार, यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्कों की समाप्ति की स्थिति में पाटन और उसके परिणामस्वरूप क्षति होने की संभावना है।

प्रकटीकरण के उपरांत टिप्पणियां

98. घरेलू उद्योग और प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों से प्रकटीकरण के उपरांत टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं। इन हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मामले अधिकांशतः बार- बार आते रहते हैं। इनमें उठाए गए मामले पहले भी जांचों के दौरान उठाए गए थे और उन्हें पर्याप्त रूप से शामिल भी किया गया है। तथापि, स्पष्टता की दृष्टि से हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच की गई है, जो इस प्रकार हैं :

घरेलू उद्योग के विचार :

99. घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटीकरण विवरण जारी होने के बाद किए गए अनुरोध नीचे दिए गए हैं :
- i. मूल जांच में, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू जैसे उत्पाद अर्थात् ए आर डब्ल्यू के लिए एन आई पी की गणना की गई थी, जिनमें क्रोम प्लेट वाले पहिए (व्हील) भी शामिल हैं और वर्तमान जांच चूंकि निर्णायक समीक्षा जांच (एस

एस आर) है, इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को उसी प्रक्रिया का अनुसरण करना चाहिए। यह भी देखा गया है कि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत से एसेसरीज को बाहर किया है। इसी प्रकार, आयातों की पहुंच कीमत निकालते समय, सभी एसेसरीज की कीमत, यदि कोई हो, कम किए जाने की जरूरत है। एन एफ ए की गणना करते समय, प्राधिकारी ने चल रहे पूंजीगत कार्यों और मिश्रित रिजर्व को बाहर रखा है, उसे कम करने की आवश्यकता नहीं थी।

- ii. साइटिक के लिए निर्धारित किया गया पाटन मार्जिन यह दर्शाता है कि कंपनी ने अधिक निर्यात कीमत का दावा किया है। साइटिक मुख्य रूप से फोर्ड को आपूर्ति कर रही है और घरेलू उद्योग भी फोर्ड को आपूर्ति कर रहा है। यदि साइटिक की निर्यात कीमतें सही हैं तो फोर्ड साइटिक से विचाराधीन उत्पाद के लिए बहुत ही अधिक कीमत का भुगतान कर रही है। जबकि घरेलू उद्योग उन्हें कम कीमत पर आपूर्ति करने के लिए बाध्य हुआ है। फोर्ड द्वारा साइटिक से विचाराधीन उत्पाद के आयात के लिए 2.15 डालर प्रति कि. ग्रा. का पाटनरोधी शुल्क आवश्यक है। साइटिक द्वारा दावा की गई कीमत की विश्वसनीयता की जांच करने के लिए प्राधिकारी को डाईकास्टल सहित के लिए पाटनरोधी शुल्क सहित कीमत कटौती की जांच करनी चाहिए। यह प्रश्न उठता है कि क्यों फोर्ड 215 डॉलर प्रति कि. ग्रा. पाटनरोधी शुल्क का भुगतान करने के बाद डाईकास्टल से आयात करेगा और क्यों वह भारतीय उत्पादकों से खरीद नहीं करता।
- iii. हम यह भी समझते हैं कि साइटिक प्रत्येक मॉडलों के लिए फोर्ड को फोर्ड व्हील की बिक्री करती है। सामान्यतः फोर्ड एल्यूमिनियम व्हील्स की कीमतें कास्ट एल्यूमिनियम व्हील्स की तुलना में अधिक होती हैं। ऐसी संभावना है कि डाईकास्टल में फोर्ड एवं कास्ट एल्यूमिनियम व्हील, दोनों शामिल किए गए हैं ताकि कीमत का फायदा लिया जा सके। इससे हमारे संदेह को बल मिलता है कि साइटिक की निर्यात कीमत सही नहीं हो सकती है।
- iv. चेंगडू प्लांट के संबंध में प्रकटीकरण के अलावा, विचाराधीन उत्पाद के रूप से कम से कम निम्नलिखित तीन उत्पादकों के विवरण प्राधिकारी को प्रकट नहीं किए गए हैं :
 - क. डाईकास्टल के एस एम चेंगडू ऑटो पार्ट्स कंपनी लि०
 - ख. एम एक्स डाईकास्टल व्हील मैनुफैक्चरिंग कंपनी लि०
 - ग. तियांजिन डाईकास्टल ऑटो पार्ट्स कंपनी लि० / तियांजिन डाईकास्टल कार पार्ट्स कंपनी लि०

प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार :

100. चीन जन. गण. से उत्पादक निर्यातक नामतः मै० साइटिक डाईकास्टल कंपनी लि०, मै० बिन्झोऊ मूवएवर व्हील कंपनी लि०, किनहुआंगदाओ डाईकास्टल साइनोलियोन व्हील्स कंपनी लि०, किनहुआंगदाओ जिनालेंग व्हील्स कंपनी लि०, एस एम एक्स डाईकास्टल व्हील मैनुफैक्चरिंग कंपनी लि० की ओर से निर्धारित समय- सीमा के बाद अर्थात् 27 मार्च को शायं 5.50 बजे (पीडीएफ भाग) टिप्पणियां दाखिल की गई हैं और उसी का वर्ड फॉर्मेट दिनांक 28 मार्च को प्रातः 11.19 बजे दाखिल किया गया।
101. आयातकों में मै० फोर्ड इंडिया प्रा० लि० द्वारा प्रकटीकरण के उपरांत विवरण जारी करने के संबंध में दाखिल की गई टिप्पणियां इस प्रकार हैं :
 - क. घरेलू उद्योग के आधार के बारे में समस्याएं हैं ;
 - ख. घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित किए गए विचाराधीन उत्पाद और आयातक द्वारा आयात किए गए उत्पाद के बीच विनिर्देशनों और गुणवत्ता के संदर्भ में अंतर है ;
 - ग. घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है ;
 - घ. घरेलू उद्योग को किसी भी वास्तविक क्षति का सामना नहीं करना पड़ा है और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है तथा साथ ही दावा की गई क्षति और पाटित आयातों के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

प्राधिकारी द्वारा जांच :

102. चीन जन. गण. से सहयोगी निर्यातक की ओर से दाखिल की गई टिप्पणियां निर्धारित समय के बाद दाखिल की गई थी और प्राधिकारी ने टिप्पणियों पर विचार न करने का निर्णय लिया है, तथापि, सभी पूर्व अनुरोध, जो जांच की अवधि के दौरान दाखिल किए गए थे, स्वीकार कर लिए गए थे और उनकी विधिवत जांच की गई थी।
103. एन आई पी के बारे में घरेलू उद्योग की टिप्पणियों की जांच की गई थी और जहां कहीं भी संगत और लागू पाए गए, आवश्यक संशोधन किए गए हैं।
104. उत्पाद की पहचान के बारे में घरेलू उद्योग की टिप्पणियां और आयात कीमत की जांच की गई थी और जांच की अवधि के दौरान विधिवत सत्यापन करके पहले ही विश्लेषण किया गया है। इसके अलावा, साइटिक ग्रुप संस्थाएं, जो विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में शामिल हैं और उनके भारत को निर्यातों की भी विधिवत पुष्टि की गई है।
105. घरेलू उद्योग को क्षति और क्षति की संभावना तथा कारणात्मक संबंध के बारे में आयातक की टिप्पणियों की उपरोक्त संगत पैरा में विस्तार से पहले ही जांच की गई है।

क. निष्कर्ष :

106. की गई टिप्पणियां, प्रदान की गई सूचना और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध कराए गए तथ्यों, जिन्हें उपरोक्त जांच परिणामों में दर्ज किया गया है, को ध्यान में रखते हुए तथा उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि :
 - क. संबद्ध देशों से पाटित कीमतों पर विचाराधीन उत्पादकों का आयात होना जारी रहा ;
 - ख. घरेलू उद्योग को पाटित उद्योगों के संबंध में क्षति होना जारी रहा ;
 - ग. यदि संबद्ध देशों से पाटनरोधी शुल्कों को समाप्त कर दिया गया तो पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को निरंतर क्षति होने और क्षति जारी रहने की संभावना है ;
 - घ. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि यदि इस अवस्था में पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो पाटन और क्षति के जारी रहने की संभावना है ;
 - ङ. चीन जन. गण. से कुछ उत्पादक निर्यातकों ने समीक्षा जांच के दौरान उत्तर दिया है और सहयोगी उत्पादक निर्यातकों, जिन्होंने पूरे उत्तर दाखिल किए हैं, को चुना गया है। चुने गए उत्पादकों ने सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर (निर्मित) भारत को एक सिंगल निर्यातक के माध्यम से निर्यात किया है, तथापि, पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति नहीं हो रही है।
 - च. कोरिया गणराज्य से किसी भी उत्पादक निर्यातक ने निर्धारित समीक्षा जांच में सहयोग नहीं किया है। थाईलैंड से प्रतिवादी उत्पादक निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना अधूरी थी और इसीलिए असहयोगी घोषित किया गया है। उपलब्ध डाटा यह दर्शाते हैं कि इन देशों से निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किए गए हैं।

सिफारिशें :

107. यह निष्कर्ष निकालते हुए कि यदि मौजूदा पाटनरोधी शुल्कों को समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध, पाटन और क्षति की संभावना के पहलु के संबंध में सकारात्मक साक्ष्य हैं इसलिए प्राधिकारी का यह विचार है कि सभी संबद्ध देशों के लिए शुल्क जारी रखना अपेक्षित है।
108. कम शुल्क के नियम के संबंध में, प्राधिकारी पाटन के मार्जिन और क्षति के मार्जिन में कम मार्जिन के समान एक निश्चायात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं, ताकि चीन जन. गण. से सहयोगी चुनिंदा उत्पादक निर्यातकों के मामले में घरेलू उद्योग को क्षति को समाप्त किया जा सके और सभी अन्य असहयोगी संस्थाओं के संबंध में पूर्व के शुल्क को आगे बढ़ाया जाए। तदनुसार, प्राधिकारी चीन जन. गण., कोरिया गणराज्य तथा थाईलैंड मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयात के संबंध में केंद्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से 5 वर्षों की अवधि के लिए निश्चायात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं, जैसा कि नीचे शुल्क सारणी के कॉलम 7 में उल्लेख किया गया है :

शुल्क सारणी

क्र. सं.	टैरिफ वस्तु*	वस्तुओं का विवरण	मूलता का देश और / अथवा निर्यात	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क की राशि	इकाई
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1.	8708 70	कॉस्ट एल्यूमिनियम अलाय व्हील्स अथवा अलाय रोड व्हील्स" (एआरडब्ल्यू), जो मोटर वाहनों में प्रयुक्त होते हैं, चाहे 12 इंच से 24 इंच तक का व्यास आकार हो, उनकी एससेरीज के साथ लाए गए हैं अथवा नहीं	चीन जन. गण.	साइटिक ड्राईकास्टल कंपनी लि०, / एस एम एक्स ड्राईकास्टल व्हील मैनुफैक्चरर कंपनी लि०, / किनहुआंगदाओ ड्राईकास्टल व्हील मैनुफैक्चरिंग कंपनी, लि०, / किनहुआंगदाओ जिंगलॉग व्हील कंपनी लि० / बिनजोऊ मूवएवर ड्राईकास्टल व्हील कंपनी लि०,	साइटिक ड्राईकास्टल कंपनी लि०	0.08	यू एस डॉलर/ कि. ग्रा.
2.			चीन जन. गण.	झेजियांग जिनफी कैडा व्हील कंपनी लि०	झेजियांग जिनफी कैडा व्हील कंपनी लि०	0.08	यू एस डॉलर/ कि. ग्रा.
3.			चीन जन. गण.	शानडांग शांग वांग एल्यूमिनियम इंडस्ट्री कंपनी,	शानडांग शांग वांग एल्यूमिनियम इंडस्ट्री कंपनी लि०,	0.08	यू एस डॉलर/ कि. ग्रा.
4.			चीन जन. गण.	झेजियांग शुगुआंग इंडस्ट्रियल कंपनी लि०,	झेजियांग शुगुआंग इंडस्ट्रियल कंपनी लि०,	0.08	यू एस डॉलर/ कि. ग्रा.
5.			चीन जन. गण.	ऊपर के अलावा अन्य कोई	ऊपर के अलावा अन्य कोई	2.15	यू एस डॉलर/ कि. ग्रा.
6.			कोरिया गणराज्य	कोई	कोई	1.18	यू एस डॉलर/ कि. ग्रा.
7.			थाईलैंड	कोई	कोई	1.06	यू एस डॉलर/ कि. ग्रा.

* यह सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और शुल्क का निर्धारण विचाराधीन उत्पाद के विवरण के अनुसार किया जाएगा। ऊपर उल्लिखित विचाराधीन उत्पाद उपरोक्त किए गए हैं

109. ऊपर संस्तुत की गई शुल्क दरें कॉलम (5) में उल्लिखित विनिर्दिष्ट उत्पादक द्वारा निर्मित और ऊपर कॉलम (6) में उल्लिखित निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों के लिए लागू है। सीमा शुल्क द्वारा संबद्ध वस्तुओं की निकासी की स्वीकृति के समय उत्पादक और निर्यातक के नाम की पुष्टि की जानी चाहिए।

110. इस प्रयोजन के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1962 के तहत सीमा शुल्क द्वारा यथा निर्धारित और सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3क, 8ख, 9, 9क, के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमा शुल्क के लागू स्तर के अनुसार मूल्यांकन योग्य मूल्य होगा।
111. आवेदक घरेलू उद्योग और प्रतिवादी उत्पादकों द्वारा प्राधिकारी को ऐसी संबद्ध वस्तुओं के लिए उक्त परिवर्तन के समर्थन में संगत दस्तावेजों सहित निर्यात सुविधा के घटक/ स्वामित्व में किसी भी परिवर्तन के संबंध में सूचित करना अपेक्षित है, जिसके लिए पाटनरोधी उपायों की सिफारिश की जा रही है। यह सूचना प्राधिकारी को कीमत परिवर्तन, यदि कोई हो, उसके 60 दिनों के भीतर प्राप्त हो जानी चाहिए।
112. केंद्र सरकार के आदेश के खिलाफ इस अंतिम जांच परिणाम से उत्पन्न कोई भी अपील सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपील प्राधिकरण के समक्ष सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार की जाएगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं महानिदेशक

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)

FINAL FINDING NOTIFICATION

New Delhi, the 29 th March, 2019

Case No.16/2018

Subject: Final finding in the second Sunset review of anti-dumping investigation concerning imports of “Aluminum Alloy Road Wheels” (hereinafter also referred as the subject goods), originating in or exported from China PR, Korea RP and Thailand.

F. No. 7/31/2018-DGTR: - Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD rules), thereof;

A. BACKGROUND

1. Whereas, the Designated Authority (hereinafter also referred as the Authority) initiated anti-dumping investigation on imports of “Aluminum Alloy Road Wheels” (hereinafter also referred as the subject goods), originating in or exported from China PR, Korea RP and Thailand (hereinafter also referred as the subject countries) vide notification No 14/7/2012-DGAD dated 10.12.2012. The Authority recommended provisional duties on imports of subject goods from subject countries on 13.1.2014 and the same was imposed by Ministry Of Finance vide Notification No. 15/2015-Customs (ADD) dated 11th April, 2014. The Authority thereafter notified the Final Findings No 14/7/2012-DGAD dated 9th June, 2014. The importers filed writ petitions (WP633/2015, WP 634/2015) before the Hon’ble Delhi High Court on the grounds of violation of natural justice etc., and the Final Findings No 14/7/2012-DGAD was quashed. However, a stay on the said judgment was granted by the Hon’ble Supreme Court in SLP(C) No. 014068 - 014073 / 2015 and the said SLPs are pending for final hearing. Following the stay from Hon’ble Supreme Court, MOF notification No. 21/2015-Customs (ADD) dated 22nd May, 2015 was issued and the duties recommended vide Final Findings No 14/7/2012-DGAD were imposed for 5 years from the date of provisional imposition and the same are in force.

2. Whereas, in terms of Section 9A (5) of the Customs Tariff Act 1995, as amended, read with Rule 23 of AD Rules, the anti-dumping duty imposed shall unless revoked earlier, cease to have effect on expiry of five years from the date of such imposition and the Authority is required to review, whether the expiry of duty in force is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. In accordance with the above, the Authority is required to review, on

the basis of a duly substantiated request made by or on behalf of the domestic industry, as to whether the expiry of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

3. M/s Synergies Castings Ltd and M/s Kosei Minda Aluminum Company Ltd. (hereinafter referred to as 'petitioners') filed a duly substantiated petition on behalf of the domestic industry before the Authority, in accordance with the Act and the Rules alleging likelihood of continuation or recurrence of dumping of the subject goods, originating in or exported from China PR, Korea RP and Thailand and consequent injury to the domestic industry and have requested for review and continuation of the present anti-dumping duties, applicable on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, for another five years.

4. Having satisfied that the Petitioners have substantiated the need for a Review, the Designated Authority considered it appropriate to initiate Sunset review vide Notification No. 7/31/2018-DGTR dated 10.8.2018, published in the Gazette of India, Extraordinary, to examine whether the expiry of present duties is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

B. PROCEDURE

5. The procedure described below has been followed so far in this investigation:

- i. The Authority sent copies of the Initiation Notification dated 10.8.2018 to the Embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, known importers and other interested parties, and the domestic producers as per available information under Rule 6 (2) and (3). The known interested parties were requested to file the questionnaire responses and make their views known in writing within the prescribed time limit under Rule 6 (4).
- ii. The Authority forwarded copies of the Initiation Notification to the following known producers/exporters in the subject countries along with Non Confidential Version of the application as per the details furnished in the application filed before the Authority. The producers exporters from China and Embassy of China were also advised to file questionnaire response in the supplementary questionnaire regarding the claim of market economy status.

China PR

1. Baoding Lizhong Wheel Manufacture Co., Ltd.
2. Dare Technology Co., Ltd.
3. Danyang Co
4. Yhi International Limited
5. Citic Dicastal Wheel Manufacturing Co., Ltd
6. Ysm Wheels Corporation Ltd
7. Zhejiang Baokang Wheel Manufacture Co., Ltd
8. Baosh Auto Parts Company Limited
9. Chiping Xinfa Aluminum Product Co., Ltd
10. Freeman Racing Wheels
11. Shandong Vesteon Automotive Parts Co., Ltd
12. Uniracing (Ningbo) Manufacturing Co., Ltd
13. Ningbo Jinggang Machinery Co., Ltd
14. Qindago Homeshine International Trading Co., Ltd
15. Ningbo Qiyu Special Wheel Corp
16. Zhejiang Buyang Auto Wheels Co., Ltd
17. China Zenix Auto International Limited
18. Qingdao Donghwa Casting Inc
19. Dare Wheel Manufacturing Co., Ltd,

20. Hua Tai (Jiang Men) Aluminium Product Co., Ltd
21. Sanmengxia Dicastal Wheel Manufacturing Co. Ltd
22. Shanghai Jinheli Aluminum Wheel Hub Manufacture Co., Ltd
23. Liufeng Machinery Industry Co., Ltd
24. Foshan Nanhai Zhongan Aluminium Wheel Co., Ltd
25. China Zenix Auto International Limited

Korea RP

1. Korea Wheel Tech Co Ltd
2. Samsung Auto Dismantling Co., Ltd
3. GS Corporation
4. Uniwell Corporation
5. Mirae Trading Co Ltd
6. Rainbow Industrial Co., Ltd
7. Eastern Point
8. MH International
9. Wowmotors Co., Ltd
10. Unhwa Commerce Inc
11. Alux Co., Ltd

Thailand

1. Sammitr Bangyai Auto Part & Export Co., Ltd
2. Easy World SA Trading Ltd. Part
3. Southern Cross Enterprises
4. WC Co., Ltd.,
5. The Rep Company
6. Tanut Netphant
7. Taita Enterprise Co., Ltd.,
8. I.C.Point
9. TNP Autoparts Company Limited
10. Technet Corp Asia Co., Ltd.,
11. Hyper Silvers & Chrome Paints
12. Enkei

iii. The following producers/exporters responded to the Authority filing Exporter Questionnaire Response and also other submissions:

1. Shandong Shuang Wang Aluminium Industry Co Ltd, China PR
2. Baoding Lizhong Wheel Manufacturing Co Ltd, China PR
3. Baotou Shengtai Auto Parts Manufacturing Co Ltd, China PR
4. Tianjin Lizhong Group Co Ltd, China PR
5. Qinhuangdao Lizhong Wheel Co Ltd, China PR
6. Citic Dicastal Co Ltd, China PR

7. Binzhou Movever Dicastal Wheel Co Ltd, China PR
 8. Qinhuangdao Dicastal Sinolion Wheels Co Ltd, China PR
 9. Qinhuangdao Xinglong Wheels Co Ltd, China PR
 10. SMX Dicastal Wheel Manufacturing Co Ltd, China PR
 11. Zhejiang Shuguang Industrial Co., Ltd, China PR
 12. Zhejiang Jinfei Kaida Wheel Co., Ltd, China PR
 13. New Thai Wheel Manufacturing Co Ltd, Thailand
- iv. The producers/exporters who have responded from China PR, however, filed only the EQ Responses and have not filed response to the supplementary questionnaire to rebut the Non Market Economy presumption of China PR.
- v. A preliminary scrutiny of the Exporter Questionnaire Responses showed that the Response filed by the following parties were incomplete and could not be considered for individual margins;
1. Baoding Lizhong Wheel Manufacturing Co Ltd, China PR (Producer/Exporter)
 2. New Thai Wheel Manufacturing Co Ltd, Thailand (Producer/Exporter)
- vi. It was noted that even after rejection of above Responses, there were still large number of producers/exporters who have filed the Exporter Questionnaire Response. Considering such large number of questionnaire responses received in this investigation, the Authority proposed to limit its findings to a reasonable number of producers/exporters in terms of Rule 17 (3) of the Anti-dumping Rules. Accordingly, following producers/exporters were proposed to be selected in the sample for further examination on the basis of quantum of exports to India during the POI;
1. CITIC Dicastal Co., Ltd, China PR
 2. Binzhou Movever Dicastal Wheel Co Ltd, China PR
 3. Qinhuangdao Dicastal Sinolion Wheels Co Ltd, China PR
 4. Qinhuangdao Xinglong Wheels Co Ltd, China PR
 5. SMX Dicastal Wheel Manufacturing Co Ltd, China PR
- vii. The proposal to adopt sampling along with the details of parties selected in the sample were communicated to all the interested parties vide letter dated 8.1.2019 and the interested parties were given time till 14.1.2019 to provide their comments, if any, on the sampling proposed along with any additional information therein. Comments received, from the interested parties were examined on merit and it was decided to adopt sampling in the present investigation.
- viii. Questionnaires were sent to the following known importers/users of the subject goods in India calling for necessary information:
1. Enkei Wheels (India) Limited
 2. Aakar Castings Pvt Ltd
 3. Volkswagen India Pvt. Ltd.
 4. Ford India Private Ltd.
 5. General Motors India Pvt. Limited.
 6. Hyundai Motor India Ltd
 7. Toyota Kirloskar Motor Pvt. Limited
 8. FIAT India Automobile Limited
 9. Hindustan Motors Limited
 10. Neo Wheels
 11. BMW India

12. Tata Motors Limited
 13. Daimler India Pvt. Ltd
 14. Skoda Auto India Private Limited
 15. Honda Sael Cars India Ltd.
 16. Renault Nissan Technology & Business Centre India Pvt. Ltd
 17. Sai Mag Wheels
 18. Prestige Design
 19. Marwah Trader
 20. The Automotive Component Manufacturers Association of India (ACMA)
 21. Society of Indian Automobile Manufacturers (SIAM)
 22. Sheromani Trader Pvt. Ltd.
 23. Rockford Wheels
 24. Sukhmani Wheels
 25. Sukhadata Enterprises
 26. Perfect Importers & Distributors (I) Pvt. Ltd.
 27. Auto Dynamic Corporation
 28. Fast Track Distributors Pvt. Ltd.
 29. General Motors India Pvt. Ltd.
- ix. The following importers/users filed a response to the Importer's Questionnaire in the prescribed format along with other submissions:
1. Hyundai Motors India Ltd.
 2. Ford India Pvt. Ltd.
- x. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the domestic industry, producers/exporters and the importers in the form of a Public File kept open for inspection by the interested parties. Submissions made by all the interested parties so far have been taken into account in this Notification.
- xi. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xii. Further information was sought from the applicants and other interested parties to the extent deemed necessary.
- xiii. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the findings on the basis of the facts available.
- xiv. The Authority has examined the information furnished by the domestic producers to the extent possible on the basis of guidelines laid down in Annexure III of the Rules to work out the cost of production and the non-injurious price of the subject goods.
- xv. The Authority, during the course of investigation, satisfied itself as to the accuracy of the information supplied by the interested parties, which forms the basis of this Notification to the extent possible and verified the data / documents given by the domestic industry and producer/exporter to the extent considered relevant and necessary.
- xvi. Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2017 to 31st March 2018 (12 months) (hereinafter referred to as the 'period of investigation' or the 'POI'). The examination of trends, in the context of injury analysis covered the period from April 14- March 15, April 15-March16, April16- March 17 and the POI.

- xvii. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigation, and the said information was obtained from the DGCI&S and has been adopted for the purpose of the present investigation.
- xviii. A Disclosure Statement was issued on 20.03.2019 containing essential facts under consideration of the Designated Authority, giving time up to 27.03.2019 to furnish comments, if any, on Disclosure Statement. The Authority has considered post disclosure comments received from interested parties appropriately.
- xix. The submissions made, arguments raised and information provided by various interested parties during the course of investigation, to the extent the same were supported with evidence and considered relevant to the present investigation have been appropriately considered and addressed by the Authority in this Notification at appropriate places.
- xx. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority has provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a hearing held on 19.2.2019. All the parties attending the oral hearing were requested to file Written Submissions of the views expressed orally by 25.2.2019. The parties were advised to exchange/collect copies of the views expressed by the opposing parties and were requested to submit their Rejoinder Submissions by 5.3.2019.
- xxi. Exchange rate for the POI considered by the Authority is 1US\$ = Rs. 65.29.
- xxii. “ *** ” in this notification represents information considered confidential.

C. SCOPE OF PRODUCT UNDER CONSIDERATION (PUC) AND LIKE ARTICLE

Views of the producers/ exporters/ importers and other opposing interested parties

- 6. The submissions made with regard to product under consideration and its scope, by the producers/ exporters/ importers/ users etc. considered relevant by the Authority are as follows:
 - i. Compared to the other suppliers of the ARW in the world there is still a big gap in the technical capabilities of the Domestic Industry.
 - ii. DI lacks engineering capability on wheel weight optimization. Certain imported ARWs weigh lesser than Synergies' ARW. This weight difference is due to optimization of pockets behind the spokes. SCL is unable to achieve such level of optimization as they are not able to adopt lesser machining allowance and draft angle. Higher weight increases the cost of the wheel. ARWs for cars like Ford Figo Aspire show such difference.
 - iii. SCL is not capable of making front face machined alloy wheel. Ford proposes to use Front Face Machined alloy wheel, also referred to as Diamond cut wheel in the India market. SCL confirmed that they would not be able to meet this requirement currently in the existing painting line. Considering the fact that there was no available alternate alloy wheel supplier in India, Ford had to move to import for this ARW and bear the import duty for all wheels used for Indian market.
 - iv. PUC used by Ford in its vehicles are produced using Low Pressure Die Casting (LPDC) technology. SCL has LPDC technology. However, the other two Indian domestic producers viz. Enkei and Kosei Minda use Gravity die casting (GDC) technology. GDC is an older technology compared to LPDC. The disadvantages of using GDC are that the alloy road wheels, manufactured using the GDC technology are heavier in weight and have higher casting scrap/ wastage leading to increased cost of alloy road wheels. It is also a less efficient process for manufacturing alloy road wheels.
 - v. Ford entities world over have been using the alloy road wheels based on the LPDC technology for over 20 years. Hence, it is not viable to switch from an efficient to an inefficient process of manufacturing alloy road wheels.
 - vi. SCL's CAD capability does not meet FORD's expectations. For instance, Figo ARW drawing CAD had multiple issues, which resulted in a poor 2D and 3D linkage.
 - vii. SCL does not rise to meet the requirements of localization of various inputs that go into the production of ARW's. They lack the necessary technical expertise to meet Ford's requirements.
 - viii. SCL does not adhere to the time commitments and delivery schedules.
 - ix. While operating on a cost-plus pricing model, SCL sugar coats the cost with new and unagreed for items of cost often that should not have been included in the first place.

Views of the domestic industry

7. The submissions made by the domestic industry with regard to product under consideration, like article and its scope and considered relevant by the Authority are as follows:
 - i. The product under consideration for the purpose of the present SSR investigation is the same as in the original investigation, i.e., “Cast Aluminum Alloy Wheels or Alloy Road Wheels” (ARW) used in Motor Vehicles, whether or not attached with their accessories, of a size in diameters ranging from 12 inches to 24 inches originating in or exported from China PR, Korea RP and Thailand.
 - ii. The main function of ARWs is that they are fitted on motor vehicles to enable vehicle movement. ARWs other than 12 inches to 24 inches’ diameter and for use in other than motor vehicles were out of the product scope. The goods included finished or semi-finished ARWs whether unpainted, painted or chrome plated. Wheels for Motor Vehicles are generally made of Steel or Aluminum Alloy. Steel wheels were not included in the product scope. ARWs for motor cycles were also excluded from the scope of PUC.
 - iii. It was determined in the original final finding that there is no known difference in the product under consideration produced and exported from the subject countries and the subject goods produced by the domestic industry. The subject goods produced by the domestic industry and those imported from the subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. Such finding is relevant for this SSR as well.
 - iv. Since the present investigation is a sunset review investigation, scope and definition of product under consideration remains the same as had been defined in the original investigation. Also, no significant developments have taken place since imposition of duties which has a bearing on the definition of PUC and determination of Like Article. Therefore, the domestic industry refers to and relies upon the Final Findings by the Authority in the original investigation with regard to product under consideration and like article.
 - v. M/s Ford India Ltd has raised certain contention on the PUC even though the present investigation is only an SSR and the scope of PUC remains same as in the original case. Most of the contentions of Ford were part of the original case and it was found that there is no merit in the submissions.
 - vi. With regard to the contention that there is still a big gap in the technical capabilities of the Domestic Industry, it is to be noted that the Domestic Industry is having excellent technical capability which is why it is supplying the subject goods to leading Global and Domestic OEM’s since 1999 including Ford. Details of such supplies have been provided. SCL was the first Full Service Supplier from India for the Mondeo program and is continuing to maintain its FSS status ever since. SCL’s wheels have been validated by Ford not only in India, but also in Australia, Germany and USA. Not only that, several improvement suggestions of SCL have been incorporated into Ford’s designs even today. The DI supplies the subject goods to many major OEM’s in India and also in the foreign markets which proves that the contentions of Ford are devoid of any merit.
 - vii. With regard to the contention that SCL lacks engineering capability on wheel weight optimization and there is difference of weight in case of domestic wheels and imported wheels, it is mentioned that wheel weight is a derivative of multiple factors such as alloying elements, design, density of material and radiographic levels in addition to volume/geometry factors. The DI always target to design and make wheels which exceed OEM requirements at the optimum weight. DI has gained this expertise over the years and due to this, millions of wheels were manufactured by it for Indian OEM’s and it has thorough knowledge of Indian road conditions. Producers like SCL have not had a single field failure in its history. It is also to be noted that machining allowance does not have any impact on the wheel weight and the draft angle is not determined or decided by the wheel supplier. It is finalized by the OEM in all cases.
 - viii. With regard to the contention that SCL is not capable of making front face machined alloy wheel, it is mentioned that SCL has been the pioneer of front face machined alloy wheels in India since 2004. Wherein they have secured the coveted “Most Innovative Technology Transfer” award and multiple Zero PPM and 100% Delivery awards from none less than Toyota and 100% quality rating from Honda, both of whom are undoubtedly the world leaders in the use of front face machined alloy wheels globally. Since then SCL has been the supplier of choice for Toyota + Chrysler + Honda and TML and has

supplied more than 1.5 million front face machined alloy wheels to these OEM's till date. Ford approached SCL 10 to 12 years after SCL had already proved its expertise in machined wheels.

- ix. With regard to the contention that SCL confirmed that they would not be able to meet this requirement currently in the existing painting line, it is to be noted that SCL gave a clear picture of its capabilities to Ford in a PPT shared on 15.09.2015. It is also to be noted that SCL paints wheels with premium finishes for top global OEM's in its state-of-the-art paint line.
- x. With regard to the contention that PUC used by Ford in its vehicles are produced using Low Pressure Die Casting (LPDC) technology, companies like Synergies, Steel Strips etc. supply LPDC wheels to OEMs like Ford and there are certain other producers who have adopted GDC. There is sufficient capacity in domestic industry to supply wheels made with LPDC technology. These technologies do not render different wheels per se. Most importantly the aspect of two technologies involved in the production of ARWs was examined in the original case and a specific finding is available in the original Final Findings itself.
- xi. With regard to the contention that Ford entities world over have been using the alloy road wheels based on the LPDC technology for over 20 years and, hence, it is not viable to switch from an efficient to an inefficient process of manufacturing alloy road wheels, this contentions have no merit. There is sufficient capacity in domestic industry to source wheels made with LPDC technology in India and Ford has been buying from DI.
- xii. With regard to the contentions that SCL's CAD capability does not meet FORD's expectations, the relationship between SCL and Ford started in 1999 and SCL has been the supplier partner of choice for Ford for around 20 programs till date without any CAD capability issues. This alone makes the contentions without any grounds and basis.
- xiii. With regard to the contention that SCL does not rise to meet the requirements of localization of various inputs that go into the production of ARW's, the main aim of SCL is to use the best possible resources so that customers get the best quality wheel at the optimum price. This is borne out by the fact that there have never been any major quality issues with SCL wheels and the reason that SCL has been honored with the coveted Ford Q1 certification as well as receiving various awards for best quality etc.
- xiv. With regard to the contention that SCL does not adhere to the time commitments and delivery schedules, it is informed that SCL has an impeccable record of timely deliveries; it could not have been in the global market without such discipline. However, there will always be challenges when two parties are working on a project. For example, if the customer insists on using certain specific approved inputs, then obviously, there will be a time line associated with procuring the same. Another recurrent problem is their absolutely random and highly erratic schedules and demands - always needing instant solutions. SCL is making a high-end product and still such erratic schedules are fairly met. It needs to plan its material procurements etc. based on actual schedules given by the customers and supplier lead times. In fact, SCL has gone to a great extent to support such random requirements of customer many a time; even going to the extent of air freighting metal for customer at short notice and incurring additional costs. Customer promised to help defray costs, but never did.
- xv. With regard to the contention that while operating on a cost-plus pricing model, SCL sugar coats the cost with new and unagreed for items of cost often, the contention is unfortunate. It should be appreciated that SCL is in the business of making high quality alloy wheels using best in class materials, processes and technologies and the price are on mutually agreed terms and best prices are always offered. It is to be noted that the pricing is impacted by presence of dumped imports in any case. Thereafter, if there are changes in the requirements of the customer during the quote process/eventually, SCL naturally has to pass on such additional costs to adapt the quoted prices to these changes. After sustained negotiations, during which all aspects of pricing are discussed, Ford accepts the prices and awards business to SCL. SCL has always gone out of its way and yielded to Ford's demands.
- xvi. In short, the contentions of Ford do not establish any need for the review of scope of PUC as they failed to prove any differences between the imported ARW and that domestically manufactured. The routines of business are no ground to ask for product exclusion from the ambit of current ADDs. Ford could not bring on record anything to prove that the subject goods produced by the DI is not like article to the PUC imported as per Rule 2 (d) of the AD Rules. The issues raised by Ford are comparable to such issues raised in the original investigation and the scope of PUC was determined after detailed examination of all such facts.

- xvii. The Final Findings clearly shows that any difference in the design or specification will not render a particular ARW different from what has been defined as PUC. Contentions of Ford on these accounts also warrant rejection. It is reiterated and submitted that there is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and the product under consideration produced and exported from the subject countries and the finding of the Authority in the original investigation should be adopted in this SSR investigation also viz. PUC and Like Article.

Examination by the Authority

8. The product under consideration in the present SSR investigation is “Cast Aluminum Alloy Wheels or Alloy Road Wheels” (ARW) used in Motor Vehicles, whether or not attached with their accessories, of a size in diameters ranging from 12 inches to 24 inches” originating in or exported from subject countries.
9. The PUC falls under Chapter 87 of the Customs Tariff Act, 1975, under customs sub-heading 8708 70 00 under the description “Road wheels and parts and accessories thereof”. However, the customs classification is only indicative and is in no way binding on the scope of the PUC.
10. The present investigation being a sunset review investigation, the Authority considers that the scope of the PUC in the present investigation remains the same as that in the original investigation. The product under consideration defined in the previous investigations is as follows;
 14. *The product under consideration in the present investigation is “Cast Aluminum Alloy Wheels or Alloy Road Wheels (ARW) used in Motor Vehicles, whether or not attached with their accessories, of a size in diameters ranging from 12 inches to 24 inches”, originating in or exported from China PR, Korea RP and Thailand.*
 15. *Alloy Wheels or Alloy Road Wheels (ARW) are produced in various sizes/diameters. The product under consideration covers only ARWs of a size in diameters ranging from 12 inches to 24 inches used in motor vehicles. ARWs other than 12 inches to 24 inches diameter and for use other than motor vehicles are out of the product scope. The goods include finished or semi-finished ARWs whether unpainted, painted or chrome plated. The main function of ARWs is that they are fitted on motor vehicles to enable vehicle movement. Wheels for Motor Vehicles are generally made of Steel or Aluminum Alloy. As claimed by the domestic industry, Alloy Wheels are new generation product and are widely capturing market in India because of their superior features over the steel wheels. Steel wheels are not included in the product scope. ARWs are classified under Chapter 87 of the Customs Tariff Act, 1975, under customs sub-heading No. 8708.70 under the description “Road wheels and parts and accessories thereof”. As claimed by the domestic industry, the subject goods are also imported under different customs classifications such as 87087000, 87082900, 87089900, 87149290, 87149990, 87089400 etc. However, the customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of this investigation.*
11. After considering the information on record, the Authority holds that there is no known difference in product under consideration exported from subject countries and the product being produced by the Indian industry. The subject product produced by the domestic industry is comparable to the Product under consideration in terms of characteristics such as physical & technical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
12. The Authority holds that the product produced by the applicant domestic industry is like article to the Product under consideration as mentioned in the paragraphs above, in accordance with the Anti-Dumping Rules. The subject goods produced by the petitioners are being treated by the Authority as like article to the subject goods imported from the subject countries, within the meaning of Rule 2(d) of the Anti-Dumping Rules.
13. Notwithstanding the above, the Authority has examined the submissions of Ford India Pvt. Ltd and the rebuttals in rejoinder filed by the petitioners concerning such contentions along with documentary evidences. The examinations of the said submissions show that the imported product covers ARWs produced through LPDC and also GDC technology. Similarly, the Indian producers also follow either LPDC or GDC technologies. Thus, the claim that ARWs produced through LPDC technology is not fairly available in India cannot be accepted. The claims that the DI has not got the engineering capability; the DI is not supplying some specific model; there is delay in supply; SCL’s CAD capability does not meet FORD’s expectations; there is differences in wheel weights and pricing issues; etc. have been examined by taking into consideration the replies filed by the petitioners also. It is noted in this regard that such claims do not establish any need for review of scope of PUC in this investigation. Such issues were addressed in the original investigation also and Ford had participated in the

original investigation as well. Thus, Ford has not brought on record any significant new facts to suggest review of the scope of PUC and Like Article.

14. A review of product scope is not warranted in this investigation as there are no facts which suggest the subject goods produced by the petitioners are not like article to the subject goods imported from the subject countries, within the meaning of Rule 2(d) of the Anti-Dumping Rules. The contentions are accordingly rejected.

D. DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

Views of the producers/exporters and importers

15. The submissions made by the exporters/importers/other opposing interested parties during the course of the investigation with regard to scope of domestic industry and standing are as follows:
- i. One of the petitioner companies, Synergies Castings Ltd. is located in SEZ and therefore shall be excluded as it caters primarily to the export market. SEZ is deemed to be a territory outside the customs territory of India for the purposes of authorized operations. Further, any goods removed from the SEZ unit to the DTA are chargeable to duties of customs including anti-dumping duties where applicable on such goods when imported.
 - ii. Minda Kosei Aluminum Wheels Pvt. Ltd. is only supporting the present petition. Kosei Minda Aluminum Company Pvt. Ltd. (Petitioner) and Minda Kosei Aluminum Wheels Pvt. Ltd. (Supporter) are related companies. Both the companies are managed & controlled by the same company, namely Minda Industries Limited (MIL). As per information available on the website of the group, Kosei Minda Aluminum Company Pvt. Ltd. is an associate company of MIL and Minda Kosei Aluminum Wheels Pvt. Ltd. is a subsidiary company of MIL and as per information available at Ministry of Corporate Affairs (MCA), both the companies have some same directors and shareholders. As per information filed with MCA, Minda Kosei Aluminum Wheels Pvt. Ltd. is primarily engaged in the business of manufacturing and supply of aluminum alloy wheels and/or aluminum general casting parts. Thus, non-disclosure of related company involved in the production of subject goods is a deliberate attempt of the domestic industry to mislead the Authority. In the absence of complete information filed by the petitioner, the petition shall be considered as void and present investigation shall be terminated.
 - iii. If the Authority continues to consider Kosei Minda as applicant in the present investigation, the same analogy shall be applied to Baoding Lizhong and New Thai also. The response of Baoding Lizhong and New Thai was rejected on account of non-filing of response by the unrelated trader vide sampling letter dated 8th January 2019.
 - iv. The response of Baoding Lizhong and New Thai was rejected on the ground that its trader namely Hyundai Glovis Co., Ltd. and Ford Motor Company (Thailand) Ltd. respectively have not filed the questionnaire response. The said traders are unrelated traders of Baoding Lizhong of New Thai respectively. As per law, it is nowhere mentioned that unrelated trader shall file the response. However, in present case, Minda Kosei is a related company and not filed the detailed response, thus, the application of Kosei Minda should be rejected.
 - v. The petitioners cannot be selective in filing the application. All the companies in the group involved in the production and trading of the PUC must file the detailed information as per the application proforma prescribed by Directorate General of Trade Remedies. In the present investigation Kosei Minda Aluminum Company Pvt. Ltd. and Minda Kosei Aluminum Wheels Pvt. Ltd. are related companies and Minda Kosei Aluminum Wheels Pvt. Ltd. have not filed detailed information with the Authority. Merely a letter of support cannot be considered. Non participation of Minda Kosei Aluminum Wheel Pvt. Ltd is on account of their high profits which is selective participation by the petitioners. The Authority shall apply the same analogy as applied for the rejection of producers/ exporters from China PR while rejecting their responses. In view of the same, Kosei Minda Aluminum Company Pvt. Ltd. shall be excluded from the scope of the standing of the domestic industry.
 - vi. Petitioner companies constitutes 40.29% of Indian production and alongwith supporters 62.30%. As Synergy Castings is an EOU, the company must have exported more than 70% of its total production and only less than 30% must have been sold in domestic market in India. The total production of this company during the POI has been considered, and thus it forms 40% of total production of India along with the production of Kosei Minda. However, if the exports sales of Synergy and the production of Kosei Minda is excluded, then the applicants' share in the total production will be less than 25% making them ineligible to be treated as domestic industry on grounds of insufficient standing.
 - vii. One of the Petitioners being a 100% Export Oriented Unit (EOU), cannot be considered as domestic industry. Since the Petitioner is a 100% EOU, production of the Petitioner shall be restricted to its entitlement to sell in the Domestic Tariff Area (DTA) for the purposes of determining their standing.

- viii. The source of information of other producers is not provided. Also, EOU cannot be part of domestic industry based on the stands taken by the DG-Safeguard in various Safeguard investigations to exclude SEZs from the scope of DI.
- ix. The DA should consider only the entitled quantity, which the EOU Company could have sold in the DTA, alone for determining standing of the petitioner.

Views of the domestic industry

16. The submissions made by the domestic industry with regard to scope of domestic industry and standing, considered relevant by the Authority, are as follows:

i. The present investigation has been initiated based on a joint petition by M/s Synergies Castings Limited (EOU) and M/s Kosei Minda Aluminum Company Pvt. Ltd. The production by these two companies holds a major proportion in the Indian production and is eligible to be treated as domestic industry within the meaning of Rule 2(b) of AD Rules read with Rule 23.

ii. There are 6 more known producers of the subject goods in India apart from the petitioners and 3 out of such 6 producers have specifically supported the petition. Thus, out of the total 8 producers, 5 are for the extension of present ADD. The details of the total production and the share of petitioners and others are given in the table below for ready references;

Sl.No.	Name of the Company	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
1	Synergies Castings Limited (Petitioner)	MT	***	***	***	***
2	Kosei Minda Aluminum Company Pvt. Ltd.(Petitioner)	MT	***	***	***	***
3	Minda Kosei Aluminum Wheel Pvt. Ltd.(Supporter)	MT	-	-	***	***
4	Neo Wheels Limited (Supporter)	MT	***	***	***	***
5	Enkei Wheels (India) Limited (Neither supported nor opposed)	MT	***	***	***	***
6	Steel Strips Wheels Limited (Supporter)	MT	-	-	-	***
7	Precision Auto Industries Pvt. Ltd (Neither supported nor opposed)	MT	-	-	***	***
8	JJF Castings Limited(Neither supported nor opposed)	MT	-	-	-	***
9	Total Indian Production	MT	19,502	22,695	30,605	43,671
10	Share of Petitioners	%	50.90	50.84	49.71	42.60
11	Share of Petitioners along with supporters	%	53.02	53.07	65.29	71.01

#Note: Production of Steel Strip Wheels is now considered as per support letter dated 1.2.2019 which was on best estimate basis earlier. Also, production estimates of Enkei is now made based on their AR for 2017-18 which was not available earlier and production for POI was based on prorata basis. Any minor correction in production by petitioners subject to verification is also made in the above table.

- iii. Production by the petitioners during the POI constituted for about 42.60% in the total Indian production which is a major proportion as envisaged in the AD Rule and also in the AD Agreement. The petitioners along with supporters command about 71% share in Indian production.
- iv. Enkei is related to exporters in Thailand and China PR who have exported the PUC to India during the POI. If production by Enkei is reduced to consider only the eligible production in view of the proviso to Rule 2(b), then the share of the petitioners will be more than 57% even without any support.
- v. Rule 5 is not applicable in the case of review investigation and the requirement of domestic industry and standing needs to be seen in view of requirements in Rule 23 in an SSR. The share in Indian production held by the petitioners, however, satisfies even the stringent requirement of standing as if it is a fresh investigation and any contentions to the contrary should be rejected.
- vi. It has been contended by certain parties that they are not sure whether Synergies is an EOU or SEZ looking at the address of the company. It is stated that M/s Synergies Castings Ltd is an EOU and the same was the position at the time of original investigation as well. In fact many parties including Hyundai in the original case filed Writ Petitions challenging eligibility of EOU as DI among other issues.
- vii. It has been contended that EOU should not be part of DI. The Authority found after detailed investigation in the original investigation that EOU can be part of DI in an AD Investigation which was the position taken in many other AD investigation as well concerning EOUs. EOU was considered as eligible DI in a recent Safeguard matter concerning Solar Cells into India even though SEZ was excluded. The Finding read as follows: *"I hold that the provision of Sales to DTA by a SEZ unit as an exception with features varying in different cases, does not justify a SEZ unit to be considered as a domestic producer in the context of trade remedial measures keeping in view the context of the larger framework of SEZ Act, 2005. Therefore the scope of DI in this investigation is restricted only to the producers i. e. M/s Indosolar Limited (EOU) and M/s Jupiter Solar Power Limited, which includes the EOU unit also, since they are physically located in DTA governed by Foreign Trade Policies though with export orientation. [F. No. 22/1/2018 – DGTR- Safeguard investigation concerning imports of "Solar Cells whether or not assembled in modules or panels" into India]*
- viii. It has been contended that non participation of a related company of one of the petitioners namely M/s Minda Kosei Aluminum Wheel Pvt. Ltd is illegal. The contention has no legal basis. The requirement is to fulfill the major proportion requirement in Rule 2 (b) and any relation between two Indian producers has no bearing on the definition. The definition of domestic industry is "major proportion" specifically read with the proviso and it is nowhere judged in terms of inter se relation of Indian producers. There is no legal or factual mandate for any such related party to still join as a petitioner if the major proportion requirements are met by the participating petitioners.
- ix. In fact, the related party in this case, which is an independent business entity, was not approached to join as petitioner for the reason that the said company started production in 2016-17 and commercial production happened only in POI. While the injury data for the petitioners are available for whole injury period, the full data from the said producer is available for only one or two years. Adding such a data to the petitioner's data will distort the trend and it's not fair to consider injury data of the said petitioner in the context of present case. However, the petition fulfilled the requirements of Rule 2 (b). There is no legal requirement to say that it is mandatory for a petitioner company to come jointly with a related producer and the legal requirement is that the petitioners must fulfill major proportion criteria to qualify as domestic industry. The petition fulfills the criteria of major proportion.
- x. Contrary to the contentions of the opposing parties, the value chain requirements for exporters have no connection to the requirements of Rule 2 (b). Value chain requirement in case of exports is connected to the definition of margin of dumping in Section 9A of CTA which says 'margin of dumping, in relation to an article, means the difference between its export price and its normal value'. To fulfill the requirements of 'its' in the definition, all parties involved in its export to India will have to participate. This requirement has no nexus to the definition of Rule 2 (b).
- xi. It has been contended that the source of information of other producers is not provided. It is not correct. Out of the 8 producers 5 are either petitioners or supporters. Out of the 3 left, two are very small producers and their production was estimated based on market information of the petitioner. However, the remaining leading producer namely Enkei Wheels India Ltd is a listed company and their production was worked out based on their annual reports.
- xii. The share held by the petitioners satisfies the requirements of standing as interpreted by WTO Panel concerning fresh investigations and also as per the previous findings of the Authority in SSR. The definition of DI as meant in Article 3.1, 4.1 and 5.4 has been interpreted by WTO and the definition of DI for the purpose of Article 11 has to be construed as having a major proportion as there is no interpretation of DI under the said Article. The WTO Panel in Argentina - Poultry case found that the word "major" is also defined as "important, serious, or significant. It was found that domestic producers representing 46 per cent of total domestic production fulfills the requirements of Art. 4.1. It was also found that a percentage lower than

50 per cent could be considered a major proportion. In the matter like SSR of Soda Ash from China PR, EU, Kenya, Pakistan, Iran, Ukraine and USA [F.No.7/5/2017-DGAD dated 14.12.2018, Para 15-16], the Authority found that a share of 40% by the petitioners as a major proportion to satisfy the requirements to constitute DI. The share of petitioners in the present case comes within the meaning of a major proportion.

Examination by the Authority

17. Rule 2 (b) of the AD rules defines the domestic industry as under:

“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”

18. The petition has been filed by M/s Synergies Castings Ltd (EOU) and M/s Kosei Minda Aluminum Company Ltd jointly. The petitioners have neither imported the subject goods from the subject countries nor are they related to any other producers/exporters of subject goods in the subject countries or any importer in India. M/s Synergies Castings Ltd (EOU) had been the domestic industry in the original investigation of the present matter.
19. It is noted from the submissions of the petitioners that there are 8 producers of subject goods in India. Producers namely Minda Kosei Aluminum Wheel Pvt. Ltd and Neo Wheels Limited expressly supported the petition at the time of petition itself. Producer namely Steel Strips Wheels Limited expressed its support vide letter dated 1.2.2019. Out of the 8 producers, 3 have not filed submissions to the Authority. It is also noted from the submissions of the petitioners that the production by the petitioners constitutes 42.60% in the total Indian production and about 71% along with the supporters.
20. In view of the above, the Authority holds that production by the petitioners constitutes a major proportion in the total Indian production and further constitutes domestic industry within the meaning of Rule 2(b) of Anti-dumping Rules read with Rule 23 (1B).
21. With regard to the contention of various interested parties that that the position of Synergies Castings Ltd appears to be of SEZ from its address though the Company has claimed it-self to be an EOU, it is noted from the submissions and records of Synergies Castings Ltd that the Company is an EOU. Synergies Castings Ltd was the DI in the original matter and the Company was an EOU then also.
22. It is contended by various parties in this case that Synergies Castings Ltd which is an EOU cannot be treated as an eligible producer to constitute domestic industry within the meaning of Rule 2 (b). It is noted in this regard that one of the petitioners namely Synergies Castings Ltd is an EOU unit and the same Company was treated as domestic industry in the original case as well. The opposing parties raised such issues on eligibility of EOU in the original investigation also and the view taken by the Authority was as follows which is relevant for this investigation also as the present matter is a Sunset Review of Anti-dumping duty already in force;
- “26. After detailed examination of the factual and legal provisions as elaborated in the preceding paragraphs, the Authority determines that M/s Synergies Castings Limited accounts for a major proportion of the total domestic production of the subject goods during the POI and thus constitutes domestic industry within the meaning of the Rule 2 (b) and satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5 (3) of the Anti-dumping Rules”.*
23. It is also noted that many parties such as Hyundai had challenged the eligibility of an EOU as a DI in the original matter in Writ Petitions and there have not been any adverse judgment given on the treatment as DI given to the EOU by the Authority.
24. It is contended by some of the interested parties that only the domestic entitlements of the EOU should be considered to calculate total Indian production if the Authority decides to include EOU within the meaning of domestic industry. It is noted in this regard that the requirement of major proportion under Rule 2 (b) of AD Rules is specific to total Indian production and not in light of sales. Total production alone is relevant. Accordingly, the claims are rejected.
25. It is contended by various parties that Minda Kosei Aluminum Wheel Pvt. Ltd, which is a related party of one of the petitioners namely M/s Kosei Minda Aluminum Company Ltd, ought to have participated in the present

investigation as a petitioner and not as a supporter. Against which the petitioners have submitted that there is not legal requirement for such a related entity to participate as a joint petitioner if the petition satisfies the major proportion requirements of Rule 2 (b). It is also submitted by the petitioners that Minda Kosei Aluminum Wheel Pvt. Ltd started production only in 2016-17 and injury data for this producer is not available for the two base years which will lead to distorted injury examination. The Authority has examined the claims of the parties in the present matter and notes that the requirement in an Anti-dumping application is to fulfill the conditions of Rule 2 (b) while claiming the status of domestic industry. Such conditions are fulfilled in the present case by the petitioners as the share of petitioners in the total Indian production is found to be a major proportion i.e. at 42.60%. Accordingly, the contentions of the interested in this regard are rejected.

E. ISSUES CONCERNING CONFIDENTIALITY CLAIMS

Views of the producers/exporters, importers and other interested parties

26. The submissions made by the exporters/importers/other interested parties during the course of the investigation with regard to excessive confidentiality and considered relevant by the Authority are as follows:
- i. The petitioners have claimed excessive confidentiality and filed an incomplete petition. In response to Section-VI (Costing Information) of the Application the petitioner has not furnished any information at all. The Domestic Industry has replied to the questions raised in Part VI of the petition "*Enclosed as confidential Annexure-6.2 to 6.13*". However, Annexures 6.2 to 6.13 have been claimed as confidential.
 - ii. Petitioners have not provided sufficient reasons as to why confidentiality was claimed and why summarization was not possible for certain information. The petitioners are required to show justification for their claim but have failed to do so. Accordingly, it is evident that the petitioners have not provided complete information as required under the Application.
 - iii. The petitioner has withheld certain information and also resorted to excessive confidentiality.
 - iv. The petition suffers from excessive confidentiality. The petition provides absolutely no information with respect to Petitioner's policy regarding its distribution channels, commission/discount policy, credit terms, normal value calculation etc. Excessive claim of confidentiality by the Petitioners is in violation of Article 6.5.1 of the WTO AD Agreement and Rule 7 of the Anti-Dumping Rules.
 - v. The Petitioners have claimed excessive confidentiality in the sense that they have not made available their annual report in the public file.
 - vi. Excessive confidentiality is claimed and documents like annual report of a public limited company are not provided.
 - vii. The Petitioners have either not provided requested information at all or have not provided any basis or supporting evidence for the information provided in the petition.

Views of the domestic industry

27. The submissions made by the domestic industry with regard to excessive confidentiality, considered relevant by the Authority, are as follows:
- i. The exporters and importers participating in the present investigation have resorted to excessive confidentiality.
 - ii. The NCV version of the Responses filed by exporters/importers does not permit any understanding of various claims made by them.
 - iii. The claims of confidentiality by the responding parties are in violation of Rule 7 of AD Rules.
 - iv. Companies like Ford have raised contentions on PUC without disclosing the core facts so as to restrict the DI from providing adequate comments.
 - v. The petitioners have given either the actual details of injury parameters or an indexed summary so as to enable the other parties to understand the case. But no such information is available with regard to exports made by the responding exporters or imports made by the importers.
 - vi. It has been contended that DGTR should not have initiated the present case as the petitioner resorted to excessive confidentiality and many data confidential impacting the rights of the opposing parties to

comment upon. The contention has no basis. Confidentiality has been claimed as per Rule 7 that too after providing reason for such claims of confidentiality.

Examination by the Authority

28. Submissions made by the interested parties with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority are examined and addressed accordingly. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis was directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis. The Authority made available the non-confidential version of the evidences submitted by various interested parties in the form of public file. The information related to imports, performance parameters and injury parameters of domestic industry has been made available in the public file on the above basis. Information claimed as business sensitive by various parties in their submissions have been kept confidential as per the consistent practice.

F. MISCELLANEOUS SUBMISSIONS

Views of the producers/exporters, importers and other interested parties

29. Certain miscellaneous submissions were also put forward by the exporters/importers/other interested parties pertaining to miscellaneous issues which are as follows as found relevant:
- i. The petitioner has not brought about any substantive evidence to prove the condition for initiation of the sunset review of anti-dumping investigation.
 - ii. The petition does not meet the evidentiary and legal standards as per the AD Agreement and also the AD Rules.
 - iii. The petitioner updated DGCI&S transaction wise data for one quarter of the POI after initiation however, certain other aspects in the petition which has a bearing on the same was not updated.

Views of the domestic industry

30. The submissions made by the domestic industry pertaining to miscellaneous issues are as follows:
- i. It has been contended that the petition does not meet the evidentiary and legal standards as per the AD Agreement and also the AD Rules. The contention is not of any merit. Petition contained all relevant information to justify an investigation under Rule 23 (1B). Petition contained all relevant information to examine dumping, injury and causal link and likelihood factors such as information on excess capacity in China PR, evidences on measures by US on Chinese exports including the PUC etc. On the contrary, the opposing parties could not make any submissions to controvert the likelihood claims of the petitioner anywhere in their submissions.
 - ii. It is contended that the petitioner updated DGCI&S T/T data for one quarter in the POI post initiation however certain other aspects in the petition which has a bearing on the same was not updated. The contention is not true. The petitioner updated the T/T import data and all the relevant annexure which is connected to such import data. The change in import data for a quarter did not warrant any redrafting of the petition as the basic narrative of the petition remained the same even after considering the updated import data for a quarter in the POI. Such have been the practice in many cases and there is no impediment in such approach.

Examination by the Authority

31. The various submissions made by the interested parties and the petitioners with regard to miscellaneous issues as recorded above have been examined and addressed below:
- i. With regard to the contention that the petitioners has not brought about any substantive evidence to prove the condition for initiation of the sunset review of anti-dumping investigation, it is noted that the present case was initiated after receipt of information to justify an initiation under Rule 23.
 - ii. Further, the Authority notes that the law clearly envisages that the anti-dumping duty can be extended further from time to time, if it is found that dumping and consequent injury to the domestic industry is likely to recur in the event of expiry of anti-dumping duty in force. The Authority recommends anti-dumping duty only after

following the requirements prescribed under the laws. The petition warranted an initiation and the relevant facts which led to the initiation of review investigation.

G. METHODOLOGY AND DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE & DUMPING MARGIN

Views of the producers/exporters, importers and other interested parties

32. The following submissions were made by the producers/ exporters/ importers/ other interested parties with regard to normal value, export price and dumping margin.
- i. The response of Baoding Lizhong and New Thai was rejected on the ground that its trader namely Hyundai Glovis Co., Ltd. and Ford Motor Company (Thailand) Ltd. respectively have not filed the questionnaire response. The said traders are unrelated traders of Baoding Lizhong of New Thai respectively. As per law, it is nowhere mentioned that unrelated trader shall file the response. However, in present case, Minda Kosei is a related company and not filed the detailed response, thus, the application of Kosei Minda should be rejected.
 - ii. The Petitioners have simply stated that it could not find any price details with respect to the prices in a market economy third country or the constructed normal value in a market economy third country. The application is clearly incomplete. The Designated Authority must exhaust the first two options provided in the AD Rules to arrive at the normal value in the present investigation.
 - iii. The Petitioners' submission and data on normal value is inconsistent with the investigating practices followed in various other countries and jurisdictions such as the EU. Any interpretation adapted by the Designated Authority for Para 7 of Annexure I to the AD Rules cannot be different from that applied by the European Commission as well as the Hon'ble Supreme Court of India's finding in Shenyang Matsushita case.
 - iv. The Petitioners have erroneously equated its cost of production required for the computation of normal value with the costs incurred by it in India. Petitioners' cost of production would be relatively different than such foreign producers, especially in China PR, who can procure all components locally to manufacture the subject product. The Petitioners have adduced no positive evidence or basis on which it adopted its cost of production for computing the normal value, thus, failing the test of evidentiary requirements under the ADA.
 - v. It is submitted that in accordance with relevant provisions of the Protocol on China's accession to the WTO, the "surrogate country" practice in Anti-Dumping actions should be lacking in multilateral legal basis since 11th Dec, 2016. Such practice is bound to expire from then on. We therefore request the Indian investigating authority not to use "surrogate country" methodology in calculating the normal value for this case, regard less whether treating China as a market economy country.

Views of the domestic industry

33. The following submission was made by the domestic industry with regard to normal value, export price and dumping margin:
- i. The bases of claims of NV, EP and DM for the subject countries have been provided in the petition and in the updated annexure post initiation along with the submission that China PR should be treated as NME country for the purpose of determination of normal value.
 - ii. Though there are parties who have filed their EQ Response from China PR, such producers/exporters from China PR have not rebutted the presumption of Non Market Economy by replying to the relevant Supplementary questionnaire format. Thus, there are no grounds whatsoever to grant MET to China PR in the present case and Normal Value for Chinese producers should be determined based on Para 7 of Annexure I to the AD Rules.
 - iii. Also, the sampled company namely CITIC Group could not establish Market Economy status in the original case also and their Response had to be rejected as evident in the Final Findings of the original case.
 - iv. Constructed Normal Value as claimed in the petition shall be the appropriate methodology and we request the Authority to adopt the same for the purpose of determination of dumping margin. Normal value on such basis shall be applicable for Korea RP and Thailand as well since there is no cooperation from producers/exporters from Korea RP and Thailand as well.
 - v. The petitioner has claimed export price based on DGCI&S transaction wise data. The same may be considered for the determination of export price. The information on normal value and export price submitted show significant level of dumping margin from subject countries even during the POI which signifies dumping will only intensify in the event of expiry of present duties.

- vi. It appears that CITIC Dicastal Co., Ltd purchases PUC from anyone and everyone and exports. No individual margin should be granted to the company in such a scenario. The above facts also show that Citic Dicastal Co Ltd is not just one entity but it is a conglomerate of multiple producers of PUC. It is not clear how many companies are really involved in the production of subject goods that was exported to India by Citic Dicastal Co Ltd. The chances are that PUC produced by Citic Dicastal Co Ltd may have been exported to India by other companies as well. This needs thorough investigation. This company was not granted individual margin nor the market economy status in the original case as the company could not establish such claims.

Examination by the Authority

a. Normal Value for producers/exporters of subject goods in China PR

34. The Authority notes that none of the producer/ exporter from China PR have filed the supplementary questionnaire response wherein they were sought to rebut the presumptions as mentioned in para 8 of Annexure 1 of the Antidumping Rules.. Under the circumstances, the Authority has to proceed in accordance with Para 7 of Annexure - I to the Rules in this regard.
35. In view of the above, the normal value for the PUC imported from China PR into India is determined based on facts available. Cost of production as optimized for the petitioners after reasonable additions for selling, general & administrative expenses and reasonable profit margin has been considered. Accordingly, the normal value has been constructed for the PUC during the POI as given in the dumping margin table herein below.

b. Normal Value for producers/exporters in Korea RP and Thailand

36. The Authority notes that no producer/ exporter from Korea RP and Thailand have responded to the Exporters Questionnaire in the present investigation in the form and manner prescribed. Therefore, the normal value in their cases has been determined on the basis of best facts available on record which is provided in the Dumping Margin Table herein below.

DETERMINATION OF EXPORT PRICE

37. The examination of the Exporter Questionnaire Responses shows that the Responses filed by the following parties were incomplete and cannot be considered for individual margin:
- (1) M/s Boading Lizhong Wheels Manufacturing Co. LTD, China, PR, a producer and exporter of subject goods to India.
 - (2) M/s New Thail Wheels Manufacturing Co., Ltd., Thailand, a producer and exporter of subject goods to India.
38. It was noted that even after rejection of above Responses, there are still large number of producers/exporters who have filed the Exporter Questionnaire Responses Hence the Authority decided to limit its findings to a reasonable number of producers/exporters in terms of Rule 17 (3) of Anti-dumping Rules. Accordingly, the eligible producers/exporters selected in the sample for further examination on the basis of quantum of export to India during the POI are as follows:
- i. CITIC Dicastal Co., Ltd, China PR
 - ii. Binzhou Movever Dicastal Wheel Co Ltd, China PR
 - iii. Qinhuangdao Dicastal Sinolion Wheels Co Ltd, China PR
 - iv. Qinhuangdao Xinglong Wheels Co Ltd, China PR
 - v. SMX Dicastal Wheel Manufacturing Co Ltd, China PR

a) Determination of Export Price for sampled producers and exporters in China PR

39. The Exporter Response of CITIC group was examined and verified to the extent possible. M/s CITIC Dicastal is involved in direct exports to unrelated importers in India. It exports the subject goods which are produced by himself and also procures from other producers within the group and outside. The CITIC Group has 8 related companies involved in production of PUC, namely:

1. CITIC Dicastal Co Ltd,
 2. SMX Dicastal Wheel Manufacture Co., Ltd.,
 3. Qinhuangdao Daikaxinglong Wheel Manufacturing Co., Ltd.,
 4. Qinhuangdao Xinglong Wheels Co Ltd,
 5. Guangzhou Dicastal Asahi Aluminium Casting Co., Ltd.,
 6. Chongqing Dicastal Jieli Wheel Co., Ltd.,
 7. Wuxi Dicastal Wheel Manufacturing Co., Ltd.,
 8. Yangzhou Dicastal Wheel Manufacturing Co., Ltd.,
40. It was explained that only the producers at Sr. No.1, 2, 3 & 4 are involved in the export of subject goods to India. The relevant producers have filed questionnaire response separately. None of the producers except M/s CITIC Dicastal Co Ltd have exported the subject goods to India. M/s CITIC Dicastal Co Ltd has also procured subject goods from M/s Binzhou Movever Dicastal Wheel Co., Ltd., China PR for exports to India.
41. M/s CITIC Dicastal stated that they are not just the traders of PUC rather they are responsible for design and development of product, bidding and price negotiation with OEM, draw production plan and send to the technicians of the producer and monitor the production and the product quality. They stated that they own the brand "Dicastal" and other producers are only in the process of manufacture as directed by them. Therefore, they should be specifically mentioned in the final notification and duty recommendations by the Authority being an important player in the process of export of PUC.
42. M/s CITIC Dicastal stated that majority of the sales to India were made on Ex works /Ex godown and only some were on FOB basis. In case of sale on ex works basis there is adjustment only on account of bank charge and credit cost, whereas for FOB transactions the adjustments have also been claimed on account of inland transportation and port & other related expenses. Claims of adjustments regarding above cited items of adjustments were accepted and Net Export Price is mentioned in the Dumping margin table below.

b) Export Price for producers/exporters from Korea RP and Thailand

43. The Authority notes that no producer/exporter from Korea RP and Thailand have responded to the Authority in the present investigation in the form and manner prescribed. In view of the same the Authority has determined net export price for all the producers/exporters in Korea RP and Thailand based on best available facts in terms of volume and value of imports reported by DGCI&S on transaction to transaction basis and the same is given in the Dumping Margin Table herein below.

DETERMINATION OF DUMPING MARGIN FOR PRODUCERS/EXPORTERS IN CHINA PR, KOREA RP AND THAILAND

44. The basis of determination of normal value and net export price is provided hereinabove. The net export price to India has been compared with the normal value to determine the dumping margin. The dumping margin during the POI for all the exporters/producers from the subject countries has been determined as shown in the Dumping Margin Table below.

Dumping Margin Table

Sr. No.	Producer	Exporter	CNV US\$/ KG	NEP US\$/ KG	DM US\$/ KG	DM %	DM (Range)
Dumping Margin In case of Sampled Producers/Exporters from China PR							
1	CITIC Dicastal Co Ltd, SMX Dicastal Wheel Manufacture Co., Ltd., /Qinhuangdao Daikaxinglong Wheel Manufacturing Co., Ltd.,	CITIC Dicastal Co Ltd,	***	***	***	***	10-20

Sr. No.	Producer	Exporter	CNV US\$/ KG	NEP US\$/ KG	DM US\$/ KG	DM %	DM (Range)
	/Qinhuangdao Xinglong Wheels Co Ltd/ Binzhou Movever Dicastal Wheel Co Ltd,						
Dumping Margin In case of Un-Sampled Producers/Exporters from China PR							
2	Zhejiang Jinfei Kaida Wheel Co., Ltd		***	***	***	***	10-20
3	Shandong Shuang Wang Aluminium Industry Co td,		***	***	***	***	10-20
4	Zhejiang Shuguang Industrial Co., Ltd		***	***	***	***	10-20
Dumping Margin in case of non-cooperative Producers/Exporters from China PR							
5	Any	Any	***	***	***	***	35-45
Dumping Margin In case of All Producers/Exporters from Korea RP							
6	Any	Any	***	***	***	***	0 - 10
Dumping Margin In case of All Producers/Exporters from Thailand							
7	Any	Any	***	***	***	***	5 - 15

45. It is seen that the dumping margin is positive for all the subject countries including the co-operative responding producer exporters. The Authority has decided to extend the margin of the sampled exporter to the other non-sampled cooperative responding producers / exporters from China

H. ASSESSMENT OF INJURY

46. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure –II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “... *taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...*”. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
47. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the AD Rules.

Views of the producers/exporters and importers

48. The submissions made by the exporters/importers/other interested parties during the course of the investigation with regard to the injury claims of the domestic industry and considered relevant by the Authority are as follows:
- The facts on the record reveal that, the petitioner has exaggerated the increased import of the subject product, and deliberately invented injury to the domestic industry. The imports from the subject countries have at no point in time during the period considered put any sort of volume pressure on the sales of the petitioner. It may be seen that the demand has increased to 213 during the POI from 100 during the base year 2014-15. However, the imports from subject countries have not increased in tandem with demand; it has just increased from 100 during the base year 2014-15 to 133 during the POI.
 - Imports from other countries have increased substantially from 100 during the base year 2014-15 to 377 during the POI.

- iii. The sale of domestic industry has also increased substantially from 100 during the base year 2014-15 to 225 during the POI. Sales of other producers in India have also increased tremendously from 100 during the year 2014-15 to 307 during the POI. It clearly shows that there is no injury to the domestic industry by the imports of subject goods in India.
- iv. Share of imports from China PR has come down sharply from 78.74% to 48.35% during the POI as compared to the base year 2014-15. Share of total imports from subject countries have also declined from 82.06% during the base year 2014-15 to 61.65% during POI. Share of total imports from other countries have increased significantly from 17.94 to 38.35%, more than double, during the POI.
- v. There is no correlation between the cost of sales and selling price of domestic industry. Cost of sales has increased from 100 during the base year 2014-15 to 106 during the POI. Whereas, the selling price have not increased in tandem with the increase in cost of sales. It has remained almost same as 100 during the base year 2014-15 to 100 during the POI.
- vi. Petitioners are increasing the capacity every year. Production and Capacity Utilization have also increased substantially during the POI to 207 and 159 respectively as compared to 100 during the base year 2014-15. Capacity utilization was at maximum.
- vii. Sales volume of the petitioners has increased substantially during the POI to 228 as compared to 100 during the base year 2014-15. Export sales have also increased substantially during POI. Thus, there is no injury to the domestic industry.
- viii. As per information provided by the Petitioners in the Petition, the sales of Domestic Industry is seen to have substantially increased with the trend being 100 in 2014-15 to 225 during the POI. Further, while the imports from the subject countries has not shown any significant increase during the injury period, it is seen that the imports from other countries has significantly increased from 3472 MT in 2014-15 to 13118 during the POI. Further, the sales of other Indian producers can also be seen to have significantly increased with the trend shown 100 in 2014-15 to 307 during the POI.
- ix. It appears that no injury has been suffered by the Petitioners on account of the alleged dumping from the subject countries. On the contrary, the health of the Petitioners as well as the other domestic producers of PUC has improved, as is evident from their increase in sales of PUC in the domestic market.
- x. Alleged injury, if any, suffered by the Petitioners would appear to be not on account of the alleged dumping of PUC but on account of self-inflicted injury occasioned to the Petitioners. The Petitioners have made investments during the POI for substantial increase in installed capacity. The losses being suffered by the Petitioners at present are not on account of dumping but due to the huge investments made by the Petitioners for increase in installed capacity.
- xi. As per their own information, the sales realization per unit of the PUC has increased for the Petitioners during the POI. The number of employees of the Petitioners has increased and so has the productivity per day increased.
- xii. There is no causal link between the alleged dumping and injury being occasioned to the Petitioners and the Company is not dumping the PUC in India. In the absence of a causal link, the Authority ought to terminate the present investigation.
- xiii. There is no material injury being suffered by the DI and there is no likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury. The increase in demand of subject goods in India being successfully captured by the domestic producers demonstrates lack of volume effects of imports from subject countries.
- xiv. The DI showed a negative trend only with regard to two profitability parameters. However, this cannot be attributed to dumping and the same is on account of inter se competition.
- xv. Installed capacity of the Domestic Industry increased by 30%. Production of the Domestic Industry increased by 107%;
- xvi. Capacity utilization also significantly increased by 59% despite addition of additional capacity and stood at a stellar 92%;
- xvii. The Domestic Industry demonstrated healthy year on year growth with respect to capacity, production, sales, capacity utilization, employment and productivity.
- xviii. Ability to raise capital for further investments was also not impacted as the Domestic Industry was able to add to its existing capacity and has plans to set up more plans with huge investments;

- xix. There was no price undercutting, price suppression and price depression due to imports from the subject countries. The alleged price suppression/depression, if any, was due to inter-se competition between the domestic producers as the Domestic Industry was selling its product far below the prices of imports from the subject countries and neither did it price its goods according to the trend of imports over the injury analysis period.

Views of the domestic industry

49. The following are the submissions with regard to injury related issues made by the domestic industry and considered relevant by the Authority:
- i. The import data shows that the imports from subject countries increased significantly by the POI and increase in import has been substantial in case of all the subject countries. This shows the continued preference for imported material at dumped prices which makes the continuation of present ADD essential to counter act dumping and consequent injury to mitigate the effects of such dumping on domestic industry.
 - ii. The increase in import volume from subject countries is coinciding with a reduction in price which shows the lower dumped price of imports is ensuring the preference for them and the exporters can maintain the volume only by reducing the price.
 - iii. The imports though declined in relation to Indian demand and production, the share held by dumped imports in Indian demand still has been very significant. There have been increase in imports from certain other countries as well and a petition was recently filed against the same which was rejected for absence of sufficient grounds. DI shall approach the Authority once again when there is sufficient ground for such a petition.
 - iv. The situation of the domestic industry remained positive in the POI in terms of volume parameters such as capacity, production, sales and capacity utilization. However, the performance of the domestic industry showed serious declines in terms of price parameters such as profit per unit, profitability, ROCE etc.
 - v. The profitability and ROCE of the DI was at the lowest and negligible levels during the POI in comparison to the previous years in the injury period. The overall performance of the DI which improved immediately after the imposition of ADD in both volume and price parameters, started to decline swiftly as the exporters continued to export the subject goods to India at dumped rates with consistent reduction in prices. Thus, the benefits of ADD in place were vitiated as a result of continued dumped imports from subject countries.
 - vi. Apart from positive dumping margin, price undercutting and underselling has been positive in the POI except negative undercutting in case of Korea RP. Negative undercutting from Korea RP is negligible as the Korean exporters have been reducing the prices consistently which resulted in the increase in volume.
 - vii. The impacts of positive price undercutting were mitigated to some extent by the ADD in force. When price undercutting is positive at a time when ADD is in force, the obvious outcome of any expiry of present ADD shall be that the level of undercutting will aggravate disastrously if the duties are allowed to expire.
 - viii. The presence of the dumped imports at such significant level signifies that there is much likelihood of such imports at dumped rates getting aggravated and soon the companies turning to losses as a result of unfair price competition from dumped imports.
 - ix. The performance of the DI as per the petition shows that it is still vulnerable to dumped imports and what has been helping the domestic industry to maintain its performance at least in terms of volume parameters is the ADD in force and the expiry of the same is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry.
 - x. The dumped imports from subject countries which increased significantly over the years were also at a significantly positive price undercutting level. This in turn has forced the DI to realize a price which is not remunerative enough though it could achieve volume improvements.
 - xi. The increase in sales of the DI with a lower realization shows that the users prefer the domestic material but the presence of dumped imports makes any remunerative price realization a challenge for the DI. The positive price undercutting prevented price increases which could have been possible in the absence of continued dumping and as a result the profitability and ROCE of the DI declined sharply by the POI.
 - xii. The non-attribution analysis as presented in the petition shows clear causal link between continued dumping from subject countries and injury suffered by the domestic industry on account of the same. The said analysis is not reproduced here but relied upon. Import from subject countries were at dumped prices during the POI. Such imports have shown significant growth over the years.

- xiii. Absence of dumped imports at price undercutting levels would have enabled the DI to increase the prices so as to achieve reasonable price and profits/returns. On the contrary, dumping prevented better performance. However, the ADD in force minimized the effect of continued dumping from subject countries and this establishes the need for continuation of such ADD for further time and the causal link is clearly visible in the fact that ADD was protecting the DI from serious effects of dumping which makes the continuation of present ADD very essential in the present case.
- xiv. 5 out of the 8 producers are part of the present investigation either as petitioners or supporters. Out of the three who have not supported or opposed the investigation, only Enkei is a large scale producer but this company is related to exporters from China PR and Thailand. 5 producers being part of the present case establishes that the significant factor which is impacting all the producers is dumped imports and contentions of inter se competition have no merit. Existence of healthy competition between producers only adds value to the customers.
- xv. The contentions of opposing parties in injury are not true and are only self-serving statements which are denied. The overall performance of the DI which improved immediately after the imposition of ADD in both volume and price parameters, started to decline swiftly as the exporters continued to export the subject goods to India at dumped rates with consistent reduction in prices and at undercutting levels. Thus, the benefits of ADD in place were vitiated to some extent as a result of continued dumped imports from subject countries.

Examination by the Authority

50. The injury analysis made by the Authority hereunder addresses various submissions made by the other interested parties.
51. In consideration of the various submissions made by the interested parties in this regard, the Authority proceeds to examine the current injury, if any, to the domestic industry before proceeding to examine the likelihood aspects of dumping and injury on account of imports from the subject countries. For this purpose, the Authority has considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization and the magnitude of margin of dumping etc in accordance with Annexure – II of the Rules.

Cumulative Assessment

52. Article 3.3 of WTO agreement and Annexure II para (iii) of the Anti-dumping Rules provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:
- The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent (or more) of the import of like article or where the export of individual countries is less than three percent, the imports collectively account for more than seven percent of the import of like article, and*
 - Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.*
53. In view of the above, the Authority considers it appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from exports of the subject goods from the subject countries

Volume Effect of Dumped Imports and Impact on Domestic Industry

i. Assessment of Demand

54. The Authority has defined, for the purpose of the present investigation, demand or apparent consumption of the product concerned in India as the sum of domestic sales and captive consumption of the applicant and imports from all sources. The demand so assessed is given in the table below:

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Imports from China PR	MT	15,236	16,185	14,481	16,501
Imports from Korea RP	MT	218	305	697	854
Imports from Thailand	MT	424	1,105	2,367	3,686

Total Imports from Subject Countries	MT	15,878	17,595	17,545	21,042
Total Imports from Other Countries	MT	3,472	4,500	8,036	13,087
Domestic Sales of Petitioners	Indexed	100	127	180	229
Domestic Sales of Other Producers	Indexed	100	116	159	307
Total Demand	MT	31,608	36,912	46,220	67,534
Trend	Indexed	100	117	146	214

55. It is noted that the demand for the subject goods has increased throughout the injury period including the POI. Demand in fact has more than doubled during the POI as compared to the base year.

ii. **Import Volumes and Share of Subject country**

56. The transaction wise import data has been procured from DGCI&S and is analyzed as below:

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
China PR	MT	15,236	16,185	14,481	16,501
Korea RP	MT	218	305	697	854
Thailand	MT	424	1,105	2,367	3,686
Total Imports from Subject Countries	MT	15,878	17,595	17,545	21,042
Total Imports from other countries	MT	3,472	4,500	8,036	13,087
Total Demand	MT	31,608	36,912	46,220	67,534
Production of DI	Indexed	100	116	153	187
Market Share in Import Volume					
China PR	%	78.74	73.25	56.61	48.35
Korea RP	%	1.12	1.38	2.72	2.50
Thailand	%	2.19	5.00	9.25	10.80
Share of Subject Countries	%	82.06	79.63	68.59	61.65
Share of Other Countries	%	17.94	20.37	31.41	38.35
Total	%	100	100	100	100
Imports from subject countries relative to					
Indian consumption	%	50.23	47.67	37.96	31.16

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Production of DI	Indexed	100	95	72	71

57. Based on the foregoing data, it is noted that:

- a. The Imports from the subject countries have increased in the injury period and the POI in absolute terms.
- b. The share of imports from subject countries in relation to Indian production and consumption has decreased.

Price Effect of the Imports on the Domestic Industry

58. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

i. Price Undercutting

59. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the petitioner has given information regarding landed price of imports based on DGCI&S data and compared it with net sales realization of the domestic industry(calculated at the ex-factory level). The domestic prices and margin of undercutting is shown as per the table below:

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Landed Value					
China PR	Rs./Kg	292.27	326.65	318.65	311.28
Korea RP	Rs./Kg	281.53	328.91	311.02	332.07
Thailand	Rs./Kg	294.17	319.79	345.89	289.15
Subject Countries	Rs./Kg	292.18	326.26	322.03	308.25
Domestic Selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	97	95	99
Price Undercutting- Rs Per KG					
China PR	Rs/KG	***	***	***	***
Korea RP	Rs/KG	***	***	***	***
Thailand	Rs/KG	***	***	***	***
Subject countries	Rs/KG	***	***	***	***
Price Undercutting %					
China PR	% of LV	***	***	***	***
Korea RP	% of LV	***	***	***	***

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Thailand	% of LV	***	***	***	***
Subject countries	% of LV	***	***	***	***
Price Undercutting Range					
China PR	Range	5-15	Negative	Negative	1-10
Korea RP	Range	10-15	Negative	Negative	Negative
Thailand	Range	5-15	Negative	Negative	5-15
Subject countries	Range	5-15	Negative	Negative	1-10

60. It is noted that price undercutting is positive in case of imports from China PR and Thailand and negative in case of Korea RP during the POI. However, price undercutting considered cumulatively is positive for subject countries.

ii. Price Underselling

61. The domestic industry has given information with regard to price underselling suffered on account of dumped imports from subject countries. For this purpose, the Authority has determined NIP for the domestic industry and has compared it with the landed price of imports during POI (landed value as per DGCI&S data).

Particulars	Unit	China PR	Korea RP	Thailand
Landed Value for POI	Rs./Kg	311.28	332.07	289.15
Non-Injurious Price	Rs./Kg	***	***	***
Injury Margin	Rs./Kg	***	***	***
	%	***	***	***
	Range	10-20	5-15	20-30

62. It is seen that the landed price of the subject goods from subject countries were lower than the NIP determined for the domestic industry and dumped imports are resulting in underselling effect on domestic industry prices.

iii. Price Suppression/Depression

63. In order to determine whether the effect of imports is to suppress/depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred, the domestic industry has given information for the changes in the costs and prices over the injury period as below:

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Cost of Sales	Rs./Kg	***	***	***	***
	Indexed	100	98	96	102

Domestic Selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	97	95	99
Landed Value-Subject Countries	Rs./Kg	292.18	326.26	322.03	308.25
	<i>Indexed</i>	100	112	110	106

64. It is noted that cost of sales of the domestic industry increased during the POI as compared to the base year, however, selling price in the same period decreased slightly. The landed price of imports from subject countries was lower than the selling price and also the cost of sales of domestic industry in the POI indicating price suppression/depression effects on account of landed price of imports from subject countries. It has been claimed by the DI that they could not increase the prices to desired level because of dumped imports in the market.

I. ECONOMIC PARAMETERS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

65. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

i. Production, Capacity, Capacity Utilization and Sales

66. The performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity & capacity utilization was as follows:

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Installed Capacity	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	103	114	130
Production	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	116	153	187
Capacity Utilization	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	113	135	144
Domestic Sales	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	127	180	229

67. It is noted that Installed capacity, production, capacity utilization and sales of the domestic industry have increased over the injury period and the POI.

ii. Profitability

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Cost Of Sales	Rs./Kg	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	98	96	102
Domestic Selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	97	95	99
Profit / (Loss) PBT	Rs./Lakhs	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	92	37	-97
Profit / (Loss) PBT	Rs./Kg	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	72	21	(42)
Profit / (Loss) PBIT	Rs./Lakhs	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	102	67	83
Profit / (Loss) PBIT	Rs./Kg	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	80	37	36

68. It is noted that the profitability of the domestic industry decreased over the injury period. Profit on domestic sales before interest and tax also declined over the years and is at the lowest level during the POI.

iii. Return on capital employed

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
ROCE	%	***	***	***	***
	Range	100	100	51	56

69. It is noted that the Return on Capital Employed (ROCE) of the domestic industry declined in the injury period and the POI.

iv. Market Share in demand

70. The effects of the dumped imports on the market share of the domestic industry have been examined as below:

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Domestic Industry	%	***	***	***	***
Trend	<i>Indexed</i>	100	108	123	107
Other Indian Producers	%	***	***	***	***

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Trend	Indexed	100	100	109	144
Imports from Subject Countries	%	50.23	47.67	37.96	31.16
Trend	Indexed	100	48	38	31
Imports from Other Countries	%	10.98	12.19	17.39	19.38
Trend	Indexed	100	111	158	176

71. From the above table, it is noted that the market share of imports from subject countries declined over the years and through POI. At the same time market share of domestic industry and also other Indian producers increased.

v. Inventories

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Inventory	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	109	121	157
Inventory as No. of days of Production	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	93	79	84
Inventory as No. of days of Sales	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	89	77	78

72. It is noted that the inventory with the domestic industry increased in the POI. However, the same has declined in terms of inventory as number of days of production and sales. However, on account of the nature of the subject goods, the inventory levels are not indicative of any specific injury.

vi. Level of employment and Productivity of the domestic industry

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
No. of Employees	Nos.	***	***	***	***
<i>Indexed</i>	<i>Index</i>	100	105	113	127
Productivity per Employee	MT/Employee	***	***	***	***
<i>Indexed</i>	<i>Index</i>	100	116	153	187

73. It is noted that the employment level of the domestic industry has shown increases in the injury period and POI. Further, productivity per employee also showed increases over the years. These are indicative of positive improvement.

vii. Ability to raise capital investments

74. The Authority notes that given the rising demand of the product in the country, the domestic industry has increased its capacity. However, the petitioners submitted that the ROCE earned on investments already made has declined over the years and very low during the POI and any further investment shall depend up on the sustainability of investments already made.

viii. Level of dumping & dumping margin

75. It is noted that imports from the subject countries continued to entering into the country at dumped prices and the margins of dumping are significant from all sources.

ix. Factors Affecting Domestic Prices

76. The examination of the import prices from the subject countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market, etc., shows that the landed value of imported goods from the subject countries is below the non-injurious price and selling price of the domestic industry, causing price under-cutting and price suppression/depression and under selling effects in the Indian market. The primary factor affecting the domestic prices can be noted as landed value of subject goods from the subject countries.

x. Growth

77. From the information provided by the domestic industry it is seen that the growth was positive in respect of volume parameters such as capacity, capacity utilization and production. However, the performance of the Domestic Industry in terms of profitability and return on capital employed has shown decline over the injury period and the POI.

J. MAGNITUDE OF INJURY MARGIN

78. The Authority has determined the non-injurious price for the domestic industry and compared with the landed values of the subject imports for the sampled cooperative producer exporter from China PR to determine the injury margin. The exporter had made all sales on ex-works basis and then claimed adjustments on various counts for arriving at CIF value of the exports. The Authority noted that importer M/s Ford India Pvt Ltd. has filed response which accounts for 98% of the exports of the sampled exporter hence decided to finalize the CIF value from the response of the importer but the same could not be done as the importer did not cooperate and did not furnish bill of entry for verification of the CIF value inspite of repeated reminders. In view thereof, the Authority obtained DG Systems (transaction wise) data and analyzed it. It was found that the DG Systems data had comparable volume of imports as declared by the sampled co-operative exporter in the response. Accordingly, for calculation of per unit CIF value of the PUC, the DG Systems data has been relied upon for sampled and un-sampled producer exporters. The injury margin has been determined as follows:

Producer	Exporter	Landed value US\$/ KG	Non injurious Price US\$/ KG	IM US\$/ KG	IM %	IM (Range)
CITIC Dicastal Co Ltd, / SMX Dicastal Wheel Manufacture Co., Ltd., / Qinhuangdao Daikaxinglong Wheel Manufacturing Co., Ltd./Qinhuangdao Xinglong Wheels Co Ltd./ Binzhou Movever Dicastal Wheel Co. Ltd.	CITIC Dicastal Co Ltd,	5.48	***	***	***	0-10
Unsampled Producer/exporter		5.48	***	***	***	0-10

CONCLUSION ON INJURY

79. It is thus seen that the Imports from the subject countries have increased in the POI as compared to the base year though the market share of such imports have declined in terms of demand and Indian production. Imports have also increased in the post POI period. The dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market without Ant-dumping duties from subject countries. Dumped imports have had an adverse price effect in terms of price depression and price suppression. The domestic industry is also suffering significant price underselling. With regard to consequent impact of dumped imports on the domestic industry, it is noted that dumped imports from subject countries have adversely impacted the performance of the domestic industry in respect of profits, cash profits and return on investment and domestic industry incurred losses in the POI though the volume parameters registered improvements. Therefore the Authority concludes that the domestic industry is suffering continued injury.

K. CAUSAL LINK AND OTHER FACTORS

80. The Authority has examined whether other factors listed under the Anti-dumping Rules could have contributed to injury to the domestic industry even though the present investigation is a Sunset Review. The examination of causal link between dumping and material injury, if any, to the domestic industry has been done as follows:

(i) Imports from Third Country

81. Present investigation is a Sunset Review investigation and the review concerns the ADD on subject countries alone and the issue of third country imports cannot be addressed in this investigation.

(ii) Contraction in demand

82. The demand for the subject goods has shown an increasing trend. Accordingly, fall in demand cannot be the reason for injury to the domestic industry.

(iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

83. The Authority notes that there is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry. On the contrary there are trade remedial measures in place against exports of PUC from China PR to EU, Australia etc. and Additional customs duties in USA imposed recently.

(iv) Developments in technology

84. The technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, developments in technology cannot be regarded as a factor of causing injury to the domestic industry.

(v) Changes in pattern of consumption

85. The domestic industry is producing the type of goods that have been imported into India. Possible changes in pattern of consumption are not a factor that could have caused claimed injury to the domestic industry.

(vi) Export performance

86. Claimed injury to the domestic industry is not on account of deterioration in export performance of the domestic industry. In fact, exports by the domestic industry have increased along with increase in price. Thus, injury to the domestic sales has been identified and examined, to the extent possible. Relevant details of exports are as follows;

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18 (POI)
Exports	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	117	125	164
Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	111	112	122

(vii) Performance of the domestic industry with respect to other products

87. The Authority notes that the performance of any other products being produced and sold by the domestic industry has not affected the injury assessment made by the Authority in this investigation. The information considered by the Authority is with respect to the product under consideration only.

(viii) Productivity of the domestic industry

88. The Authority notes that deterioration in productivity has not caused injury to the domestic industry. Rather, productivity per employee has seen an increasing trend.

Conclusion of Causal link

89. The examination reveals that dumping of the subject goods from subject countries and consequent injury to the domestic industry continued as seen in this investigation. The non attribution analysis shows the injury suffered by the domestic industry were not on account of any other factors. There is positive dumping margin and injury margin during the POI established for the subject countries except for the sampled co-operative responding exporter from China PR. The likelihood analysis also points to the situation that dumping and consequent injury to the domestic industry will intensify in case Anti dumping duties in force cease to exist.

L. LIKELIHOOD ANALYSIS

90. The Authority is required to examine the likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury in case of cessation of anti-dumping duty, in terms of Annexure II (vii) of the Rules as there are no specific methodologies available to conduct likelihood analysis. Clause (vii) of Annexure II to the rules provides, inter alia for factors which are required to be taken into consideration, viz.:
- A significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;
 - Sufficient freely disposable, or an imminent, substantial increase in, capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian markets, taking into account the ava

- ilability of other export markets to absorb any additional exports;
- c) Whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and
 - d) Inventories of the article being investigated.
91. Further, the Authority is also required to examine any other relevant factor having a bearing on the likelihood of continuation or recurrence of dumping and consequent injury to the domestic industry. All factors brought to the notice of the Authority have been examined to determine as to whether there is a likelihood of continuation or recurrence of dumping or injury in the event of cessation of the duty. The Authority has considered various information, as made available by the domestic industry and other interested parties, in order to evaluate the likelihood of continuation or recurrence of dumping or injury in the present case.
92. The submissions made on the parameters of likelihood of dumping and injury are as follows:

Views of the producers/exporters and importers

93. The submissions of the opposing interested parties, with regard to the likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury are summarized hereunder:
- i. The producers/exporters are exporting the subject goods to third countries at a price higher than in India. Thus, there is no possibility to shift the exports to India. In fact, the exporters can shift the export from India to third countries since they are getting higher price therein.
 - ii. It was submitted that the domestic industry has filed the petition and not the exporters/producers from subject countries. It is the responsibility of the domestic industry to establish that dumping/injury will continue or recur if the duties are revoked.
 - iii. The imports from the targeted countries have at no point in time during the period considered put any sort of volume pressure on the sales of the petitioner.
 - iv. The Petitioners have failed to provide any positive evidence to support its claim that there is a likelihood of dumping and recurrence of injury to the Domestic Industry.
 - v. The Response filed by the cooperating exporters show that there is no excess capacity available with them.
 - vi. The evidence, if any, presented in the case is not even sufficient to determine whether alleged dumping is possible, let alone meeting the legal test of likelihood of dumping. Therefore, we request that the sunset review be terminated on this ground alone.

Views of the domestic industry

94. The submissions made by the Domestic industry with regard to the likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury are as follows:

I. Present and continued Dumping

- i. Dumping margin determined in the original case as well as the present case is significant which shows continuation of dumping in the event of expiry of present duties.
- ii. Current dumping and injury level indicates obvious likelihood of dumping and injury in the event of expiry of present duties. The DI is seriously vulnerable to dumping and consequent injury on account of dumped imports from subject countries.

II. Post POI Imports

- i. The imports in the post POI period were taken from DGCI&S published data and the same is as below:

Subject Countries	POI (April 17- March 18)	Post POI (April 18-Sept. 18)
China P.R.	16,501 MT	9,634 MT
Thailand	3,686 MT	1,808 MT
Korea R.P.	854 MT	342 MT

ii. The above table indicates a clear increase in the six months of the post POI period as compared to the POI.

III. Excess Surplus Production Capacities

- i. China PR has the largest capacity in the world to produce the subject goods. Apart from existing excess capacities, there are large new capacities coming up though the markets to cater the same remains the same with strict barriers to counteract unfair trade practices by Chinese producers of ARWs.
- ii. Based on EU Findings, China PR has a spare production capacity of about 4, 56,846 MT against an Indian demand of 65000 MT to 67000 MT. In such a situation it cannot be believed that dumping will stop in the event of expiry of duties when Chinese producers continued to dump the PUC in India even after AD duties. The EU finding shows as follows;

Type of Company	No. of Companies Concerned	Production Capacity (units)	Spare Capacity (units)
All cooperating responding exporters	21	91804845	12355052
Sampled exporters	4	62589289	
Responding but non cooperating exporters (publicly available information)	31	51700000	15510000
Others (publicly available information)	28	46696776	14009033
Total	84	190201621	41874085

- iii. The details as per EU finding with regard to excess capacity in China PR can be converted as follows in terms of MT/KG as per the average weight of wheels given in the EU finding itself;

Production capacity (units)	190201621
Spare capacity (units)	41874085
Production capacity (MT- Average wheel weight considered as 10.91 Kg as per Para 33 of the EU Finding read with foot note therein)	2075100
Spare capacity (MT)	456846
Indian Demand (MT)	65000-67000

- iv. The data shows existence of about 4.5 Lac MT excess capacities to produce subject goods in China PR whereas the Indian demand is in the range 65000 to 75000 MT only. Since the PUC in the EU Finding and India is at comparable levels, the data on excess capacity in the EU finding is of high evidentiary value.
- v. The information (collated based on bonafide market research reports as procured by the DI) shows there are many new capacities coming up in China PR apart from the existing producers which is at least about 67 in number. The detail of certain new capacities which may include motorcycle wheels also is given below. The data suggests spare capacity will only increase in the near future:

No.	Project	Production capacity (10,000 pieces)	Remarks
1	Liufeng Machinery Hubei Xiantao Project	200	Construction
2	Zhongqin Xinglong Industrial Park Project	300	Phase I put into production
3	Xiamen Sunrise Group Project	25	Phase I construction
4	Anyang Gaojing Aluminium Project	150	Construction
5	Jiangsu Boran Co., Ltd Peixian Project	50	Construction
6	Jiangxi Benhao Cars Project	200	Construction
7	Linzhou Jierun Aluminium Project	500	Construction
8	Xinjiang Shihezi Project	1000	Construction
9	Chongqing Chaoqun Industrial Co, Ltd Project	200	Construction
10	Hubei Daye Hanlong WheelsCo., Ltd Project	300	Construction
11	Huayufeng Laiwu Magnesium Alloy Wheel Project	100	Construction
12	Chongqing Jieli Project	1200	Construction
13	Hebei Meilun Project	500	Partly in production
14	Zhejiang Jili Investment Co.,Ltd Project	500	Signed the contract
15	Henan Jinrui Wheel Project	100	Plan
16	Guizhou Huayufeng Wheel Project	300	Construction
17	Wanfeng Auto Intelligence Project	220	Announcement
18	Guangyuan Anyu Project	150	Construction
19	Taizhou Beisite Huainan Project	60	Signed the contract
20	Zhejiang Jili Decoration Materials Co., Ltd Anhui Mengcheng Project	500	Signed the contract
	Total	6555	

vi. The evidence shows existence of excess capacity in China PR. Such is the situation in case of Korea RP and Thailand as well. The increase in imports from these countries coincides with a reduction in prices signifying the compulsions on the exporters to export more in view of excess capacities.

- vii. The petitioners understand that Korea RP and Thailand have also set up capacities targeting markets like India and likelihood of dumping is evident from these countries from the fact that dumping continued even after duties and in fact the prices from Korea RP and Thailand declined over the bases year by increasing the volume.

IV. Export orientation

The available information on Thailand shows that the producers in Thailand have high export orientation (about 70% of the production is exported) and the industry expects to clock 800000 units in the domestic market and 1200000 units in the export market. Information further shows that producer like Thai Alloy Manufacturing Co Ltd alone have about 1.2 Million units capacity and there are many other large producers of ARWs in Thailand which indicates Thailand has significant excess capacity which can be diverted to robust market like India in the event of expiry of present AD duties.

V. Inventories with the exporters

The subject goods under investigation are such that the buyers are OEMs who go through a process of involving the producers in the manufacturing process of the finished product i.e. automobiles, and the subject goods are then designed and developed as per the requirement and orders of the OEM. In view thereof the levels of inventory with the producers' exporters become irrelevant.

VI. Anti-dumping duties in other markets

- i. There are anti-dumping duties by EU and Australia imposed against exports of ARWs from China PR which is now been extended after SSR. Any expiry of duty in India will benefit the Chinese producers to increase the exports to India.
- ii. The following finding in the EU- SSR of ADD on ARWs from China PR [Commission Implementing Regulation (EU) 2017/109 dated 23 January 2017] is very relevant in the context of present matter also which says as follows;

(75) The PRC exports significant quantities of aluminium wheels to third countries other than the Union, in particular to the US, Japan, Mexico, Canada and India. The same applies to the four cooperating groups. Their export volumes to these markets cover almost 89 % of their total export sales to third countries during the review investigation period.

(78) In the case of export prices from the PRC to Canada, India, Japan and Mexico (together covering roughly 40 % of the total export of the four Chinese sampled groups during the review investigation period) the average sales prices were lower for product types representing around 22 % of the total quantity exported to these countries than their sales prices to the Union. This also points to a likely re-orientation of Chinese exports to the Union if measures were to expire. Re-orientation from India is particularly likely since this country has introduced definitive anti-dumping measures in May 2015, i.e. in the middle of the review investigation period.

(240) Several parties claimed that there is no likelihood of recurrence of injury because the Union industry would benefit from the growth of the consumption of ARW globally and in the Union, regardless of an increase in Chinese imports to the Union. In addition, it was claimed that the forecasted increase in consumption would allow Chinese exporting producers to increase their exports to the Union market without exerting any price pressure.

(241) The investigation showed that significant volumes of Chinese exports are likely to be re-directed to the Union given its attractiveness (recitals 75 to 88). In addition there are high spare capacities in China that could also be directed to the Union market. Therefore the Chinese exporting producers will be able to take over not only the increased consumption but also sales volumes of the Union producers. Consequently even under the scenario of increased consumption there is a high likelihood that the Chinese exports would take over sales volumes and market share to the detriment of the Union industry. Moreover, concerning prices, these are likely to be at a level lower than Union industry's prices between

8 to 30 % as described in recital 191 and with the effects described in recital 192 that is resulting in a likely recurrence of material injury for the Union industry. This claim is therefore rejected”.

- iii. Apart from EU, Australia also found likelihood of dumping and injury in case of imports of ARWs from China PR. The relevant findings says as follows;
“9.3.8 Conclusion- Taking the above analysis into account, the Commission considers there is sufficient evidence to suggest that:
 - *dumping by identified exporters has continued during the inquiry period;*
 - *export pathways into the market have been maintained, and for one exporter the volume exported has noticeably increased since the measures were imposed on 5 July 2012;*
 - *there is substantial excess capacity in China;*
 - *Chinese exporters have dumped in other markets, likely due to the same economic factors that encourage consistent production volumes; and*
 - *exporters in China that supply aftermarket retailers do not experience the same limitations in switching destination markets as those supplying OEMs.*
 - *As a result, the Commission considers that, if the anti-dumping measures are not continued, there is sufficient evidence to suggest that the dumping of aluminium road wheels from China is likely to continue**9.7 Conclusion- Taking the above analysis into account, the Commission considers there is sufficient evidence to conclude that:*
 - *import volumes from China are likely to continue and, in the absence of anti-dumping measures, would increase;*
 - *because of GOC influence, Chinese exporters of aluminium road wheels will continue to have a competitive advantage over Australian manufacturers;*
 - *competing on price will be a major requirement for Arrowcrest to secure an increased volume of aftermarket (retail) sales after 2017;*
 - *the goods exported from China are likely to be dumped and subsidized; and*
 - *the Australian industry will be significantly weakened by the fundamental change in the OEM segment, and therefore any injury to the Australian industry that continues or recurs from dumping and subsidization, if the measures are removed, is likely to be material”.*
- iv. Apart from anti-dumping duties, Australia has also imposed CVD duties which are also in force. These impact the exportability of producers/exporters from China PR to such countries at unfair price to get rid of the volume pressure.
- v. Also, USA has imposed additional trade tariff of 10% on imports of ARWs from China PR which may be increased to 25% later. USA is one of the largest markets for Chinese ARW producers and the duties by USA will lead to increased exports to India in the event of expiry of present duties. It would not be viable for China PR to maintain its exports to USA in view of such retaliatory trade measures and any expiry of Indian ADD will certainly be incremental for China PR to export more to India.

VII. Attractiveness of Indian Market

- i. The evidences show, India will remain a large export destination for subject countries especially Chinese producers and domestic industry of ARWs in India remains seriously vulnerable to such dumped imports. Should the present ADD be allowed to expire, dumping will continue and the DI will continue to suffer even aggravated level of material injury.
 - ii. It was asserted by one of the exporters in the hearing that Indian market looks lucrative for them and they want to serve the Indian users. There is no illegality if Chinese exporters find Indian market a lucrative one and wishes to export to India. But the issue is that Chinese exporters have been adopting unfair practice like dumping to capture and dominate the growing market like India and if such practices are allowed, the annihilation of Indian production base for ARWs will not take much time.
95. Domestic Industry has stated that continued dumping and injury from the subject countries, substantial excess capacities available with the producers in the subject countries with the potential to be diverted to India in the event of expiry of present duties, additional duties by USA and the price difference between dumped imports and the domestic industry's price clearly show that the expiry of the existing anti-dumping duty is likely to lead to recurrence of dumping and injury to the domestic industry.

96. None of the responding parties adduced any evidences to refute the submissions of the DI concerning likelihood aspect. Some of the responding producers provided details of their own capacities but no comprehensive information for the country have been provided. The Authority should collect information such as capacity third country export details etc from all the responding exporters irrespective of the sampling adopted.

viii. Conclusions on Likelihood of dumping and injury

97. The essential facts gathered in this investigation shows that dumping of subject goods from subject countries continued and as a result the domestic industry continued to suffer injury as can be seen from the performance of the domestic industry in POI and in the injury period. The information on record also shows that there are significant excess capacities in countries like China PR and producers/exporters from China PR are subject to various trade measures like Anti-dumping duties, Countervailing duties, Additional Customs Tariff in major export market like EU, Australia and USA respectively. Such excess capacities coupled with trade barriers may lead to increased level of exports at dumped price to India in the event of expiry of present duties. More so, when dumping and injury from subject countries continued while the duties are in force. Thus, it is seen that there is a likelihood of dumping and consequent injury to the domestic industry in the event of cessation of anti-dumping duties.

M. POST DISCLOSURE COMMENTS

98. The post disclosure submissions have been received from the domestic industry and the opposing interested parties. The issues raised by these interested parties are largely repetitive. The issues raised therein had been raised earlier during the investigation and also addressed appropriately. However, for the sake of clarity, the submissions by the interested parties are being examined as below:

Views of the domestic industry

99. Submissions made by the domestic industry post issuance of disclosure statement are summarized as under:
- i. In the original investigation, the DA had calculated NIP for the domestic like product i.e. ARWs which covers chrome plated wheels also and present investigation being an SSR, the DA should follow the same procedure. It is also seen that the Authority has excluded accessories from the cost of production of DI. Similarly, while deriving the landed price of imports, price of all accessories, if any, needs to be deducted. While calculating the NFA the authority has excluded capital work in progress and amalgamation reserve. The same was not supposed to be deducted.
 - ii. The lower dumping margin determined for Citic shows that the company have claimed a higher export price. Citic is primarily supplying to Ford and the DI is also supplying to Ford. If the export prices of Citic are true, then Ford is paying very high price for the PUC from Citic whereas DI is forced to supply to them at a lower price. Import of PUC by Ford from Citic attracts ADD of \$2.15 per KG. To examine the credibility of price claimed by Citic, the Authority must conduct examination of price undercutting including ADD for Dicastal. The question arises why Ford would import from Dicastal after paying \$2.15 per KG ADD and why not purchase from Indian producers.
 - iii. We further understand Citic sells Forged wheels to Ford for some of the Models. Normally forged Aluminum wheels are high priced as compared to cast aluminium wheels. There is a possibility of Dicastal has included both Forged as well as cast aluminum wheel in order to take advantage of the pricing. This bolster our doubt that export price of Citic cannot be true.
 - iv. Apart from the disclosure on Chengdu plant, the details of following at least three producers of PUC is not disclosed to the Authority;
 - a. Dicastal KSM Chengdu Auto Parts Co., Ltd-
 - b. MX Dicastal Wheel Manufacturing Co., Ltd.-
 - c. Tianjin Dicastal Auto Parts Co., Ltd/ Tianjin Dicastal Car Parts Co., Ltd

Views of the Opposing interested parties

100. On behalf of producer exporters namely, M/s CITIC Dicastal Co., Ltd, M/s Binzhou Movever Dicastal Wheel Co Ltd, Qinhuangdao Dicastal Sinolion Wheels Co Ltd, Qinhuangdao Xinglong Wheels Co Ltd, SMX Dicastal

Wheel Manufacturing Co Ltd, from China PR, the comments have been filed beyond the prescribed time limit.i.e. on 27th March at 5:50 pm (PDF version) and the same on 28th March at 11:19am in word format.

101. The comments made by the importer M/s. Ford India Pvt. Ltd. on post issuance of disclosure statement are summarized below:
- There are issues regarding DI standing;
 - There is differentiation in PUC manufactured by domestic industry and PUC imported by the importer in terms of specifications and quality;
 - There is no likelihood of recurrence of injury to the domestic industry;
 - there is no material injury suffered by domestic industry and there is no likelihood of continuation or recurrence of the injury as well as there is no causal link between the claimed injury and dumped imports

Examination by Authority

102. The comments filed on behalf of cooperating exporter from China PR were beyond the time prescribed and authority has decided to not consider the comments, however all the earlier submissions filed during the course of the investigation were accepted and duly considered.
103. The comments of DI regarding NIP were examined and necessary modifications wherever relevant and applicable have been made.
104. The comments of DI regarding the product identification and the import price were examined and have already been analysed with due verification during the course of the investigation. Further the CITIC group entities involved in production of PUC and exports to India were also duly confirmed.
105. The comments of the importer regarding injury and likelihood of injury to DI along with causal link have already been examined in detail in the above relevant paragraphs.

N. CONCLUSION

106. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis, the Authority concludes that:
- The product under consideration continues to be imported at the dumped prices from the subject countries;
 - The domestic industry has suffered continued injury on account of dumped imports;
 - The continued injury to the domestic industry is on account of dumped imports and is likely to continue if the anti dumping duties from subject countries cease to exist;
 - The information on record clearly shows likelihood of continuation of dumping and injury in case the ADD in force is allowed to cease at this stage;
 - Some Producer exporters from China PR have responded during the review investigation and cooperative producer exporters (who have filed complete response) have been sampled. The sampled producers have exported through a single exporter to India below the normal value (constructed), and dumped imports are causing the material injury to the DI.
 - None of the producers exporters from Korea RP have co-operated in the present review investigation. The information submitted by responding producer exporter from Thailand was incomplete and hence declared non co-operative. The data available indicates that exports from these countries have been made at prices below the normal value.

O. RECOMMENDATIONS

107. Having concluded that there is positive evidence on the aspect of dumping, injury and causal links, likelihood of dumping and injury, if the existing anti-dumping duties are allowed to cease, the Authority is of the view that continuation of duty is required against all the subject countries.
108. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry in case of the co-operative producers exporters from China PR and extend the earlier duty in respect of all other non-responding entities. Accordingly, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duties on the import of the subject goods, originating in or exported from China PR, Korea RP and Thailand, as indicated in Col 7 of the duty table below, for a period of 5 years from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government:

DUTY TABLE

Sr. No	Tariff Item*	Description of Goods	Country of Origin and/or Export	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1.	8708 70	Cast Aluminum Alloy Wheels or Alloy Road Wheels” (ARW) used in Motor Vehicles, whether or not attached with their accessories, of a size in diameters ranging from 12 inches to 24 inches	China PR	CITIC Dicastal Co Ltd, / SMX Dicastal Wheel Manufacture Co., Ltd., / Qinhuangdao Daikaxinglong Wheel Manufacturing Co., Ltd., / Qinhuangdao Xinglong Wheels Co., Ltd., / Binzhou Movever Dicastal Wheel Co. Ltd.	CITIC Dicastal Co., Ltd.	0.08	USD/KG
2.			China PR	Zhejiang Jinfei Kaida Wheel Co., Ltd	Zhejiang Jinfei Kaida Wheel Co., Ltd.	0.08	USD/KG
3.			China PR	Shandong Shuang Wang Aluminium Industry Co Ltd,	Shandong Shuang Wang Aluminium Industry Co Ltd,	0.08	USD/KG
4.			China PR	Zhejiang Shuguang Industrial Co., Ltd	Zhejiang Shuguang Industrial Co., Ltd	0.08	USD/KG
5.			China PR	Any other than above	Any other than above	2.15	USD/KG
6.			Korea RP	Any	Any	1.18	USD/KG
7.			Thailand	Any	Any	1.06	USD/KG

* Custom classification is only indicative and the determination of the duty shall be made as per the description of PUC. The PUC mentioned above should be subject to above ADD even when it is imported under any other HS code.

109. The duty rates as recommended above are applicable for exports of subject goods manufactured by specified producer mentioned in column (5) and exporters mentioned in column (6) above. The Customs should verify the name of the producer and exporter at the time of clearance of subject goods.
110. The landed value of imports for this purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
111. The applicant domestic industry and the responding producers are required to inform the Authority regarding any change in constitution/ ownership of the manufacturing facility, along with relevant documents substantiating the said change, for the subject goods against which Anti-Dumping Measures are being recommended. The information should reach the Authority within 60 days of the said change, if any.
112. An appeal against the order of the Central Government arising out of this final finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Director General